

शिरडी साई के संदेशों

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव



शिरडी साई के संदेशों



लेखक : ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

हिन्दी अनुवाद: श्रीमति जे.पुष्पलता

For Books Please Contact :

TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO

Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.

W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.100/-

INDEX

- 1) “सोचिए” 3
- 2) साई बाबा कौन हैं ? 6
- 3) बाबा की शक्ति के अनुसार व्यवहार करना चाहिए! .14
- 4) “सद्गुरु ने जो कहा है, वही करना चाहिए;
जो किया है, उसे नहीं करना चाहिए।” 17
- 5) बाबा से चाहना है क्या ?23
- 6) बाबा द्वारा उपदेशित ब्रह्मज्ञान अथवा
आत्मसाक्षात्कार।28
- 7) ईशावास्य उपनिषद!55
- 8) “सबका मालिक एक है”58
- 9) परि प्रश्न ?60
- 10) प्रिय भगवान को पीड़ा दे सकते हैं क्या ?66
- 11) जो नहीं देता उसे माँगने का हक नहीं है70
- 12) नवविध भक्तियाँ72
- 13) आत्मनिवेदन!77
- 14) बाबा के मनुष्य कौन हैं ?80



“सोचिए”

दुनिया में सभी लोग अपने पसंद के भगवान की, अपनी पसंद की रीति से आराधन करते हुए और अपनी इच्छाएँ पूरी करने और अपने कष्ट दूर करने की प्रार्थना करते रहते हैं। ऐसे कुछ लोग पूजा करके माँगते हैं, कुछ लोग प्रार्थना के माध्यम से, और कुछ लोग नमाज़ के माध्यम से माँगते रहते हैं। और कुछ लोग भजन करके माँगते रहते हैं।

सभी लोग इसी तरह आराधन करते हुए याचना करते रहते हैं। लेकिन इतने महान वाले ही उस भगवान ने जो कहा, उसके आचरण नहीं करते। वे उस भगवान की प्रार्थना करने को महत्व देते हैं, लेकिन उन्होंने जो कहा है उसे पालन करने के लिए महत्व नहीं देते। कितनी देर तक वे इतने महान हैं, उतने महान हैं कहते हुए उसकी महानता की कीर्ति करते रहेंगे, उसकी महिमाएँ बताते रहते हैं। वे कहते हैं कि उनसे बढ़कर कोई नहीं है।

सोचिए इतने महान वालों ने बताई हुई बातें, उनके द्वारा दिए गए संदेश कितनी महान होती हैं। तो फिर उतने महान वालों ने जो कहा, उसे आचरण करना चाहिए, है ना? तो फिर आचरण करने के लिए कितने लोग महत्व दे रहे हैं? उन्हें कितने लोग आदर्श के रूप में ले रहे हैं? कितने समय तक उन देवताओं की महानता के बारे में कहते हुए उनकी माहिमाओं के बारे में कहानियाँ कहने वालों का अनुसरण कर रहे हैं। लेकिन उतने महिमायें होने वाले उन देवताओं ने जो कहा, उन बातों का कोई परवाह नहीं कर रहे हैं, पालन नहीं कर रहे हैं, महत्व नहीं दे रहे हैं। बुद्धिमान लोग महान भगवान का अनुसरण करते हैं। इतना ही नहीं उस भगवान महान है ऐसा बताने वालों को अनुसार नहीं करते। इसलिए उन देवताओं की कही हुई बातों को आचरण करें। आइए उनके द्वारा सिखाए गए मार्ग पर चलें। आइए जीवन को धन्य

बनाएं।

सामान्य लोगों की सोचने के तरीके और इतने महापुरुषों की सिखाई गई बातों से बहुत अंतर होता है। क्योंकि सामान्य लोग कितने समय तक केवल अस्थायी लाभ, अस्थायी आनंद, अस्थायी सुखों को ही महत्व देते हैं। लेकिन इतने महापुरुषों ने स्थायी लाभ के लिए, स्थाई आनंद के लिए प्रयास करने की और प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं। क्योंकि अस्थायी का अर्थात यह कुछ समय तक रहता है। स्थायी अर्थात यह हमेशा रहता है। अस्थायी हमेशा अस्थायी ही होता है। स्थायी ही महान है। इसलिए महान और स्थायी मार्ग को ही शिक्षा देते हैं।

उदाहरण के लिए आइए देखें कि सामान्य लोगों की सोचने का तरीका और इतने महान लोगों का जीवन जीने का तरीका कैसा होता है। शिरडी बाबा को ही लेते हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि शिरडी साई बाबा बहुत शक्तिशाली हैं, यदि उनकी आराधना करें, तो धनवान बन सकते हैं वे उनकी आराधना करते हुए, भजन करते हुए उनसे धन प्रदान करने और उन्हें धनवान बनाने की प्रार्थना करते हैं। उनका उद्देश्य यह होता है कि अगर बाबा की अनंत शक्ति में से थोड़ा-सा भी उन्हें प्रदान कर दें, और थोड़ी-सी अनुग्रह कर दें, तो साधारण लोगों ने यह सोचते हैं कि धनवान बन सकते हैं, और जो पहले से ही धनवान हैं, वे और३ और... करोड़पति बन सकते हैं इसी आशा से वे उनकी प्रार्थना करते हैं, लेकिन इसके आगे वे कुछ भी नहीं सोचते।

सोचिए क्या वे बाबा से इसलिए प्रार्थना कर रहे हैं कि यदि बाबा की अनंत शक्ति में से थोड़ा-सा भी दे दें, तो वे धनवान होकर भोग-विलास में डूब जाएँ? जो बाबा अपनी थोड़ी-सी शक्ति से ही सभी भोग-भाग्य दे सकने वाले बाबा, उनके पास मौजूद अनंत शक्ति से कितने बंगले निर्मित कर सकते हैं? कितनी संपत्तियाँ इकट्ठी की जा सकती हैं? राजमहल बनवाकर, विलासपूर्ण सुविधाएँ जुटाकर, महंगे वस्त्र पहनकर, प्रतिदिन षड्रसयुक्त भोजन करके, सेवकों और दासियों के साथ राजसी जीवन का आनंद लिया जा सकता है, है न? और क्या उन्होंने ऐसा किया? क्या उन्होंने ऐसे भोगों का

अनुभव करने का प्रयास किया ? नहीं !

बाबा ने स्वप्न में भी इस सांसारिक धन और विलासपूर्ण वस्तुओं की कभी इच्छा नहीं की। बाबा ने उन सबको घास की समान तुच्छ माना। उन्हें ज़रा भी महत्व नहीं दिया। अगर दिया होता, तो वे महल में ही निवास करते। लेकिन उन्होंने ऐसा न करके मस्जिद में निवास करने वाले। उन्होंने रेशमी पीताम्बर नहीं पहने, बल्कि फटे हुए वस्त्र धारण किया। उन्होंने षड्रसयुक्त भोजन नहीं किया, जो कुछ भी मिल जाता, उसी भिक्षा से जीवन जीने वाले। इतने महान पुरुष होकर भी वे अत्यंत साधारण जीवन जीते थे। उन्होंने कभी भी विलासपूर्ण जीवन नहीं अपनाया। वे अत्यंत साधारण जीवन ही जीने वाले। लेकिन बाबा की आराधना करने वाले लोग बाबा से विलासपूर्ण जीवन प्रदान करने की और धन प्रदान करने की प्रार्थना करते रहते हैं। अर्थात् जिसे उन्होंने कभी महत्व नहीं दिया, उसी को देने के लिए उनसे प्रार्थना कर रहे हैं। तो फिर उन्होंने बाबा के बारे में क्या समझाया ? उनसे क्या सिखा ?

क्योंकि आजकल मनुष्य धन, पत्नी-पुत्र, संसार और सुखों को ही महत्व दे रहे हैं। लेकिन शाश्वत मोक्ष को कोई महत्व नहीं दे रहा है। उसके महत्व को नहीं पहचान रहे हैं।

जब संसार में मनुष्य इस स्थिति में होते हैं, तब बाबा जैसे योगीश्वर अवतरित होकर उन्हें सही मार्ग पर चलाकर और उन्हें सही आचरण का बोध कराते हैं। उन्हें उनका धर्म सिखाते हैं। ऐसे महापुरुषों में मुक्ताबाई, तुकाराम, एकनाथ, रामदास, कबीर, विवेकानंद जैसे अनेक महान लोग हुए हैं। (यही बात श्री साई सच्चरित्र के 4 अध्याय में 30वें पृष्ठ में कही गई है)।

इसलिए उनकी पूजा करना नहीं, बल्कि उन्होंने जो कहा है उसे आचरण करना चाहिए। उनसे याचना नहीं है, बल्कि उन्हें आदर्श के रूप में अपनाना चाहिए। उनकी प्रार्थना करना नहीं। उन्होंने जो उपदेश दिया है उसका पालन करना चाहिए। उन्हें महान कहना नहीं, बल्कि हमें भी महान लोगों की तरह व्यवहार करना चाहिए। उनकी महिमाओं को बताना नहीं, बल्कि महान पुरुषों के संदेशों को समझना चाहिए, उन्हें अमल में लाना चाहिए, ऐसे लोगों का जीवन ही धन्य होता है।



साई बाबा कौन हैं ?

शिरडी साई बाबा की आराधना करने वालों को विशेष रूप से बाबा के बारे में जानना चाहिए। बाबा को समझना चाहिए। उनके बारे में जाने बिना की गई सारी आराधन व्यर्थ हो जाती है। उन्हें समझे बिना किए गए सभी कार्य निरर्थक हो जाते हैं।

विशेष रूप से हर कोई ने निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर जानने चाहिए। 1) वह कौन हैं ? 2) वे कैसे हैं ? 3) वे कहाँ रहते हैं ?

बहुत से लोगों को ये प्रश्न आश्चर्यजनक लग सकते हैं। क्योंकि वे सोचते हैं कि क्या हमें इतना भी नहीं पता। बहुत लोगों की उनके बारे में धारण यह है कि वे भगवान हैं। वे कैसे हैं ? यह तो हम रोज़ देखते ही हैं, है न ? उनकी फोटो हमारे घर में है, उनकी मूर्ति मंदिर में है। फिर क्या हमें यह भी नहीं पता कि वे कैसे हैं ? ऐसा कहा जा सकता है। और इसी तरह वे कहाँ रहते हैं ? इस प्रश्न पर कुछ लोग सोचते हैं कि वे मंदिर में रहते हैं, शिरडी में रहते हैं। और कुछ लोगों की यह समझ है कि वे एक समय शिरडी में रहते थे।

लेकिन बाबा के बारे में इस तरह समझना पर्याप्त नहीं है। इन प्रश्नों के सही उत्तर जानने वाले ही सच्चे भक्त हैं। और उनके अनुसार व्यवहार करने वालों का जीवन ही धन्य होता है। इसलिए विशेष रूप से उन तीन प्रश्नों के उत्तर जानने चाहिए।

पहला प्रश्न : वे कौन हैं ? अर्थात वे “आत्मा हैं।” विशेष रूप से हर कोई ने यह जानना चाहिए। वे “आत्मा ही हैं” लेकिन सब लोग जो मानते हैं और जो दिखाई देता है वह रूप नहीं है। जिस रूप को सब लोग बाबा मानते हैं, वह लोक-कल्याण के लिए उन्होंने अस्थायी रूप से धारण किया हुआ रूप मात्र

हैं।

यही बात “श्री साई सच्चरित्र” की भूमिका में ‘साई बाबा कौन हैं?’ शीर्षक के अंतर्गत कहा गया है। बी. वी. नरसिंहस्वामी जी द्वारा लिखित “बाबा सूत्रमुलु – पलुकुलु” नामक ग्रंथ की भूमिका में इस प्रकार लिखा गया है।

“बाबा का देह गायब हो गया है, किंतु उस देह में तब मौजूद बाबा ही, आज भी अनंत शक्ति के रूप में स्थित रहकर” वे समाधि लेने से पहले जिस प्रकार भक्तों की सहायता करते थे, उसी प्रकार आज भी अपनी शरण में आने वाले असंख्य भक्तों की निःशब्द रूप से सहायता कर रहे हैं।”

इसके आधार पर दिखाई देने वाला रूप बाबा नहीं है। उसमें जो ‘शक्ति’ है, वही ‘आत्मा’ ही बाबा है यह हम स्पष्ट रूप से जान सकते हैं। इसलिए हमें जानना चाहिए कि ‘आत्मा’ ही बाबा है। यही बात श्री बी. वी. नरसिंहस्वामी जी द्वारा लिखित “भक्तूला अनुभवमुलु” नामक पुस्तक में एक हाईकोर्ट के जज साहब ने भी इसी प्रकार लिखी है।

“मेरी दृष्टि में वे सभी सीमाओं से परे हैं। जब वे हमारे बीच थे, तब उनका मानवीय शरीर हमारी आँखों के सामने चलता-फिरता रहता था। लेकिन वास्तव में हमारी चेतना में जो अधिक समय तक रहा, वह उनका अनंत तत्त्व ही था (आत्मा)। अब यह नश्वर देह लुप्त हो चुकी है और ‘साईबाबा’ नाम की शाश्वत, अनंत शक्ति (आत्मा) ही मात्र शेष रह गई है।”

इसके आधार पर यह स्पष्ट है कि नश्वर देह बाबा नहीं है। हर किसी को यह जानना चाहिए कि शाश्वत और अनंत शक्तिशाली ‘आत्मा’ ही बाबा है। क्योंकि यदि शरीर ही बाबा होता, तो वे अब मौजूद नहीं होते। लेकिन चूँकि ‘आत्मा’ ही बाबा है, इसलिए वे आज भी मौजूद हैं। सिर्फ आज भी नहीं। चाहे कितने ही युग बदल जाएँ, बाबा सदा रहेंगे।

इतना ही नहीं बाबा ने स्वयं यह कहा है कि वे आत्मा हैं। 44वें

अध्याय के 323वें पृष्ठ पर 'मैं कौन हूँ?' की भूमिका में बाबा कहते हैं "मुझे खोजने के लिए तुम्हें न तो दूर जाने की आवश्यकता है और न ही कहीं और जाने की।" यदि तुम अपने नाम और अपने रूप (यह शरीर ही मैं हूँ और इसका नाम भी मैं ही हूँ इस भावना) को छोड़ दो, तो तुम्हारे भीतर ही नहीं, बल्कि सभी जीवों के भीतर 'चैतन्य' या 'अंतरात्मा' नाम की एक ही सत्ता होती है। "वही मैं हूँ।" इसे तुम समझो और न केवल अपने भीतर, बल्कि सब में मुझे देखो। "यदि तुम इसका अभ्यास करोगे, तो सर्वव्यापकता का अनुभव करोगे (अर्थात् 'सब मैं ही हूँ, सब कुछ मैं ही हूँ' इस सत्य को समझकर) और मुझमें एकत्व प्राप्त करोगे"। इससे यह स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है कि आत्मा ही बाबा है।

और जब आत्मा बाबा होती है

दूसरा प्रश्न : वह कैसे होता है ? अर्थात् आत्मा कैसी होती है ? अर्थात् आत्मा का कोई रूप नहीं होता। आत्मा नित्य है, शाश्वत है और सत्य है। आत्मा को न जन्म है, न मृत्यु। अर्थात् आत्मा का जन्म नहीं हुआ। इसलिए आत्मा को मृत्यु नहीं है। वह सदा, हमेशा रहने वाली है। आत्मा अनंत शक्तिशाली है। आत्मा सर्वत्र व्याप्त है। वह सब में विद्यमान है। आत्मा ही सबका आधार है। आत्मा मानव इंद्रियों को गोचर नहीं होती। मानव इंद्रियों में आत्मा को जानने की शक्ति नहीं है। इस प्रकार कहते जाएँ तो आत्मा के बारे में कितना भी कहा जा सकता है। आत्मा के बारे में जितना भी कहा जाए, जितना भी जाना जाए वह सब कम ही है! क्योंकि आत्मा ही भगवान है! आत्मा ही ईश्वर है! आत्मा ही बाबा है! आत्मा ही शिव है! आत्मा ही कृष्ण है! आत्मा ही जीसस है! आत्मा ही बुद्ध है! आत्मा ही सब कुछ है। इसीलिए कहा जाता है कि बाबा कृष्ण जैसे दिखते हैं, शिव जैसे दिखते हैं, और दत्तात्रेय जैसे दिखते हैं।

क्योंकि सब कुछ ही भगवान है। सब में वही भगवान है। तो फिर बाबा कैसे होते हैं ? अर्थात् वे आत्मा के रूप में, अर्थात् वे अदृश्य शक्ति के रूप में होते हैं। अर्थात् वे दिखाई देने वाला रूप नहीं हैं, बल्कि अदृश्य शक्ति हैं।

तीसरा प्रश्न : वह कहाँ रहते हैं ?

वह सर्वत्र, सब में व्याप्त हैं। सब में अर्थात् समस्त भूतों में, अर्थात् समस्त प्राणियों में, अर्थात् मनुष्यों में, जानवरों में, पक्षियों में, जलचरों में, यहाँ तक कि चींटियों में, मच्छरों में भी बाबा विद्यमान हैं। यह बात हर किसी को जाननी चाहिए।

विशेष रूप से जो लोग अपने आपको बाबा का भक्त मानते हैं, उन्हें यह जानना चाहिए। इसलिए किसी भी जीव से प्यार करना बाबा से प्यार करने समान है। किसी भी जानवर से मित्रता करना, बाबा से मित्रता करने के समान ही है। किसी भी जीव की हिंसा करना, बाबा की ही हिंसा करने का समान है। इसलिए जो लोग बाबा से प्यार करते हैं, उन्हें उनकी हिंसा नहीं करनी चाहिए। अर्थात् जीव-हिंसा नहीं करनी चाहिए। जानवरों को मारकर उनका मांस नहीं खाना चाहिए। जो ऐसा करते हैं, वे बाबा की हिंसा करने वाले बन जाते हैं और उन्हें कष्ट पहुँचाने वाले बन जाते हैं। इस विषय को हम 'साई सच्चरित्र' के माध्यम से कई अवसरों पर जान सकते हैं।

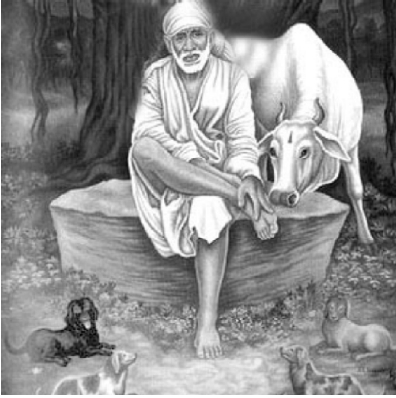
(1) 'श्री साई सच्चरित्र' के 23वें अध्याय में 172वें पृष्ठ पर इस प्रकार कहा गया है। "किसी का तिरस्कार करना हो, किसी का अपमान करना हो वे नहीं करते। वे समस्त प्राणियों में बाबा नारायण को ही देखते रहते हैं।" इससे हम यह जान सकते हैं कि सभी जानवर और सभी जीव भगवान के ही स्वरूप हैं।

(2) इसी प्रकार 22वें अध्याय में 170वें पृष्ठ पर 'बिच्छू और साँप के बारे में बाबा की राय' शीर्षक के अंतर्गत स्वयं बाबा द्वारा दिया गया संदेश देखें। "भगवान समस्त प्राणियों में निवास कर रहे हैं चाहे वे साँप हों या बिच्छू हों, सब पर भी लागू होती है। इसलिए हमें करुणा करके सभी जीवों से प्रेम करना चाहिए। अनावश्यक झगड़ों में, हत्या जैसे कर्मों में शामिल न होकर सब्र रखना चाहिए। सबकी रक्षा करने वाला भगवान ही है।"

इससे यह समझना चाहिए कि किसी भी जानवर को नहीं मारना चाहिए, यहाँ तक कि बिच्छू और साँप को भी नहीं मारना चाहिए। क्योंकि सभी प्राणियों का रक्षक भगवान ही है ऐसा बाबा ने कहा है इससे हमें यह समझ में आता है।

(3) आइए एक और उदाहरण देखें। 9वें अध्याय के 81वें पृष्ठ में बाबा को संतोषपूर्वक भोजन कैसे कराया जाए? इस शीर्षक के अंतर्गत, जब आत्माराम तरकड़ की पत्नी शिरडी के एक घर में सबको भोजन परोस रही थीं, तब भूखा हुआ एक कुत्ता आकर भौंकने लगा। तब तरकड़ की पत्नी ने उस कुत्ते की ओर एक रोटी फेंकी। वह कुत्ता बहुत खुशी से उस रोटी को खाने लगा।

उस दिन शाम को जब वह मस्जिद गई, तब बाबा ने उससे इस



प्रकार कहा। “माँ, तुमने मुझे पेट भरकर, गले तक भोजन कराया। मेरी जीवन-शक्तियाँ तृप्त हो गईं। हमेशा ऐसा ही करना। यह तुम्हें सद्गति प्रदान करेगा। इस मस्जिद में बैठकर मैं कभी असत्य नहीं बोलता। मुझ पर इसी ही मेहरबानी करना। पहले भूखे जीव को भोजन कराओ, उसके बाद तुम स्वयं

खाना खाओ। इसे ध्यान से याद रखो।”

बाबा के ऐसा कहते ही उसे कुछ भी समझ में नहीं आया। तुरंत उसने इस प्रकार कहा। “बाबा! मैं आपको कैसे भोजन करा सकती हूँ? अपने भोजन के लिए मैं दूसरों पर निर्भर हूँ। मैं उन्हें पैसे देकर खाना खा कर रही हूँ।” उसके ऐसा कहते ही बाबा ने इस प्रकार उत्तर दिया। “तुम्हारे प्रेमपूर्वक दिए हुए रोटी के टुकड़े को खाकर मुझे अभी तक डकारें आ रही हैं। तुम अपने भोजन से पहले जिस कुत्ते को देखकर रोटी दी थी, वह भी मैं एक

ही हूँ! इसी प्रकार बिल्लियाँ, सूअर, मक्खियाँ, गायें आदि सब मेरे ही अंश हैं। मैं उसी के रूप में घूम रहा हूँ। जो लोग समस्त जीवों में मुझे देख सकते हैं, वही मेरे प्रिय भक्त हैं। इसलिए मैं अलग हूँ और शेष जीव-समूह अलग है ऐसे द्वंद्व भाव और भेदभाव को छोड़कर मेरी सेवा करो।

बाबा के ऊपर कहे गए वचनों के अनुसार, सबको यह जानना चाहिए कि समस्त जीव-जंतु भगवान के स्वरूप हैं। किसी भी जीव-जंतु से प्रेम करना, बाबा से प्रेम करने के समान है। इसी प्रकार, किसी भी जीव-जंतु को कष्ट पहुँचाना, बाबा को कष्ट पहुँचाने के समान ही है यह जानना चाहिए। जीभ के स्वाद के लिए जो लोग जानवरों को और पक्षियों को मारकर उनका मांस खाते हैं और उनकी हिंसा के कारण बनते हैं, उन्हें यह जानना चाहिए कि वे बाबा को ही सताया रहे हैं। इस प्रकार जो लोग बाबा को सताते हैं, वे चाहे कितनी ही पूजा करें, कितने ही भजन करें, वे उनका अनुग्रह कैसे प्राप्त कर सकते हैं? इसलिए जो लोग बाबा की अनुग्रह प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें यह जान लेना चाहिए कि उन्हें किसी भी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए।

इस संदर्भ में बताई गई नैतिकता : “सभी जीवों में भगवान का दर्शन करो। उपनिषद्, भगवद्गीता, भागवत आदि सभी ग्रंथ हमें यह उपदेश देते हैं कि हर जीव में भगवान को देखो।”

(4) इसी प्रकार एक और संदर्भ में घटी हुई घटना, एक भक्त ने बाबा को तीन महीने का घोड़े का बच्चे को उपहार के रूप में देता है। बाबा तुकाराम से उस घोड़े के बच्चे की अच्छी तरह देखभाल करने को कहते हैं। एक दिन तुकाराम ने देखा कि वह घोड़े का बच्चा घास नहीं खा रहा है, तो उसने उसे कोड़े से दो बार मारा। बाद में बाबा ने तुकाराम को बुलाकर पूछा तुमने मुझे क्यों मारा? तब तुकाराम ने आश्चर्य से कहा मैंने आपको कहाँ मारा? “तब बाबा ने अपनी कमीज उठाकर उसे लगे हुए दो घाव दिखाए।” तब तुकाराम साई के चरणों में गिर पड़ा, क्षमा माँगी और उस दिन से उस घोड़े

के बच्चे को प्रेम से पालने लगा।

इससे हमें जानना चाहिए कि किसी भी जानवर को सताया जाए तो, बाबा को सताने जैसा ही है। हमें यह जानना चाहिए कि जानवरों को सताकर मार दिया जाए तो, वह हिंसा बाबा को ही लगती है। इसलिए मांस के लिए जानवरों को नहीं मारना चाहिए। किसी भी जीव को हिंसा नहीं करनी चाहिए।

5) इसी प्रकार 42वें अध्याय में 314वें पृष्ठ में आता है कि जैसे ही बाबा ने कहा कि उन्हें भूख लगी है, तो लक्ष्मीबाई रोटी बनाकर ले आईं, बाबा ने वह एक कुत्ते को डाल दी। जब उसने पूछा ऐसा क्यों, तो बाबा ने कहा “व्यर्थ चिंता क्यों करती हो? कुत्ते की भूख मिटाना, मेरी भूख मिटाने के समान ही है। कुत्ते में भी आत्मा होती है। प्राणी अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिन सबकी भूख एक ही होती है। कुछ बोल सकते हैं। और कुछ गूंगे की तरह बोल नहीं सकते। जो लोग भूख लगने वालों को भोजन देते हैं, वह मानो मुझे ही भोजन देते हैं। इसी को महान नीति समझो।”

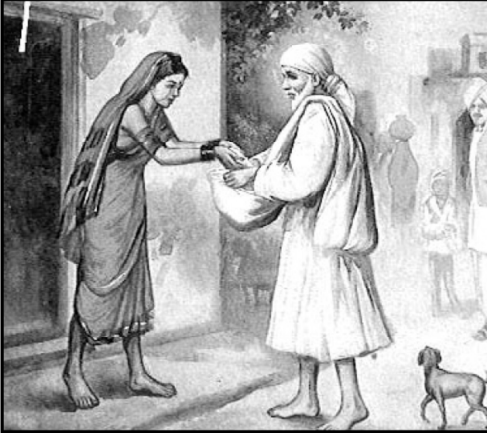
इससे हम जान सकते हैं कि बाबा सभी जीवों में मौजूद हैं। बाबा सर्वव्यापी हैं, उन्हें जन्म या मृत्यु नहीं है, वे अमर हैं। इसलिए किसी भी जानवर को न तो सताना चाहिए और न ही मारना चाहिए। इतना ही नहीं वह सबमें मौजूद हैं, इसलिए हमें यह जानना चाहिए कि हम जो भी काम करते हैं, वह उन्हें पता होता है। अगर हम यह सोचें कि मंदिर जाकर हम जो माँगते या कहते हैं वही उन्हें पता चलता है, और घर के पास मुर्गी को, बकरी को मारकर मांस खाते हैं तो बाबा को पता नहीं चलेगा तो हम अज्ञानी ही बन जाते हैं। हम बाबा के बारे में अनजान ही रह जाते हैं। हम बाबा के बारे में अवगाहन नहीं होने वाले ही रह जाते हैं। हम बाबा के बारे में न समझने वाले ही रह जाते हैं।

यह बात स्वयं बाबा ने श्री साईं सच्चरित्र के 3वें अध्याय के 27वें पृष्ठ पर वहाँ उपस्थित भक्तों से कही थी।

“तुम जहाँ भी हो और जो कुछ भी कर रहे हो, मुझे सब कुछ पता है यह बात अच्छी तरह याद रखो। मैं सबके हृदयों पर शासन करने वाला हूँ। मैं सबके हृदयों में निवास करने वाला हूँ। (अर्थात् उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं सबमें हूँ) मैं इस संसार में स्थित समस्त चराचर जीवकोटि को व्याप्त करके स्थित हूँ। इस जगत को चलने वाला हूँ, सूत्रधार मैं ही हूँ! मैं ही जगन्माता हूँ, त्रिगुणों का सामंजस्य मैं ही हूँ, इन्द्रियों का नियन्ता मैं ही हूँ, और सृष्टि, स्थिति तथा लय का कारण भी मैं ही हूँ। जो कोई भी अपनी दृष्टि मेरी ओर फेरता है, उसे न कोई हानि होती है और न कोई दुःख। जो मुझे भूल जाते हैं, उन्हें माया दंड देती है। कीड़े, चींटियाँ तथा अन्य समस्त दृश्य जीवकोटि मेरा ही शरीर है। मेरा ही रूप है!”

उपरोक्त संदेश बाबा ने स्वयं वहाँ उपस्थित भक्तों को दिया था। अर्थात् यह उनके सभी भक्तों को दिया गया दिव्य संदेश है। यहाँ भी कहा गया है कि “कीड़े, चींटियाँ तथा अन्य समस्त चराचर जीवकोटि मेरा ही शरीर है, मेरा ही रूप है।” इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी भी प्राणी को सताते हैं, बाबा को सताते के समान ही है! किसी भी प्राणी से प्रेम करना, बाबा से प्रेम करने के समान ही है! किसी भी प्राणी की सेवा करना, बाबा की सेवा करने के समान ही है। इसलिए किसी भी प्राणी को नहीं मारना चाहिए। हिंसा का कारण नहीं बनना चाहिए।

इसलिए केवल यह मान लेना कि वे महान हैं, पर्याप्त नहीं है। उन्होंने जो संदेश दिया है, उसे समझकर उसे अपने आचरण में उतारना चाहिए। ऐसा करने वाले ही उनके कहे अनुसार आचरण करने वाले होते हैं। वही सच्चे भक्त हैं। उनके कहे अनुसार आचरण किए बिना उनकी आराधना करने पर भी कोई लाभ नहीं है। क्योंकि उनकी आराधना करने वालों से अधिक, उनके कहे अनुसार आचरण करने वाले ही लाभ प्राप्त करते हैं। वही सच्चे भक्त हैं।



बाबा की शक्ति के अनुसार व्यवहार करना चाहिए!

सिर्फ यह कहना कि बाबा शक्तिशाली हैं, पर्याप्त नहीं है। उनकी शक्ति के अनुसार व्यवहार करने वाले ही उन्हें समझने वाले होते हैं। जो केवल

मुँह से कहता है वह नहीं, बल्कि जो आचरण में दिखाता है वही सच्चा भक्त है। वही बाबा को समझने वाले हैं।

इसलिए बाबा की शक्ति के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। इसके अलावा उनकी शक्ति को कम करके व्यवहार नहीं करना चाहिए। जो ऐसा करते हैं, वे एक प्रकार से उनका अपमान करने वाले हो जाते हैं।” उदाहरण के लिए, अगर कलेक्टर के पास एक सिपाही की तरह व्यवहार करें, तो कैसा होगा? अगर एस.पी. के पास एक कॉन्स्टेबल की तरह व्यवहार किया जाए, तो कैसा होगा? यानी उनकी पदवी के अनुसार नहीं, बल्कि पद को घटाकर व्यवहार किया जाए, तो क्या यह उनका अपमान करने जैसा नहीं है? ऐसे लोगों का उसने कोई काम हो पाएगा क्या? नहीं होगा, है न? जिन्हें उनसे आवश्यकता है, क्या उन्हें कोई लाभ प्राप्त होगा? नहीं होगा, है न? उसी प्रकार भगवान के विषय में भी! अर्थात् बाबा के विषय में उनकी शक्ति को समझकर उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

कारण यह है कि (27वें पृष्ठ पर) बाबा ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है “तुम जहाँ भी हो और जो कुछ भी कर रहे हो, वह सब मुझे पता है, इस बात को अच्छी तरह याद रखो।”

बाबा ने जो कहा है, उसके अनुसार कोई भी व्यक्ति कहीं भी हो

अर्थात् मंदिर में ही नहीं, बल्कि बाहर कहीं भी हो, चाहे वह घर में हो, बाज़ार में हो, दुकान में हो या ऑफिस में हो किसी भी गाँव में हो, अर्थात् कहीं भी हों यहाँ तक कि किसी को पता चले बिना दरवाज़े बंद करके कमरे में हो तब भी जो कुछ भी कर रहा हो, यानी किसी को गाली दी हो, अपमान किया हो! कष्ट दिया हो! नुकसान पहुँचाया हो! धोखा दिया हो! झूठ बोला हो! पत्नी को सताया हो! नौकरानी को अपमानित किया हो! व्यापार में, नौकरी में या किसी भी पेशे में यदि कोई अन्यायपूर्ण और अवैध तरीके से व्यवहार करता हो! यदि जानवरों को सताते हो! यह बात हर एक को याद रखनी चाहिए कि बाबा सब कुछ जान सकते हैं। ऐसा संदेश बाबा ने स्वयं कहा है।

फिर जब उन्हें सब कुछ पता है, तो वे सारे काम क्यों कर रहे हैं? क्या बाबा ऐसे कामों की सराहना करते हैं? क्या बाबा ऐसे लोगों पर अनुग्रह करते हैं? क्या ऐसे लोग बाबा के प्रिय हो सकते हैं? ज़रा सोचिए। सब कुछ करते हुए भी यह सोचकर कि उन्हें कुछ भी पता नहीं है, हम भोले लोगों की तरह मंदिर जाते हैं और कहते हैं मुझे यह कष्ट आया है, वह कष्ट आया है.. मुझे यह प्रदान कीजिए... वह अनुग्रह कीजिए... ऐसा कहकर प्रार्थना करते हैं। हम उन्हें ऐसे उपहार समर्पित करते हैं जिनकी उन्हें कोई आवश्यकता नहीं होती, कोई रुचि भी नहीं होती। हम भक्तों की तरह व्यवहार करते हैं। तो क्या उन्हें हमारे बारे में और हमारे किए हुए कामों के बारे में पता नहीं है? ज़रा सोचिए। असलु में हम ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं?

इतना ही नहीं जब हम मंदिर जाते हैं और मंदिर में होते हैं, तब वहाँ बहुत पवित्र रहते हैं। विनम्रता से व्यवहार करते हैं। मंदिर से बाहर आते ही हमारा व्यवहार बदल जाता है। वह विनम्रता, वह पवित्रता दिखाई नहीं देती। इसका क्या मतलब है? क्या बाबा सिर्फ वही जान सकते हैं जो हम मंदिर में करते हैं? क्या हमारा मतलब यही है कि बाहर हम जो कुछ भी करते हैं, वह बाबा को पता नहीं चलता? देखने पर हमारा व्यवहार मंदिर में एक तरह का और बाहर दूसरी तरह का होता है। तो क्या इसका मतलब यही है कि बाबा

सिर्फ मंदिर में ही रहते हैं, बाहर नहीं ?

इसी तरह कुछ लोग मानते हैं कि बाबा केवल शिरडी में ही रहते हैं। उन्हें लगता है कि उन्होंने शिरडी जाने पर ही बाबा के दर्शन होते हैं। ऐसा सोचने वाले लोग बाबा को और बाबा की शक्ति को ठीक से नहीं समझ पाए हैं, ऐसा कहा जा सकता है।

यही बात श्री साई सच्चरित्र के 5वें पृष्ठ पर “साईबाबा कौन हैं ?” शीर्षक के अंतर्गत स्वयं बाबा ने एक भक्त से कही थी। आर. ए. तरखड जी का एक मित्र एक बार बाबा के दर्शन के बाद बाबा से विदा लेकर बंबई वापस जाते समय, उसकी आँखों में आँसू आ गए। तब बाबा ने इस प्रकार कहा। “तुम पागल की तरह क्यों व्यवहार कर रहे हो ? क्या मैं बंबई में तुम्हारे साथ नहीं हूँ ?” ऐसा कहते हुए बाबा ने आगे कहा “जो लोग यह मानते हैं कि बाबा केवल शिरडी में ही रहते हैं, वे बाबा को वास्तव में समझ नहीं पाए हैं यह जान लो!”

मेरी कही हुई बात के अनुसार यह समझना कि वे केवल शिरडी में या केवल मंदिर में ही रहते हैं, अज्ञानता है। हमें यह जानना चाहिए कि वे सर्वत्र हर जगह रहते हैं। जिसे यह ज्ञान होता है कि वे केवल मंदिर में ही नहीं, बल्कि कहीं भी हों, सब कुछ जान सकते हैं वह व्यक्ति हर जगह पवित्र रहता है। यदि ऐसा नहीं है, तो उन्हें बाबा की शक्ति के बारे में अवगाहन नहीं है! और वे उनकी शक्ति के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहे हैं! अर्थात् हम उनकी शक्ति को कम करके समझते हुए व्यवहार कर रहे हैं! इसलिए उन्होंने कहा “तुम जहाँ भी हो और जो कुछ भी कर रहे हो, वह सब मुझे पता है। इसे अच्छी तरह याद रखो।” इस बात को अच्छी तरह याद रखना चाहिए। क्योंकि बहुत से लोग मंदिर से बाहर आते ही न केवल यह बात भूल जाते हैं कि बाबा सब कुछ जानते हैं, बल्कि बाबा को ही भूल जाते हैं।

**“सद्गुरु ने जो कहा है, वही करना चाहिए;
जो किया है, उसे नहीं करना चाहिए।”**

विशेष रूप से हर किसी को यह जानना चाहिए कि सद्गुरु कौन हैं। क्योंकि केवल वेश धारण कर लेने से, केवल आश्रम होने से, या कुछ चार बातें सिखा देने से कोई सद्गुरु नहीं बन जाता। ऐसे लोगों की शरण लेने वाले लोगों को, अनिवार्य रूप से कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसीलिए आइए शंकराचार्य के भज गोविंदम् में तोताचार्य के संदेश को देखें।

“जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः

काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।

पश्यन्नपि च न पश्यति मूढः

उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥”

ता :- कोई जटा धारण किए हुए है, कोई मुंडन करवाए हुए है, कोई बाल उखाड़े हुए है और कोई काषाय वस्त्र धारण किए हुए है। देखते हुए भी वास्तविकता को न देख पाने वाले ये मूर्ख लोग पेट भरने के लिए अनेक प्रकार के वेश धारण करते रहते हैं।

इसलिए पेट भरने के लिए वेश धारण करने वाले लोग सब के सब धोखा देने वाले गुरु ही होते हैं, लेकिन सिखाने वाले गुरु नहीं। किसी को भी शरण लेनी चाहिए तो केवल बोध गुरु की, धोखा देने वाला गुरु की नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति गुरु को उसके वेश के आधार पर नहीं आंकता। वह गुरु के ज्ञान के आधार पर गुरु की महानता को समझता है, और शरण लेता है। वह जीवन में लाभ प्राप्त करता है।

ऐसे बोध गुरुओं में, सद्गुरुओं में परम गुरुओं में शिरडी साईं बाबा एक हैं।

ऐसे सद्गुरु का आश्रय लेने वाले और उनका अनुसरण करने वाले

लोग उस गुरु ने जो कहा है, वही करना चाहिए। लेकिन जो किया है, उसे नहीं करना चाहिए। कारण यह है कि वह अभी उस गुरु के स्तर तक नहीं पहुँचा है; कारण क्योंकि बहुत से लोग उन गुरुओं पर नजर रखते रहते हैं। वे जो कुछ भी करते हैं, वे भी वही करते रहते हैं। उनका उद्देश्य यह होता है कि जब गुरुजी ने किया है, तो हमारे करने में क्या गलत है ऐसा वे सोचते हैं। इसलिए बाबा ने ऐसा किया था है, न? ऐसा वे पूछते हैं।

और कुछ लोग ऐसे गुरुओं के किए हुए काम देखकर पूछते हैं ये क्या हैं? क्या वे ऐसे काम कर रहे हैं? क्या वे ऐसे काम कर रहे हैं जो नहीं करने चाहिए? क्या ये सच में गुरु हैं? ऐसा संदेह करना, गलत समझ लेना और उनसे दूर हो जाना ऐसी बातें भी हम संसार में देखते रहते हैं।

लेकिन परम गुरुओं का व्यवहार, उनके कार्य और उनकी चेष्टाएँ किसी को समझ में नहीं आतीं। वे ऐसा क्यों करते हैं? वे वैसा ही व्यवहार क्यों करते हैं? यह सामान्य लोगों की समझ में नहीं आता। कारण वे जो कुछ भी करें, उन्हें कोई कर्म नहीं लगता। वे कर्म से परे हैं। उस स्तर तक पहुँचे हुए लोग। इसलिए ऐसे गुरुओं ने जैसा किया है, वैसा नहीं करना चाहिए; बल्कि उन्होंने जैसा कहा है, वैसा करना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है। तभी शिष्य को लाभ होता है।

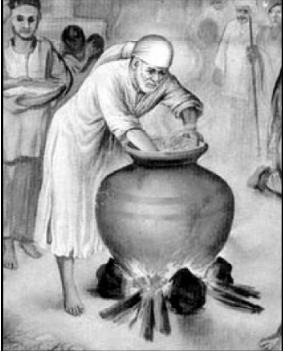
यही बात आदि शंकराचार्य जी ने अपने शिष्यों को सिखाई थी। एक बार वे अपने शिष्यों के साथ एक तीर्थ स्थान गए थे। उस तीर्थ में शंकराचार्य जी जो कुछ भी करते थे, शिष्यों ने वही करना शुरू किया। वे जो कुछ भी खाते थे, शिष्य भी वही खाते थे; और यदि वे ताड़ी (कल्लु) पीते थे, तो शिष्य भी ताड़ी पीने लगते थे। उन शिष्यों ने ऐसा करना गलत नहीं माना। उसी समय में शंकराचार्य जी ने 'सीसा' पी लिया और शिष्यों से भी पीने को कहा। लेकिन शिष्यों ने नहीं पिए, और डर गए। तब शंकराचार्य जी ने पूछा तुम क्यों नहीं पीते? शिष्यों ने कहा सीसा पीएँगे तो मर जाएँगे, है न गुरुदेव? तब

शंकराचार्य जी ने कहा मैंने तो पी लिया है, है न? शिष्यों ने उत्तर दिया आप अलग हैं, हम अलग हैं; आप तो महान हैं? तब शंकराचार्य जी कहा अब समझ में आया? “**जो मैं करता हूँ, वह मत करना; जो मैं कहता हूँ, वही करना।**”

इसी प्रकार एक अवसर पर मेहर बाबा जी ने अपने भक्तों को बताई हुई बात। एक बार एक गुरु अपने शिष्यों के साथ जाते समय उन्होंने बाजार में एक दुकान से मिठाई उठाकर अपने मुँह में डाल ली। उन्हें देखकर सभी शिष्यों ने भी एक-एक मिठाई अपने मुँह में डाल ली। फिर गुरुजी एक दूसरी दुकान के पास जलती हुई भट्ठी से धधकती हुई आग का एक अंगारा उठाकर अपने मुँह में डाल लिया। शिष्य आश्चर्य से ऐसा ही देखते रह गए। तब गुरुजी ने शिष्यों से कहा तुम लोग भी इसे मुँह में डाल लो। तब वे सब बोले अरे! मुँह जल नहीं जाएगा क्या? तुरंत उन्होंने कहा मैंने भी इसे मुँह में डाला है, है न? आप अलग हैं, हम अलग हैं; आप शक्तिशाली हैं, हम साधारण लोग हैं, आप जैसा करते हैं, वैसा हम कैसे कर सकते हैं? ऐसा उत्तर उन शिष्यों ने दिया।

इससे हमें समझना चाहिए कि सद्गुरु कुछ भी कर सकते हैं। वे सब कुछ से परे होते हैं। उनमें ऐसी शक्ति है। ऐसे महापुरुष अगर रेत मुँह में डालकर कहें कि यह चीनी है, तो वह चीनी बन जाती है। अगर वे मिर्च देकर कहें कि यह गन्ने जैसी मीठी है, खाओ तो खाने वाले को वह मीठी ही लगेगी, लेकिन तीखा नहीं लगेगी। यह सब उनकी शक्ति की महिमा ही है, और कुछ नहीं। उसी तरह बाबा जो करते हैं और जो देते हैं, वह सामान्य मनुष्य की समझ में नहीं आता।

शिरडी बाबा भी खाना बनाते समय उबलते हुए पदार्थ को करछी से नहीं, अपने हाथ से ही मिला देते थे। जरा सोचिए। उन्होंने किया है क्या हम भी उस कटोरे में हाथ डाले तो उससे क्या होगा?



इसलिए उन्होंने किया है तो शिष्य करें!
या कोई और भी करे! नुकसान उठाने वाला और
नष्ट होने वाला वही होता है, जो ऐसा करता है।
इसलिए यदि हमें उनका अनुसरण करना है, तो
हमें वही करना चाहिए जो उन्होंने कहा है। एक
बार फिर जान लीजिए। “सद्गुरु ने जो कहा है,
वही करना चाहिए। जो किया है, वैसा नहीं करना
चाहिए।”

कुछ-कुछ अवसरों पर कुछ लोग यह कहकर तर्क करते रहते हैं
उन्होंने किया ही है न? हम करें तो क्या गलती है? वे आपने हिसाब से सद्गुरु
और स्वयं को एक ही मान लेते हैं। क्योंकि सद्गुरु जो कुछ भी करते हैं? जो
कुछ भी कहते हैं? उसके पीछे कोई न कोई कारण होता है, कोई अर्थ होता
है। उसे जानने की शक्ति, समझने की शक्ति सामान्य लोगों में नहीं होती।
उन्होंने ऐसा क्यों किया, यह जाने बिना अगर वैसा ही किया जाए, तो वे मूर्ख
ही बन जाते हैं। वे जीवन में नुकसान उठाते हैं। वे कष्टों के शिकार हो जाते
हैं।

इसलिए जो बुद्धिमान हैं, उनसे द्वारा कही गई बातों को करने को ही
महत्व देते हैं, जो किया उसे करने वाले नहीं। कारण यह है कि सद्गुरु ही
'सत्य' हैं। वे 'सत्य' में जीते हैं। 'सत्य' का पालन करते हैं। 'सत्य' ही बोलते
हैं। क्योंकि वे स्वयं 'सत्य' स्वरूप हैं। इसलिए उनका अनुसरण करने का अर्थ
यह है कि, वे जो कहते हैं, वही करना चाहिए। ऐसे लोग ही वास्तव में सत्य
से जुड़े हुए लोग होते हैं। जीवन में लाभ उठाते हैं। सद्गुरु जो कुछ भी कहते
हैं या जो कुछ भी करते हैं, वह सब दूसरों के लाभ के लिए ही होता है।

यह बात हम शिरडी साईं बाबा से स्पष्ट रूप से जान सकते हैं।
कारण यह है कि वे जो काम करते हैं और जो बातें कहते हैं, उनमें से कुछ

हमें तुरंत समझ में नहीं आतीं। लेकिन हमें यह अवश्य जान लेना चाहिए कि उनकी हर बात में कोई न कोई अर्थ और गूढ़ अर्थ भाव छिपा होता है। यदि हम उन अर्थ को समझ सकेंगे, तो हमें जीवन में बहुत लाभ प्राप्त हो सकता है।

(1) आइए देखें कि सत्य से जुड़े रहना चाहिए- यह बात बाबा ने एक छोटी-सी घटना के माध्यम से कैसे समझाई। (अध्याय 5, पृष्ठ 45, पानी को तेल में बदलने की घटना)।

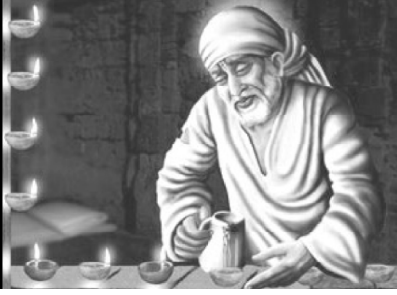
साई बाबा को दीप बहुत प्रिय थे। वे उस गाँव में तेल बेचने वाले साहूकारों (दुकानदारों) से तेल मँगवाकर मस्जिद में सारी रात दीप जलवाते थे। कुछ समय तक ऐसा ही होता रहा। एक दिन तेल देने वाले सभी दुकानदार लोग मिलकर बाबा को तेल न देने का निर्णय कर बैठे। जब बाबा हमेशा की तरह उनकी दुकानों पर गए, तो उन्होंने कह दिया कि तेल नहीं है। बाबा ने दुःखी नहीं हुए दीयों में केवल सूखी बत्तियाँ ही डालकर रख दीं। तेल के व्यापारी यह सब बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। जिस टीन के डिब्बे के तल में दो-तीन बूँद तेल की शेष था, उसमें बाबा ने पानी डालकर उसे अच्छी तरह मिला दिया और वह पानी पी लिया, फिर उसी डिब्बे से पानी लेकर दीयों में भर दिया। दूर खड़े होकर देख रहे दुकानदारों को आश्चर्यचकित कर देने के लिए सभी दीये भोर तक बहुत अच्छी तरह जलते रहे। यह सब देखकर दुकानदारों को पछतावा हुआ और उन्होंने बाबा से क्षमा माँगी। तब बाबा ने उन्हें क्षमा किया और **“आगे से सत्य का पालन करने की सीख देकर उन्हें विदा कर दिया।”**

देखो यहाँ बाबा ने उनसे सत्यम पर टिके रहने को कहा था यानी! यहाँ सत्य कौन हैं, तो बाबा ही हैं। अर्थात् बाबा का अनुसरण करने को कहा गया। मतलब बाबा ने जो कहा वही करने को कहा। बाबा को दीये बहुत पसंद थे। क्योंकि दीपक ज्ञान का प्रतीक है। जलते हुए दीपक की ज्योति

आत्म-ज्योति का संकेत है। इससे हम जान सकते हैं कि बाबा को ज्ञान और आत्मा दोनों ही प्रिय हैं। जो लोग संसार में ऐसे ज्ञान को प्रकाशित करने में सहयोग करते हैं, वे भविष्य में कितना लाभ प्राप्त करेंगे। उन सभी व्यापारियों को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से ही बाबा उनसे तेल लिया करते थे। यह बात उन्हें समझ में नहीं आई, इसलिए उन्होंने तेल देने से इनकार कर दिया। इस प्रकार बाबा ने अपनी महिमा दिखाकर उन्हें सत्य का पालन करने की शिक्षा दी। अर्थात् उन्होंने यह बताया कि वे जो कुछ भी कहें, वही करना चाहिए। क्योंकि वह सब उन्हीं के लाभ के लिए होता है।

(2) इसी प्रकार जब वे भिक्षा माँगते थे, तो ऐसे महान योगी को जो लोग भिक्षा देते हैं, वे उसका फल अवश्य प्राप्त करते हैं। इस प्रकार लोगों को यह अवसर देने के लिए बाबा स्वयं भिक्षा माँगा करते थे। इतना ही नहीं किसी से भिक्षा माँगने में अहंकार बाधा बन जाता है। मन में यह विचार आ जाता है, मैं उनसे क्यों माँगूँ? लेकिन इतनी महान शक्तियाँ होने पर भी जब स्वयं बाबा भिक्षा माँग सकते हैं! तो इससे यही सिद्ध होता है कि उनमें अहंकार बिल्कुल नहीं था। इसी प्रकार उनकी इस क्रिया में यह संदेश छिपा है कि सभी लोग अहंकार-रहित बनें। क्या सच में बाबा को भिक्षा माँगने की आवश्यकता थी? क्या कोई उन्हें भोजन लाकर नहीं देता था? कारण यह है कि मेरी तरह तुम भी अहंकार-रहित बनो यह बात बताने के लिए ही वे भिक्षा माँगते थे।

इतना ही नहीं बाबा की क्रियाएँ और वचन मर्मगर्भित, अंतर्निहित अर्थों से युक्त तथा संदेशपूर्ण होते हैं। वे अज्ञानियों के अज्ञान को दूर करने वाले होते हैं। वे मूर्खों की मूर्खता को मिटाने वाले होते हैं। इसलिए उनके वचनों और कर्मों के बाहरी अर्थ नहीं लेना चाहिए। जो लोग उन्हें इस प्रकार लेते हैं उन्हें हानि होती है। इस प्रकार हम उनके जीवन से अनेक उदाहरण बता सकते हैं। इसलिए “सद्गुरु ने जो किया है, उसे नहीं करना चाहिए - उन्होंने जो कहा है, वही करना चाहिए।”



बाबा से चाहना है क्या ?

हम बाबा के मंदिर जाकर अपनी परेशानियाँ और समस्याएँ बताते हैं और उनसे अपनी इच्छाएँ चाहते हैं। जरा सोचिए। जब बाबा को सब कुछ पता है, तो क्या हमारे कष्ट उन्हें नहीं

पता होंगे ? क्या हमारी समस्याएँ उन्हें ज्ञात नहीं हैं ? क्या उन्हें यह नहीं मालूम कि हमें क्या चाहिए ? बाबा स्वयं कहते हैं कि मुझे सब कुछ पता है। तो फिर क्या उन्हें विशेष रूप से बताने की आवश्यकता है ? जो नहीं जानते, उन्हें बताना जाता है। सब कुछ जानने वाले बाबा से बार-बार कहना, वास्तव में उनकी शक्ति को न समझना ही है ! यह उनकी शक्ति को कम करके व्यवहार करने जैसा ही है।

सब कुछ जानने वाले से कुछ चाहने नहीं चाहिए। “हमें यह समझना चाहिए कि जो करना चाहिए, वो करेंगे तो जो पाना चाहिए, वो पाएंगे।” “माँगने को महत्व नहीं देना चाहिए। करने को महत्व देना चाहिए।” लेकिन जब कष्ट आते हैं, तो हमारे मन में यह संदेह हो सकता है कि हमें क्या करना चाहिए। लेकिन क्या करना चाहिए, यह उन्होंने स्वयं ही बता दिया है। (3वें अध्याय, पृष्ठ 27वें) “जो कोई अपनी दृष्टि मेरी ओर लगाएगा! उसे न तो कोई हानि होगी और न ही कोई कष्ट, जो मुझे भूल जाता है, उसे माया दंड देती है” ऐसा उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है।

अर्थात् उनसे चाहना नहीं है। हमें उन्हीं पर ध्यान लगाना चाहिए। यही उन्होंने कहा हुआ संदेश है। लेकिन वे सब उन पर ध्यान लगाने के बजाय उनसे चाहने को ही अधिक महत्व दे रहे हैं। यदि हम उनके कहे अनुसार नहीं करेंगे, तो फल कैसे मिलेगा ? उनका अनुग्रह कैसे प्राप्त होगा ?

तो फिर यदि हम उन पर ध्यान लगाना चाहते हैं तो यह समझना होगा, वे कैसे हैं ? कहाँ रहते हैं ? अर्थात् वे आत्मा के रूप में सबमें निवास करते हैं। यह बात श्री साई सच्चरित्र में साई बाबा कौन हैं ? शीर्षक के अंतर्गत आचार्य जी. जी. नारके द्वारा कही गई है। “**बाबा मेरे हृदय में उठने वाले विचारों और इच्छाओं को जानने वाले हैं। वही मेरे भीतर विराजमान भगवान हैं।**” अर्थात् हर व्यक्ति अपने-अपने भीतर स्थित बाबा पर, यानी ‘आत्मा’ पर, ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मतलब हमें अंतर्मुखी होना चाहिए। अर्थात् ‘ध्यान’ करना चाहिए। अर्थात् जो लोग ध्यान करते हैं ! वही बाबा पर दृष्टि लगाए रखने वाले बन जाते हैं। यानी जैसे बाबा ने कहा वैसे करने वाले होते हैं। उन्हें बाबा ने कहे अनुसार उनकी कृपा प्राप्त होती है। ऐसे लोगों को कोई हानि नहीं होती। उनके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। यही बाबा का संदेश है। इसलिए मंदिर जाने वाले सभी लोगों को वहीं स्थित ध्यान-मंदिरों में बैठकर ध्यान के द्वारा बाबा पर दृष्टि बनाए रखनी चाहिए। इसीलिए बाबा के मंदिरों में ध्यान-मंदिर बनाए जाने का कारण यही है।

बाबा के मंदिरों में मेडिटेशन हॉल बनाए जा रहे हैं। लेकिन कोई भी वास्तव में ध्यान नहीं कर रहा है। बाबा पर दृष्टि नहीं रख रहे हैं। वे थोड़ी देर केवल प्रतीक रूपी मूर्ति पर ही ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। अधिकतर लोग सिर्फ इच्छाएँ माँगने तक ही सीमित रह जाते हैं। लेकिन वे बाबा सत्यस्वरूप आत्मा पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं। ध्यान नहीं कर रहे हैं। बाबा ने जो कहा है उसे कोई भी समझ नहीं रहा है। इसलिए बाबा ने जैसा कहा है उन पर अर्थात् आत्मा पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए। अर्थात् ध्यान करना चाहिए। यही बाबा का संदेश है।

आइए 43-44 अध्याय के 323वें पृष्ठ पर अमृत तुल्य बाबा के वचन शीर्षक के अंतर्गत बाबा ने जो कहा है, उसे देखें। “**जो कोई भी सर्वस्व समर्पण करके केवल मेरा ही ध्यान करता है, मैं उनका ऋणी हो जाता**

हूँ।” उन्हें मोक्ष प्रदान करके ही मैं उनका ऋण चुका दूँगा। “जो कोई मेरा (आत्मा का) चिंतन करते हुए मेरे विषय में ही (आत्मा के बारे में) दृढ़ निष्ठा के साथ रहता है, और जो मुझे अर्पित किए बिना कुछ भी नहीं खाता! “(अर्थात् पहले किसी न किसी प्राणी को अर्पित करके ही स्वयं भोजन करना चाहिए। यही बात बाबा ने स्वयं 9वें अध्याय के 8वें पृष्ठ पर कही है।) ऐसे लोगों पर ही मैं आश्रित रहता हूँ। जो कोई मेरी सन्निधि में (अर्थात् आत्मा के पास, यानी देह के भीतर) आते हैं, वे मझधार समुद्र में मिलने वाली नदी की तरह मुझमें ही विलीन हो जाता है। इसलिए तुम बिना किसी भी प्रकार के गर्व और अहंकार के, अपने हृदय में स्थित मुझे (अर्थात् अपने भीतर स्थित आत्मा को) पूर्ण शरणागति के साथ प्रार्थना करो।” इस प्रकार बाबा ने बहुत स्पष्ट रूप से ध्यान करने के लिए कहा है।

और भी सोचिए। क्या बाबा को जागरण की आवश्यकता है ? क्या वर्तमान में उन्हें इस शरीर के बिना भूख लगती है ? क्या उन्हें भोग (नैवेद्य) की आवश्यकता है ? जो कोई भी जहाँ कहीं भी हों और जो कुछ भी कर रहे हों, सब कुछ जानने की शक्ति होने वाले बाबा के लिए क्या माइक लगाकर भजन करना जरूरी है ? जो आपके मन में क्या है यह जानने की शक्ति होने वाले बाबा के लिए, क्या पूजा से पहले संकल्प कहना क्या आवश्यक है ? सब कुछ जानने वाले बाबा को क्या आपका नाम बताने की जरूरत है ? क्या उन्हें यह पता नहीं चलेगा कि आप उसकी पूजा कर रहे हैं, जब तक आप अपना नाम नहीं बताते ? केवल नाम ही नहीं, बल्कि नाम के साथ गोत्र भी बताया जाता है। क्या सच में बाबा को इन सब की जरूरत है ?

सोचिए। अगर उनकी शक्ति को समझ लें, तो क्या हम यह सब करेंगे ? और अगर हम यह सब कर रहे हैं, तो क्या हम उनकी शक्ति के अनुसार व्यवहार कर रहे हैं ? निश्चित रूप से हम उनकी शक्ति को कम कर रहे हों।

एक तरह से देखें तो ये सब हमारी तृप्ति के लिए किए जाने वाले कार्यों के अलावा और कुछ नहीं है, बाबा को इनकी कोई आवश्यकता नहीं है। बाबा को तो यही चाहिए कि उनके भक्त वही करें जैसा उन्होंने कहा है! उन्होंने जिस मार्ग का अनुसरण किया है, उसी मार्ग का चलना चाहिए। इसलिए उनके कहे हुए हर शब्द को और हर संदेश को सावधानी से ग्रहण करना चाहिए। आचरण में लाना चाहिए। ऐसा करने वाले ही बाबा के सच्चे भक्त हैं। वही धन्य जीव हैं।

बाबा ने जैसे कहा है, वैसे आचरण करने के बजाय, अपनी इच्छाओं के लिए उनकी पूजा करने वाले लोग उनके भक्त कैसे हो सकते हैं? असल में यह सब लिखने का कारण सभी लोगों के द्वारा किए जाने वाले कार्यों की आलोचना करने का नहीं है। केवल बाबा को समझकर, बाबा के संदेश के अनुसार जीवन जीने के लिए है। यदि आपको चाहिए तो आप अपने मन को तृप्ति करने वाले सभी कार्य कर सकते हैं। लेकिन मुख्य रूप से बाबा के संदेश को समझकर उसे आचरण में लाइए। मुख्य रूप से यह सोचना चाहिए कि क्या “मेरे किए हुए कार्य मुझे ही संतोष दे रहे हैं, या बाबा को भी संतुष्टि दे रहे हैं?” इतना ही नहीं, आप जो कार्य करें वह आपकी पसंद के अनुसार नहीं, बल्कि बाबा को पसंद आने वाला होना चाहिए।”

मुख्य रूप से कोई भी हो, उसे बाबा की शक्ति के अनुरूप ही व्यवहार करना चाहिए। बाबा की शक्ति को जानना चाहिए। बाबा शक्ति को कम नहीं करना चाहिए। न ही उसकी शक्ति को कम नहीं आँकना चाहिए। क्या हमने उनकी शक्ति को कम कर दिया? या नहीं? यह हमारे व्यवहार के अनुसार स्पष्ट रूप से जान जा सकता है।

तो फिर बाबा की शक्ति के अनुसार व्यवहार करना यानी क्या? यह जानना चाहिए कि वे दिखाई देने वाला शरीर नहीं, बल्कि दिखाई न देने वाली आत्मा हैं। उन पर दृष्टि लगाना चाहिए यानी ध्यान करना चाहिए। अर्थात्

मंदिर जाने पर सबसे पहले दिखाई देने वाले उनके 'प्रतीकरूप' को देखकर उसी से संतुष्ट न होकर, वहीं स्थित ध्यान मंदिर में ध्यान करने के द्वारा उनके दिखाई न देने वाले 'सत्य स्वरूप आत्मा' के दर्शन करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने वालों को 'बाबा के सत्यस्वरूप का दर्शन' प्राप्त होता है। इसे ही 'आत्मसाक्षात्कार' भी कहा जाता है। जिसे यह प्राप्त हो जाता है, उसका जीवन ही धन्य हो जाता है। उन्हें किसी भी चीज़ की कोई आवश्यकता नहीं होती। उन्हें मुक्ति मिल गई हो। अर्थात् वे सभी दुःखों से, कष्टों से समस्याओं से स्थायी रूप से मुक्त हो गए हों, ऐसा ही है। यह साधारण आनंद नहीं है, वे मानो ब्रह्मानंद को, शाश्वत आनंद को प्राप्त कर चुके होते हैं! याद रखिए "मूर्ति के दर्शन करने से तृप्ति मिलती है, लेकिन आत्मा के दर्शन करने से मुक्ति मिलती है।"

वास्तव में मनुष्य के जीवन का लक्ष्य भी यही है! हर मानव को यही प्राप्त करना चाहिए। इस के लिए प्रयास करना चाहिए! इस प्रकार 'आत्मसाक्षात्कार' प्राप्त करने वाले लोग मानो माया से बाहर निकल गए हों! और ज्ञान को प्राप्त कर चुके हों! इसलिए बाबा ने जैसा कहा है, वैसे ही उन पर ध्यान के माध्यम से अपनी दृष्टि बनाए रखें।



बाबा द्वारा उपदेशित ब्रह्मज्ञान अथवा आत्मसाक्षात्कार ।

जो लोग बाबा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, अर्थात जो ध्यान करते हैं, वे धीरे-धीरे ब्रह्मज्ञान प्राप्त करते हैं। अर्थात वे आत्म साक्षात्कार प्राप्त करते हैं।

यह जानना चाहिए कि जिन्होंने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है, वे अपने कष्टों और समस्याओं से स्थायी रूप से मुक्त हो जाते हैं। हर किसी को मोक्ष प्राप्त करना है, अर्थात आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है, लेकिन यह इतना आसान नहीं है। इसके लिए कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है और कुछ योग्यता की आवश्यकता होती है। वह योग्यता कैसे आती है? वे नियम क्या हैं? यह सब बाबा ने स्वयं बताया है। आइए श्री साईं सच्चरित्र के 16, 17 अध्यायों (पृष्ठ 128-131) में बाबा के संदेश को देखें।

ब्रह्मज्ञान या आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए योग्यता

1) मुमुक्षुता अर्थात मुक्ति (स्वतंत्रता) प्राप्त करने की तीव्र इच्छा:-

“जो कोई यह समझ लेता है कि वह (बंधन में) है, और उन बंधनों से बाहर निकलने का दृढ़ निश्चय करके, कड़ी मेहनत करता है, तथा अन्य सुखों की ओर ध्यान न देकर केवल उसी (आत्मसाक्षात्कार) को प्राप्त करने का प्रयास करता है वही आध्यात्मिक जीवन के लिए योग्य होता है।”

विवरण:- यहाँ अन्य सुखों का अर्थ सांसारिक सुख है। इन्हें अस्थायी सुख भी कहा जाता है। अर्थात भौतिक शरीर से अनुभव किए जाने वाले सुख जैसे भोजन, कपड़े, घर आदि। वे चाहे जैसे भी हों, उन्हें सीमित रखना चाहिए और उन्हें और... और... चाहिए ऐसा इच्छा करके नहीं चाहना चाहिए। उनके लिए गलतियाँ और पाप नहीं करने चाहिए। अधर्मपूर्ण व्यवहार नहीं करना

चाहिए। अर्थात् आत्मा के सुख के अलावा अन्य किसी भी अन्य सुख को महत्व नहीं देना चाहिए यही बाबा का संदेश है।

2) विरक्ति - अर्थात् इहलोक और परलोक के सुखों से ऊब जाना :-

“जब तक मनुष्य इस लोक और परलोक में मिलने वाले सम्मान और विषय-सुखों से ऊब नहीं जाता, तब तक उसे पारमार्थिक क्षेत्र में प्रवेश करने की योग्यता नहीं होती।”

विवरण:- बाबा द्वारा कहे गए इस एक वाक्य से हम बहुत से संदेश लिए जा सकते हैं। उस वाक्य में ही बहुत गहरा अर्थ निहित है। बाबा जो भी कहते हैं! जो भी संदेश देते हैं, उन्हें यँही पढ़कर छोड़ देने की बात नहीं है। उसके अर्थ और अंतरार्थ को जानने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने के लिए उसी संदेश को बार-बार पढ़ना चाहिए। हर शब्द के अर्थ को ठीक से समझने का प्रयास करना चाहिए।

यहाँ इहलोक और परलोक के बारे में बताया गया है। पहले इसके बारे में जान लेते हैं। इस सृष्टि में इहलोक और परलोक - इस तरह दो प्रकार के लोक हैं। इहलोक का अर्थ है लोक जो हमारी आँखों को दिखाई देते हैं, और परलोक का अर्थ है वे लोक जो हमारी आँखों को दिखाई नहीं देते। हम सभी को इहलोक के बारे में पता है, लेकिन परलोक के बारे में नहीं पता।

जब बाबा कहते हैं “**इहलोक और परलोक में मिलने वाले इज्जत और विषय-सुखों से ऊब गए है**”, तो मुख्य रूप से यह जानना चाहिए कि हमारा जीवन दो प्रकार का होता है। एक तो वह इहलौकिक जीवन है, जो हमें दिखाई देता है, और जिसे हम शरीर के साथ अनुभव कर रहे हैं। और इसी प्रकार इस शरीर को छोड़ने के बाद अर्थात् मृत्यु के बाद हमें प्राप्त होने वाला अदृश्य पारलौकिक जीवन भी होता है।

इसके अलावा अगर हम सोचें तो हमें और भी बहुत से संदेश मिलते हैं। हम सोचते हैं कि हम सब मर जाएंगे। लेकिन यह स्पष्ट रूप से समझ में आता है कि हम मरने के बाद भी रहते हैं। अर्थात् यह भी स्पष्ट रूप

से जान सकते हैं कि हमें मृत्यु नहीं है। इसलिए हमें समझना चाहिए कि मरता तो केवल शरीर है, हम नहीं। अर्थात् यह भी जान सकते हैं कि हमारे आगे भी और जन्म होते हैं। तो फिर अगर आगे भी जन्म हैं, तो इससे यह भी पता चला है कि हमें पिछले भी जन्म हुए हैं, है न ?

इस विषय को अर्थात् हर किसी के आगे भी जन्म होते हैं, बाबा ने कई संदर्भों में कहा है।

(1) अध्याय 36, पृष्ठ 274 में बाबा ने श्यामा का गाल चुटकी से पकड़ा।

एक दिन श्यामा दोपहर का भोजन करने के बाद जब बाबा के हाथ तौलिये से पोंछ रहा था, तब बाबा ने श्यामा का गाल नोचा था। श्यामा क्रोधित होकर बोला “देवा! मेरा गाल को नोचना उचित है ? हमारे गाल को नोचने वाला शरारती भगवान हमें नहीं चाहिए। क्या हम तुम पर निर्भर हैं ? क्या यही हमारी जिद् दी का फल है ?” ऐसा उसने कहा।

तब बाबा ने इस तरह कहा “श्यामा! 72 जन्मों से तुम मेरे साथ होने पर भी, लेकिन मैंने कभी तुम्हारे गाल को नोचना नहीं किया। इतने दिनों बाद जब मैंने नोचने से तुम्हें गुस्सा आ रहा है।”

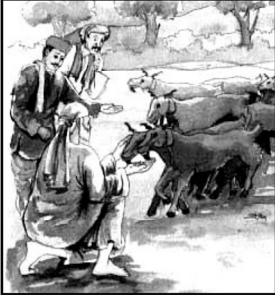
बाबा के वचनों से हम स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं कि सबको जन्म होते हैं। इतना ही नहीं केवल हमें ही नहीं, बल्कि जिन्हें हम भगवान मानते हैं, उन्हें भी जन्म होते हैं—उन्होंने भी पहले कई जन्म लिए हैं। यह बात हम इससे स्पष्ट रूप से जान सकते हैं। बहुत से लोग ऐसा मानते हैं कि वे अवतार पुरुष हैं और लोक-कल्याण के लिए अवतरित हुए हैं। लेकिन बाबा के वचनों से यह भी जान सकते हैं कि बाबा ने भी पहले कई जन्म लिए हैं। यही बात श्रीकृष्ण भगवान ने भी भगवद्गीता में कही है।

श्लो॥ बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप॥ (भ.गी.4-5)

ता:- “हे अर्जुन! तुम्हारे और मेरे अनेक जन्म हो चुके हैं। उन सबको मैं जानता हूँ, लेकिन तुम नहीं जानते।”

(2) (46वें अध्याय के 335वें पृष्ठ पर दो बकरियों की कहानी)



एक दिन बाबा लेंडी वन से लौटते समय रास्ते में बकरियों का एक झुंड देखा। उनमें से दो बकरियों पर बाबा की दृष्टि पड़ी। तुरंत ही उन्होंने उन दोनों बकरियों को 32 रुपये में खरीद लिया, जबकि उनकी कीमत आठ रुपये से ज्यादा नहीं थी। यह देखकर भक्त आश्चर्यचकित हो गए और उन्होंने बाबा की निंदा की। बाबा बिना कुछ कहे चुप रहे। बाद में बाबा ने चार सेर चना दाल खरीदकर उन बकरियों को खिलाने के लिए कहा और फिर उन बकरियों को उनके मालिक को वापस दे दिया।

तब श्यामा और तात्याकोटे ने बाबा से पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। तब बाबा ने इस प्रकार कहा।

“ओ श्यामा! ओ तात्या! तुम यह समझ रहे हो कि इस सौदे में मैं धोखा खा गया हूँ। ऐसा नहीं है। उनकी कहानी सुनो। पिछले जन्मों में वे मनुष्य थे। अपने भाग्य के अनुसार वे मेरे मित्र बनकर रहते थे। वे एक ही माँ के बच्चे थे। शुरू में उन्हें एक-दूसरे से प्रेम था, लेकिन धीरे-धीरे वे एक-दूसरे के दुश्मन बन गए। बड़ा वाला आलसी था, छोटा वाला फुर्तीला था। उसने बहुत धन कमाया। बड़े भाई ने ईर्ष्या के कारण छोटे भाई को मारकर उसका धन चुराना चाहा। अपने भाईचारे को भूलकर वे दोनों झगड़ पड़े। बड़े भाई ने छोटे भाई को मारने के लिए कई षड्यंत्र रचे, लेकिन वे सब निष्फल हो गए। अंत में वे दोनों पक्के दुश्मन बन गए।

एक दिन बड़े भाई ने अपने छोटे भाई को डंडे से मारा। छोटे भाई ने बड़े भाई को कुल्हाड़ी से काट डाला। दोनों उसी जगह पर मरकर गिर पड़े। अपने कर्मों के फलस्वरूप वे बकरियों के रूप में जन्मे। जब वे मेरे पास से जा रहे थे, तब मैंने उन्हें पहचान लिया। मुझे उनका पूर्व वृत्तांत याद आ गया। उन

पर दया करके उन्हें भोजन देकर, कुछ विश्राम कराकर और उन्हें सांत्वना देने का मैंने विचार किया। इसलिए मैंने इतना धन खर्च किया। इसके लिए क्या आप मुझे दोष दे रहे हैं ? मेरी यह सौदा आपको पसंद न आने के कारण मैंने उन्हें उनके मालिक के पास वापस भेज दिया।”

बाबा द्वारा कही गई ऊपर की बातों से यह पता चलता है कि हर किसी को अनेक जन्म होता है। इससे यह भी स्पष्ट रूप से जान सकते हैं कि हमें भी आगे कई जन्म होते हैं। इस तरह यह भी जानना चाहिए कि कोई भी जन्म हमारे किए हुए कर्मों पर ही निर्भर होते हैं। वर्तमान में हम चाहे कितने ही धनवान हों! चाहे कितने ही महान हों! घमंड नहीं करना चाहिए। अगर हमारे किए हुए कर्म सही न हों, तो हमें यह जान लेना चाहिए कि फिर हमें पशु जन्म या उससे भी अधिक हीन और नीच जन्म लेना पड़ेगा। हमें अपने कर्म सावधानी से करने चाहिए। हमें अपने नुकसान करने वाले कर्म नहीं करने चाहिए। क्योंकि पिछले जन्म में बाबा के साथ रहने पर भी, अपने किए हुए कर्मों के कारण वे मनुष्य के जन्म से गिरकर जानवर के जन्म में आए हैं, है न! बाबा ने इस प्रकार यह संदेश दिया कि यदि हम वर्तमान में अपनी इच्छा के अनुसार गलत आचरण करेंगे, तो हमें भी ऐसे ही जन्म लेने पड़ेंगे। इसलिए यदि हम अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करके, कर्म करके यह समझें कि हम बाबा की प्रार्थना और पूजा कर रहे हैं, तो नुकसान हमारा ही होगा।

(3) इसी प्रकार बाबा के भक्त भागोजी के पिछले जन्म के बारे में 7वें अध्याय के 65वें पृष्ठ पर इस तरह कहा गया है। भागोजी अपने पिछले जन्मों में किए गए पापों के फलस्वरूप इस जन्म में कुष्ठ रोग से पीड़ित था। वह अपनी उँगलियाँ घसीटना ले जाते हैं। उसके पूरे शरीर से पीप बह रही थी और बहुत दुर्गंध आ रही थी।

इस आधार पर हम उन कहानियों के ज़रिए बाबा के संदेशों से यह भी जान सकते हैं कि पिछले जन्म में किए गए कर्मों का फल इस जन्म में भुगतना पड़ता है और वे कितने दुखदायी हो सकते हैं। इसलिए वर्तमान में हमें

अभी किए हुए कर्मों का फल यदि इस जन्म में न भी मिले, तो भी भविष्य के जन्मों में हमें अवश्य भोगना पड़ता है।

(4) इसके अलावा अपने किए हुए कर्मों के, कष्टों को सहन न कर पाने के कारण यदि कोई आत्महत्या करने की सोच भी ले, तो उससे कोई लाभ नहीं होता। उसकी स्थिति और भी दयनीय हो जाती है। इस विषय को 26वें अध्याय के 197वें पृष्ठ पर, अक्कलकोटकर महाराज के समय में घटी एक कथा के माध्यम से जाना जा सकता है।

एक भक्त ठीक न होने वाली दीर्घ बीमारी से पीड़ित था। पीड़ा सहन न कर पाने के कारण निराश होकर वह कुएँ में कूद गया। तुरंत महाराज आए और उसे कुएँ से बाहर निकालकर इस प्रकार बोले। “तुम्हें अपने पिछले जन्म के पाप-पुण्य के फल अवश्य ही भोगने पड़ेंगे। यदि तुम्हारे कर्म पूरे नहीं हुए तो प्राणों का त्याग करने से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। तुम्हें फिर एक और जन्म लेकर दुःख भोगना पड़ेगा। मरने से पहले कुछ समय तक भी अपने कर्मों का फल क्यों न भोग लो? पिछले जन्मों के पापों को क्यों न मिटा दिया जाए? इसलिए इसे हमेशा के लिए जाने जैसा करो।”

इसलिए हर किसी को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। हमें यह जान लेना चाहिए कि हमारी आराधनाएँ, पूजाएँ और भजन हमें हमारे कर्मों के फल से नहीं बचा सकते।

इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हमारे कारण किसी को भी, किसी भी प्राणी को कष्ट या नुकसान न पहुँचे। नहीं तो उन कर्मों का फल भविष्य में हमें अवश्य ही भोगना पड़ेगा। हमें दुःख सहन पड़ेगा और रोगों से ग्रस्त होना पड़ेगा। वर्तमान में जो लोग विभिन्न बीमारियाँ से पीड़ित हैं, उनका कारण यही है कि वे उनके पिछले जन्मों (या अतीत) में किए गए पाप कर्मों का फल भोग रहे हैं। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि “पूर्व जन्म में किए गए पाप व्याधि (रोग) के रूप में पीड़ा देते हैं।”

बाबा ने आगे कहा “इह लोक और परलोक में मिलने वाले सम्मान और विषय-सुखों से ऊब जाना चाहिए।”

इह लोक में हर कोई यह मानता है कि धन होने से ही सम्मान मिलता है। धन बढ़ाने के लिए, कमाने के लिए उतावले रहते हैं। बहुत कड़ी मेहनत करते रहते हैं। धन के लिए लोग गलत काम भी करने लगते हैं। धर्म का उल्लंघन करते हैं। इसका कारण यही है कि लोग मानते हैं कि धन होने से ही सम्मान मिलता है। इतना ही नहीं लोग यह भी मानते हैं कि पद होने से सम्मान मिलता है, बड़ी नौकरी होने से सम्मान है, और किसी भी क्षेत्र में नाम कमाने से सम्मान मिलता है। उनके लिए तड़पते रहते हैं। लेकिन बाबा ने कहा कि इन सब से ऊब जाना चाहिए, अर्थात् इनसे विरक्ति हो जानी चाहिए।

इसी प्रकार इस लोक के विषय, अर्थात् सुख देने वाली जैसे संसार, पत्नी, बच्चे, बंगले, गाड़ियाँ, सोना, महँगे वस्त्र आदि इनके प्रति भी विरक्ति (ऊब) होनी चाहिए, ऐसा बाबा ने कहा है। अर्थात् विरक्ति होनी चाहिए ऐसा कहा गया है। अर्थात् वैराग्य प्राप्त करना चाहिए ऐसा कहा गया है। अर्थात् सांसारिक विषयों के प्रति ममत्व (आसक्ति) छोड़ देनी चाहिए। ऐसा हुए बिना आत्मज्ञान प्राप्त करने के योग्य नहीं बन सकते ऐसा कहा गया है। इसके आधार पर देखें तो हम जान सकते हैं कि बाबा द्वारा कहे गए एक वाक्य से हम कितना गहरा अर्थ निकाल सकते हैं।

3) अंतर्मुखता (अंदर की ओर देखना) :-

“ भगवान ने हमारी इंद्रियों को बाहरी जगत को देखने के लिए बनाया है। इसलिए मनुष्य हमेशा बाहर की ओर ही देखता रहता है। लेकिन जो आत्मसाक्षात्कार या मोक्ष चाहता है, उसे अपनी दृष्टि को भीतर की ओर ले जाकर, अंदर स्थित आत्मा को एकाग्र ध्यान से देखना चाहिए।”

विवरण :- यहाँ बाबा बहुत स्पष्ट रूप से कहते हैं कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना चाहिए, और उसके लिए ध्यान ही

मार्ग है। ध्यान के द्वारा हम अपने भीतर स्थित आत्मा पर दृष्टि केंद्रित कर सकते हैं, और इसके लिए अंतर्मुखी बनना आवश्यक है। भगवान सर्वांतर्यामी हैं, अर्थात् वे सभी के अंतःकरण में आत्मा के रूप में व्याप्त हैं। ऐसे भगवान अर्थात् भीतर स्थित आत्मा का साक्षात्कार करना हो तो मनुष्य को अंतर्मुखी होना ही चाहिए। उसका मार्ग ही ध्यान है। अर्थात् आत्म-साक्षात्कार के लिए हर किसी को ध्यान अवश्य करना चाहिए।

यहाँ आँखें बंद करके ध्यान करने से हम अंतर्मुखी कैसे बनेंगे? आत्मा पर ही दृष्टि कैसे केंद्रित कर सकते हैं? आत्म-साक्षात्कार कैसे प्राप्त कर सकते हैं? ऐसा संदेह बहुत से लोगों को होता है। आइए इसके बारे में थोड़ा विस्तार से जानें।

अंतर्मुखता का अर्थ भीतर की ओर देखना होता है। जब हम आँखें खुली रखते हैं, तो केवल बाहरी दृष्टि होती है, अंतर्दृष्टि नहीं होती। इसलिए हम आँखें बंद करते हैं। जैसे ही हम आँखें बंद करते हैं, वैसे ही हम बाहरी विषयों से अपनी दृष्टि हटा लेते हैं। लेकिन आँखें बंद करते ही किसी न किसी प्रकार के विचार आने लगते हैं। स्वाभाविक रूप से आने वाले सभी विचार बाहरी विषयों से ही संबंधित होते हैं। अर्थात् आँखें बंद करने पर भी हम भीतर नहीं जाते। बाहरी विषयों से संबंधित विचारों के साथ हम बाहर ही रहते हैं। और भीतर (अंतर) में जाने के लिए अनिवार्य रूप से सभी विचार पूरी तरह रुक जाने चाहिए। मन को शून्य हो जाना चाहिए।

ऐसा होने के लिए सबसे सरल मार्ग है “श्वास पर ध्यान।” जब भी विचार आएँ, तब उन विचारों को रोककर “श्वास पर ध्यान” केंद्रित करना चाहिए। ऐसा करते-करते धीरे-धीरे विचार कम होते जाते हैं और हमें पता चले बिना ही विचार रुक जाते हैं। जब विचार पूरी तरह रुक जाते हैं, तब हम अंतर्मुख हो जाते हैं। वहाँ शरीर नहीं है, मन नहीं है। वहाँ केवल आत्मा ही रहती है। ऐसी स्थिति में कुछ समय तक स्थिर रहने पर आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होता है।

इसीलिए बाबा ने अंतर्मुख होने को कहा यही कारण है।

4) पाप विमोचन प्राप्त करना :-

“जब मनुष्य अपनी बुद्धि को दुष्ट मार्ग से नहीं मोड़ता, गलतियाँ करना नहीं छोड़ता और मन को स्थिर नहीं रख पाता, तब वह ज्ञान के माध्यम से भी आत्म-साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर सकता।”

विवरण :- जिसकी बुद्धि सही निर्णय नहीं ले पाती, जो नहीं करने चाहिए ऐसे कार्य करता है, अधर्म के काम करवाता है। और जो मनुष्य अपनी गलतियाँ करना नहीं छोड़ता; तथा आँखें बंद करने पर भी जिसका मन चंचल होकर तरह-तरह के विचारों से भरा रहता है ऐसे लोग आत्म-साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर सकते, ऐसा बाबा ने कहा। यहाँ मन का चंचल होना मतलब यह है कि आँखें बंद करने पर किसी को भी तरह-तरह के विचार आते रहते हैं। कुछ समय तक अतीत के बारे में विचार आते हैं, तो कुछ समय तक भविष्य के बारे में विचार आते हैं। अर्थात् मन इधर-उधर डोलते हुए चंचल रहता। लेकिन निश्चल नहीं रहता। यह आत्म-साक्षात्कार के लिए उपयुक्त स्थिति नहीं है। इसलिए सबसे पहले मन को निश्चल करना चाहिए। उसके लिए “श्वास पर ध्यान” रखना चाहिए। ऐसा करने पर विचार धीरे-धीरे कम होते जाते हैं, कुछ समय बाद सभी विचार रुक जाते हैं और वही निश्चल स्थिति है, आत्मसाक्षात्कार से पहले ऐसी स्थिति को प्राप्त करना चाहिए। यही बाबा द्वारा दिया गया संदेश है।

5) सही आचरण :-

“सत्य बोलते हुए, तपस्या करते हुए, भीतर की ओर देखते हुए और ब्रह्मचारी होकर रहने पर भी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं होता।”

विवरण :- आइए इन विषयों के बारे में थोड़ा जानें।

सत्य : पहले सत्य के बारे में जान लेते हैं। सत्य क्या है ? अर्थात् जो नित्य है, वही सत्य है। नित्य क्या है ? अर्थात् जो शाश्वत है। शाश्वत क्या है ? अर्थात् जो हमेशा रहता है। हमेशा क्या रहता है ? अर्थात् युग बदलने पर भी जो बिना

बदले बना रहता है।

ऐसा इस सृष्टि में क्या है ? तो केवल एक ही है वही 'भगवान'। वही 'आत्मा'। इसलिए यह जानना चाहिए कि 'आत्मा ही सत्य है।' यह जानना चाहिए कि 'भगवान ही सत्य हैं।' यह जानना चाहिए कि 'ईश्वर ही सत्य हैं।'।

बाबा ने सत्य बोलने को कहा। अर्थात् हर समय ईश्वर के बारे में ही बात करनी चाहिए। अर्थात् आत्मा से संबंधित विषयों पर अधिक चर्चा करते रहना चाहिए। आत्मज्ञान के बारे में बात करनी चाहिए। बहुत-से लोग सत्य बोलने का अर्थ केवल सच बोलना सोचते हैं। लेकिन सत्य अलग है, और सच अलग है।

तपस्या : इसी प्रकार बाबा ने तपस्या करने के लिए कहा। तपस्या का अर्थ कहीं जाकर एक पैर पर खड़े रहना नहीं है। तपस्या का अर्थ स्वयं को तपाना है। अर्थात् स्वयं को शुष्क करना, यानी कम करना।

जीवन में सब कुछ कम करना ही तपस्या है। ऋषियों की तरह धीरे-धीरे भोजन को कम करते रहना चाहिए। बातें कम करते रहना चाहिए। हर चीज के प्रति मोह कम करते रहना चाहिए। बेकार आदतों को कम करते रहना चाहिए। "मैं" का अहंकार कम करते रहना चाहिए। मेरा का ममकार कम करते रहना चाहिए। इच्छाओं को कम करते रहना चाहिए। इस प्रकार जीवन में हर वस्तु को कम करते रहना ही तपस्या है ऐसा कहा गया है।

इस प्रकार "सांसारिक विषयों के प्रति विरक्ति होनी चाहिए, और आत्मा के प्रति आसक्ति बढ़नी चाहिए।" बाबा ने कहा कि यही आत्म-साक्षात्कार का मार्ग है।

अंदर देखना : अर्थात् ध्यान करना चाहिए। श्वास पर ध्यान रखना चाहिए। प्रारंभ में जब समय मिले तब ध्यान करना चाहिए, और बाद में समय निकालकर ध्यान के माध्यम से भीतर स्थित आत्मा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

ब्रह्मचारी होकर रहना चाहिए : ब्रह्मचारी होकर रहने का अर्थ यह नहीं है कि

शायद संसार को छोड़ देना चाहिए ऐसा लोग सोचते हैं। ऐसा सोचते हुए ये सब हमारे लिए कैसे संभव है ? यह हमारे वजह से नहीं है! यह तो केवल किसी महान लोगों को, महात्माओं को, कारणजन्म वालों को, पूर्वजन्म के पुण्य वाले लोगों के लिए ही संभव है; लेकिन हमारे जैसे साधारण लोगों के लिए यह सब कैसे संभव हो सकता है ? सब कुछ छोड़कर इन सबका आचरण करना बहुत कठिन लगता है। लोग बस यही सोचते रहते हैं कि हमारा जीवन बिना किसी बड़ी कमी के चल जाए, वही काफी है।

लेकिन ब्रह्मचारी होने का अर्थ संसार से दूर रहना नहीं है। जो सदैव ब्रह्मचिंतन में रहता है, वही ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्म का अर्थ भगवान है। अर्थात् आत्मा। कभी भी कोई भी कार्य करते समय यह भावना रखनी चाहिए कि सभी आत्मस्वरूप ही हैं और सब एक ही हैं। समस्त ही दैव है। सब कुछ दैवमय है। ईश्वर के अतिरिक्त कुछ भी अलग नहीं है इस भावना के साथ जीवन जीना ही ब्रह्म में विचरण करना है। ऐसा व्यक्ति ही ब्रह्मचारी है। यह भी आत्मसाक्षात्कार का एक मार्ग है।

इसीलिए बाबा ने 'सब का मालिक एक है' ऐसा बार-बार कहते रहते थे।

6) प्रिय लगने वाली चीजों की अपेक्षा श्रेयस्कर मार्ग को चुनना :-

“संसार में दो प्रकार की वस्तुएँ होती हैं। एक अच्छी, दूसरा प्रीतिकर है। पहला वेदांत विषयों से संबंधित होती है। दूसरा सांसारिक विषयों से संबंधित होती है। ये दोनों मनुष्य को प्राप्त होती हैं। इनमें से मनुष्य को एक को ही चुनना चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति पहले वाले अर्थात् शुभ (श्रेयस्कर) को चुनता है। जबकि अल्पबुद्धि व्यक्ति दूसरे को चुनता है।”

विवरण :- शास्त्रों में भी हमें दो मार्ग बताए गए हैं।

1) श्रेयो मार्ग, 2) प्रेयो मार्ग।

जो श्रेयस्कर को चाहते हैं, वे श्रेयो मार्ग का अनुसरण करते हैं। जो

प्रिय को चाहते हैं वे प्रेयो मार्ग का अनुसरण करते हैं ।

श्रेयस्कर का अर्थ है जो हमारा अच्छी करने वाला है, अर्थात जो मुक्ति देने वाला है । अर्थात जो कष्टों को दूर करने वाला है । जो दुःख को सदा के लिए दूर करने वाला और शाश्वत ब्रह्मानंद प्रदान करने वाला है ।

प्रिय का मतलब है पसंदीदा । हमें तरह-तरह की पसंद होती है । उन पसंदों को पूरा करने की कोशिश करते हैं । आमतौर पर हर किसी को धन पसंद होता है । भोग-विलास और सौभाग्य पसंद होते हैं । धन-संपत्ति पसंद होती है । बड़े-बड़े मकान (महल जैसे भवन) पसंद होते हैं । कारें पसंद होती हैं, और विलासपूर्ण घरेलू उपकरण भी पसंद होते हैं । यहाँ तक कि ऐसी जीवन-शैली भी पसंद होती है । इसके अलावा पद पसंद होते हैं, बड़े-बड़े नौकरी के पद पसंद होते हैं, परिवार पसंद होता है, बच्चे पसंद होते हैं, पत्नी हो या पति सब पसंद होते हैं । यूँ कहते जाएँ तो इस दुनिया में दिखाई देने वाली हर चीज़ किसी न किसी को बहुत पसंद होती है । एक तरह से देखा जाए तो सांसारिक चीज़ें लोगों को अत्यंत प्रिय लगती हैं । सभी को यही चीज़ें प्रिय होती हैं । इसलिए सभी लोग इसी सांसारिक मार्ग का ही अनुसरण कर रहे हैं ।

वास्तव में बुद्धिमान वे लोग होते हैं जो अपनी पसंद की चीज़ें माँगने वालों से अलग चाहे वह कठिन ही क्यों न हो, जो अपने स्थायी हित की कामना करते हैं । क्योंकि मनुष्य अपनी मनपसंद चीज़ें चाहे जितनी भी इकट्ठा कर ले या कमा ले, वह फिर भी दुःख में ही जीवन बिताता है । अशांति से ग्रस्त रहता है । समस्याओं से जूझता रहता है । ध्यान से देखें तो मनुष्यों के पास सब कुछ है । लेकिन किसी को भी शांति नहीं है । अच्छा स्वास्थ्य नहीं है । परिवार में मधुर संबंधों का अभाव है । एक-दूसरे को समझने की भावना नहीं है । सब कुछ एक जैसा होते हुए भी समाज में जातिगत संघर्ष, धार्मिक टकराव और क्षेत्रीय भेदभाव बने हुए हैं । जिसे भी देखें, उसके पास सुख-सुविधाएँ तो हैं, लेकिन वे उन्हें पूरी तरह से अनुभव नहीं कर पा रहे हैं ।

वे शांति से जीवन नहीं जी पा रहे हैं ।

इन सबका कारण यही है कि हर कोई वही चाहता है जो उसे प्रिय लगता है । प्रेय मार्ग का ही अनुसरण करता है । हर कोई केवल अपनी पसंद ही देख रहा है, लेकिन सामने वाले की मुश्किलों की परवाह नहीं कर रहा है । आइए एक छोटा-सा उदाहरण देखें । हर कोई अपनी पसंद का मांसाहार खा रहा है । लेकिन वे यह नहीं सोचता कि अपने इस काम की वजह से कितने जानवर हिंसा का शिकार हो रहे हैं ! कितने मारे जा रहे हैं ! वे अपनी पीड़ा कह नहीं पाते और मूक होकर कैसे रो रहे हैं ! मनुष्य यह पहचान ही नहीं पा रहे हैं । वे हर समय केवल अपनी ही पसंद देखते रहते हैं ।

इसीलिए बाबा जी ने स्पष्ट रूप से कहा “**बुद्धिमान व्यक्ति शुभ को चाहता है, और कम बुद्धि वाला प्रिय वस्तु को चाहता है।**” इसे देखकर हम जान सकते हैं कि जो व्यक्ति केवल प्रिय को चाहता है, वह कम बुद्धि वाला होता है । इसलिए अपनी इच्छाओं को एक ओर रखकर यह जानना चाहिए कि भगवान को क्या प्रिय है । ज़रा सोचिए । हर कोई अपनी पसंद के अनुसार ही कर रहा है, लेकिन यह नहीं देख रहा कि उसके किए हुए कार्य से भगवान प्रसन्न हो रहे हैं ? या नहीं ? हर समय अपने ही नजरिए से सोचते हैं, लेकिन भगवान नजरिए से नहीं सोचते । अपनी नजर में वे महान हैं । लेकिन भगवान की दृष्टि में सृष्टि में जो कुछ भी है, वह सब महान ही है ! सब कुछ उन्हें प्रिय है, क्योंकि यह सब उनकी ही सृष्टि है ।

इसलिए सबको प्रिय लगने वाले सांसारिक मार्ग के बजाय, भगवान को प्रसन्न करने वाले आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए । वही वास्तव में बुद्धिमानी हैं । वही मार्ग मनुष्य के लिए श्रेयस्कर है, जो दुःख को दूर करता है और आनंद प्रदान करता है । वही मार्ग आध्यात्मिक मार्ग है, आत्मा का मार्ग है, और वही ध्यान का मार्ग है । जो लोग ध्यान को अधिक महत्व देते हैं ! ध्यान करने में रुचि रखते हैं ! वही वास्तव में बुद्धिमान हैं । अंततः वही आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करके मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं ।

7) मन और इंद्रियों को वश में करना :-

“शरीर रथ है, आत्मा उसका स्वामी है, बुद्धि उस रथ को चलाने वाला सारथी है। मन लगाम है, इंद्रियाँ घोड़े हैं और इंद्रिय विषय उनके मार्ग हैं। जिस व्यक्ति में ग्रहण करने की शक्ति नहीं है! जिसका मन चंचल है, और जिसकी इंद्रियाँ उसके वश में नहीं हैं (जैसे गाड़ी चलाने वाले के उहंड घोड़ों की तरह) वह अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता। वह जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़ जाता है।”

“जिस व्यक्ति में ग्रहण करने की शक्ति है! जिसका मन उसके वश में है ! और जिसकी इंद्रियाँ भी उसके नियंत्रण में है (जैसे गाड़ीवान के अच्छे घोड़े) जो अपनी बुद्धि को मार्गदर्शक मानकर अपने मन को लगाम से थाम सकता है! वह अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। वह विष्णु पद तक पहुँच सकता है।”

विवरण :- जैसे घोड़ा-गाड़ी से यात्रा करने वालों की मंजिल अलग होती है, वैसे ही देह रूपी गाड़ी से जीवन यात्रा करने वाले मनुष्य की भी मंजिल अलग होती है और मनुष्य की मंजिल विष्णु पद है। उस मंजिल तक पहुँचने तक मनुष्य जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसा रहता है। उससे बाहर नहीं निकल सकता। इस प्रकार बार-बार मरते हुए... जन्म लेते हुए... बहुत अधिक दुःख का अनुभव करता रहता है। रोगों से पीड़ित रहते हुए, यह डरते हुए कि कमाया हुआ सब कुछ कहीं खो न जाए, पत्नी-बच्चों के बारे में, धन-संपत्ति के बारे में चिंता करता रहता है। इस प्रकार जन्म से लेकर मृत्यु तक सब कुछ दुःख ही है। ये कष्ट अवश्यंभावी हैं। इसी प्रकार आदि भौतिक, आदि आध्यात्मिक और आदि दैविक ये तीनों तापत्रय अवश्यंभावी हैं। चाहे कितने ही पुण्य कर्म किए हों, कितने ही अच्छे कार्य किए हों, या कितना ही धनवान क्यों न हो जन्म लेने वाले हर किसी को ये चार प्रकार के दुःख अवश्य होते हैं: (1) जन्म दुःख, (2) जरा (बुढ़ापा) दुःख, (3) व्याधि (रोग) दुःख, (4) मृत्यु दुःख।

इसलिए हर किसी को इन सबसे बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए। अन्यथा चाहे कितने ही देवताओं का आश्रय ले लें, जीवन भर पूजा-आराधना करने पर भी कोई लाभ नहीं होता। तो इन सब से बाहर निकलने के लिए मनुष्य जीवन का लक्ष्य विष्णु पद को अवश्य प्राप्त करना ही होगा। उसी को आत्म-साक्षात्कार भी कहते हैं।

उसे प्राप्त करने के लिए बाबा ने कहा है कि मन और इंद्रियों को अपने वश में रखना चाहिए। जिस प्रकार दुष्ट घोड़े होने पर गाड़ी चलाने वाला अपने मंजिल तक नहीं पहुँच सकता ! उसी प्रकार चंचल मन और असंयमित इंद्रियों वाला व्यक्ति भी कभी विष्णु पद रूपी मंजिल तक नहीं पहुँच पाएगा। इसलिए मनुष्य जीवन की मंजिल तक पहुँचने के लिए मन और इंद्रियों का मनुष्य के वश में होना आवश्यक है। आइए देखें कि उन्हें अपने वश में कैसे किया जाए।

इंद्रियाँ अर्थात् पाँच ज्ञानेंद्रियाँ (1)आँख, (2)नाक, (3)कान, (4)जीभ, (5)त्वचा। पाँच कर्मेन्द्रियाँ. (1)मुँह, (2)हाथ, (3)पैर, (4)शिशन (5)गुदा। ये सभी मन के अधीन होती हैं। मन जैसा कहता है, वैसे ही ये काम करती हैं। इसलिए पहले मन को अपने वश में रखना चाहिए। मन को वश में रखने के लिए, और मन की चंचल प्रवृत्ति को दूर करने के लिए एकमात्र मार्ग है स्त्रस्त्रश्वास पर ध्यानस्त्रस्त्र। ध्यान के माध्यम से इसे हम आसानी से हासिल कर सकते हैं। मन को अपने नियंत्रण में रखा जा सकता है।

क्या मन चंचल अवस्था में है? या नहीं? यह आसानी से जान सकता है। जब आप एक बार आँखें बंद करते हैं, तो तुरंत अनेक प्रकार के विचार आने लगते हैं। कुछ समय अतीत से जुड़े विचार आते हैं, कुछ देर भविष्य से जुड़े विचार आते हैं। इस प्रकार मन निरंतर कुछ-न-कुछ सोचता ही रहता है, स्थिर नहीं रहता, इसी को चंचल स्वभाव कहते हैं। इस स्वभाव को ध्यान के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

अर्थात् ध्यान में हम आँखें बंद करते हैं। जैसे ही आँखें बंद करते हैं,

वैसे ही विचार आते हैं। विचार आते ही घबराए बिना, विचारों को रोककर मन को फिर से श्वास पर केंद्रित करना चाहिए। अर्थात् हवा के अंदर जाने और बाहर आने की प्रक्रिया को मन से देखते रहना चाहिए। मन कुछ देर तक ध्यान देता है, फिर दोबारा किसी न किसी विचार में चला जाता है। फिर भी हमें मन को दोबारा श्वास पर केंद्रित करना चाहिए। इस प्रकार निरंतर करते रहने से धीरे-धीरे विचार कम होते जाते हैं। कम होते-होते, हमें जाने बिना सभी विचार एक स्थिति में रुक जाते हैं। जिस स्थिति में सभी विचार रुक जाते हैं वही ध्यान की स्थिति होती है। वही मन के शांत होने की स्थिति है। वही मन की चंचलता के दूर होने की स्थिति है। यही वह स्थिति है जहाँ मन आपके नियंत्रण में आ जाता है।

ऐसी ध्यान की स्थिति में यदि घंटों-घंटों बैठे रहें, तो मन पूरी तरह आपके नियंत्रण में आ जाता है। जब मन आपके नियंत्रण में होता है, तब आपकी इन्द्रियाँ भी आपके वश में आ जाती हैं।

आँखें वही देखती हैं, जो देखने के लिए कहते हैं। मुँह वही ग्रहण करता है, जो दिया जाता है। वाणी नियंत्रण में रहती है। कान वही सुनते हैं, जो सुनने को कहते हैं। नाक उसी गंध को पहचानती है, जिसे सूँघने को कहते हैं। स्पर्श भी नियंत्रण में रहता है। वह केवल एक पत्नी से संतुष्टि रहता है। वह दूसरों को देखकर आकर्षित नहीं होता।

जब ऐसी स्थिति ध्यान के द्वारा प्राप्त हो जाती है, तब जैसे अच्छे घोड़ों के साथ रथी अपनी मंजिल तक आसानी से पहुँच जाता है, वैसे ही मनुष्य भी अपने जीवन की मंजिल विष्णु पद को सरलता से प्राप्त कर सकता है यही बाबा का संदेश है।

8) मन की शुद्धि करना : -

“यदि मनुष्य संसार में अपने कर्तव्यों को संतोषपूर्वक फल-आकांक्षा के बिना पूरा नहीं करता, तो उसका मन शुद्ध नहीं होता। मन शुद्ध हुए बिना, वह आत्म-साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर सकता। शुद्ध मन में

ही विवेक होता है (अर्थात् सत्य और असत्य को पहचानने की शक्ति) । वैराग्य होता है । (असत्य वस्तुओं के प्रति आसक्ति का अभाव) । ये दोनों अंकुरित होकर क्रमशः आत्मसाक्षात्कार की ओर ले जाते हैं । अहंकार समाप्त हुए बिना, लोभ नष्ट हुए बिना, मन की इच्छाओं को छोड़े बिना आत्मसाक्षात्कार की कोई संभावना नहीं होती । देह को 'मैं' मानना एक बड़ा भ्रम है । इस विचार में आसक्ति होना ही बंधन का कारण है । यदि तुम आत्मसाक्षात्कार की कामना करते हो, तो इस अभिमान को छोड़ देना चाहिए । ”

विवरण :- बाबा के संदेश के अनुसार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए पहले मन को पवित्र करना चाहिए । मन को पवित्र करने के लिए मनुष्य को अपने कार्य संतोषपूर्वक तथा फल की अपेक्षा किए बिना करने चाहिए । अर्थात् कोई भी व्यक्ति जो भी काम करे, उसे प्रतिफल की आशा किए बिना निष्काम भाव से करना चाहिए । यानी हर काम बिना इच्छाओं के करना चाहिए । ऐसा नहीं कि मैंने यह पूजा की तो मुझे यह दे दो, यह भजन किया तो मेरी परेशानियाँ दूर कर दो, आरती दी तो मेरी बीमारियाँ ठीक कर दो, नैवेद्य अर्पित किया तो मेरी इच्छाएँ पूरी कर दो । मैंने हुंडी में पैसे डाले मेरा धन बढ़ा दो; ये सब फल की अपेक्षा से किए गए कर्म ही हैं । ऐसा करने से यदि मनचाहा परिणाम नहीं मिलता, तो मनुष्य असंतोष हो जाता है । बाबा का संदेश है कि ये सब बातें मन को शुद्ध नहीं कर सकतीं ।

इसलिए हमें भगवान से कुछ माँगने की आवश्यकता नहीं है । यह समझकर कि “**जो करना चाहिए वो करेंगे तो जो पाना चाहिए वो पाएंगे**” इसलिए “**करने को महत्व देना चाहिए, माँगने को नहीं**।” ऐसा करने से मन भी शुद्ध हो जाता है । इतना ही नहीं “सात्विक शाकाहार और ध्यान” के माध्यम से भी मन को शीघ्र शुद्ध किया जा सकता है । अर्थात् पवित्र किया जा सकता है । ऐसे मन शुद्ध हो जाता है तब उसमें विवेक और वैराग्य उत्पन्न होते हैं । तब यह समझ में आने लगता है कि क्या नित्य है ? क्या अनित्य है ?

अर्थात् क्या रहता है ? क्या माया है ? क्या सत्य है ? और क्या असत्य है ? यह जान पाते हैं । भगवान नित्य हैं और यह दिखाई देने वाली पूरी दुनिया अनित्य ही है यह बात समझ में आ जाती है । तब इस सांसारिक विषयों पर अर्थात् असत्य वस्तुओं के प्रति आसक्ति कम हो जाती है । यानी वैराग्य उत्पन्न हो जाता है । ये सब आत्मसाक्षात्कार की ओर ले जाती हैं ।

इसके अलावा बाबा ने यह भी कहा कि “मैं” का अहंकार छोड़ देना चाहिए, लोभ अर्थात् बिना दिए जमा करने की प्रवृत्ति, इसे भी त्यागना चाहिए, और इनके साथ-साथ इच्छाओं को भी छोड़ देना चाहिए । इनके साथ-साथ विशेष रूप से यह भी कहा कि “यह शरीर ही मैं हूँ” ऐसा भाव नहीं होना चाहिए । शरीर के प्रति आसक्ति छोड़नी चाहिए ऐसा कहा । थोड़ा ध्यान दें तो हर कोई “यह शरीर ही मैं हूँ” इसी भावना के साथ जी रहा है । क्योंकि कोई भी कुछ करे सब कुछ शरीर के लिए ही करता है ! हर समय शरीर का स्वास्थ्य, शरीर की सुंदरता, शरीर की तंदुरुस्ती, शरीर का सुख, शरीर का श्रृंगार और शरीर को दिया जाने वाला आहार । इस तरह शरीर को बहुत अधिक महत्व दे रहे हैं । इस तरह शरीर का पालन-पोषण करने के लिए मुख्य रूप से धन चाहिए । इसी कारण लोग प्रतिदिन अपना अधिकांश समय धन कमाने में ही लगा रहे हैं । इस प्रकार देहभाव में रहते हुए शरीर को ही महत्व देते हुए जैसे जीवन केवल शरीर के लिए ही हो, जैसे वे स्वयं शरीर ही हों ऐसा मानकर लोग जी रहे हैं ।

लेकिन सच्चाई यह है कि ! हम सब आत्मा हैं लेकिन शरीर नहीं । इसलिए देहाभिमान छोड़कर आत्माभिमान बढ़ाना चाहिए । शरीर के बारे में नहीं, आत्मा के बारे में सोचना चाहिए । शरीर के बारे में अध्ययन नहीं, आत्मा के बारे में अध्ययन करना चाहिए । शरीर के लिए साधनाएँ नहीं, आत्मा के लिए साधना करनी चाहिए । ऐसा करने पर ही आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया जा सकता है ।

देह-साधनाएँ तो सभी को पता हैं । वॉकिंग, जॉगिंग, एक्सरसाइज़,

खेल-कूद, योगासन, प्राकृतिक आहार नियम ये सब देह-साधनाएँ ही हैं। लेकिन ध्यान ही एकमात्र आत्म-साधना है। आत्मा को प्राप्त करने के लिए की जाने वाली साधना। इसलिए ध्यान करने वालों में देहाभिमान कम हो जाता है। देहाभिमान जितना कम होता जाता है, उतना ही आत्माभिमान बढ़ता जाता है। ऐसे लोग देह-साधनाओं को छोड़कर आत्म-साधना यानी ध्यान को महत्व देते हैं। अंततः वे आत्मा का साक्षात्कार कर लेते हैं।

9) गुरु की आवश्यकता :-

“आत्मज्ञान बहुत सूक्ष्म और रहस्यमय है। कोई भी व्यक्ति अपनी शक्ति से उसे प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किए हुए दूसरे (गुरु) की सहायता अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि वे स्वयं उस मार्ग पर चल चुके होते हैं, इसलिए वे शिष्य को आध्यात्मिक प्रगति में क्रमशः एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी तक ले जा सकते हैं।”

बाबा जी द्वारा कही गई यह बात भी बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि आत्मज्ञान अत्यंत सूक्ष्म और गूढ़ है ऐसा बाबा ने कहा है। बाबा ने जो कहा उसके अनुसार हम जान सकते हैं कि यह अत्यंत सूक्ष्म से भी अधिक सूक्ष्म है। अर्थात् आत्मा को देखा नहीं जा सकता, मानव इंद्रियों से उसे जाना नहीं जा सकता, आत्मा दिखाई नहीं देती। कानों से सुनी नहीं सकती, मुँह से कही नहीं जा सकती, नाक से ग्रहण नहीं कर सकती और त्वचा से स्पर्श नहीं किया जा सकता। इसलिए बाबा जी ने कहा है कि आत्मा को जानना और आत्मा से संबंधित ज्ञान प्राप्त करना इतना आसान नहीं है। इसलिए इतनी कठिन आत्मा को जानने के लिए, जिनको उसका अनुभव है, अर्थात् आत्मानुभूति प्राप्त लोगों की सहायता और मार्गदर्शन आवश्यक है, ऐसा बाबा ने बताया है।

क्योंकि किसी का भविष्य गुरु के चुनाव पर निर्भर करता है। ऊपर से देखने पर सभी गुरु जैसे ही दिखाई देते हैं, लेकिन असली गुरु कौन है ? यह केवल उनके ज्ञान से ही जाना जा सकता है। यहीं शिष्य को विवेक का उपयोग करना चाहिए। नहीं तो परेशानियाँ अवश्य आती हैं।

बहुत से गुरु शिष्यों को पसंद आने वाले तरीके से बातें करते हैं। ऐसा कहकर वे शिष्यों के माध्यम से अपना लाभ देखते हैं, लेकिन आत्मज्ञान प्राप्त करने का मार्ग नहीं बताते। इसलिए योगी वेमना जी ने ऐसा कहा।

कल्ल गुरुडु कट्टु कर्मचयंबु

मध्यमुण्डु कट्टु मंत्रचयमु

उत्तमुण्डु कट्टु योगसाम्राज्यमु

विश्वदाभिराम विनुर वेमा!

ता : - धोखा देने वाला गुरु पूजा, भजन, अभिषेक, यज्ञ-याग आदि कर्म करवाता है। मध्यम गुरु कान में नाम और मंत्र उपदेश देकर जप करवाता है। लेकिन उत्तम गुरु ध्यान करवाकर योग साम्राज्य रूपी आत्मसाक्षात्कार प्रदान करता है, ऐसा योगी वेमना ने कहा है।

इसलिए अब उत्तम गुरु के विषय में थोड़ा जान लेते हैं।

‘गु’ का अर्थ ‘अज्ञान’, ‘रु’ का अर्थ ‘ज्ञान’। अज्ञान के अंधकार को दूर करके ज्ञान प्रदान करने वाला ही गुरु है। गुरु ज्ञानी होना चाहिए। यहाँ ज्ञान का अर्थ विषयों का ज्ञान नहीं। पांडित्य भी नहीं है। गुरु स्वयं प्रतिभा और स्वप्रज्ञा से युक्त होना चाहिए। गुरु ब्रह्मानुभूति का रस चख चुका होना चाहिए। गुरु अपनी शक्ति से शिष्यों के भव-बंधन काट सकने वाला होना चाहिए।

इतना ही नहीं, किसी भी तात्त्विक विषय को बिना हिचकिचाए, बिना सोचे-विचारे स्पष्ट रूप से समझा सकना चाहिए। हो सकता है कि वह उन बातों को पहले से ना जानता हों। संदर्भ के अनुसार उन्हें स्वयं स्फुरित हो जाती हैं। यही प्रज्ञा-विशेष है। समस्त संशयों को मूल सहित नष्ट करके, मृत्यु-भय को दूर करके, संसार-बंधन से बाहर निकलने का मोक्ष मार्ग दिखा सकना चाहिए। ऐसे लोगों को ही सद्गुरु कहते हैं। या उन्हें परम गुरु कहते हैं।

सत्य ब्रह्म मन से परे होने के बाद ही स्वयं प्रकाशित होता है। मन के द्वारा उसे जाना नहीं जा सकता। ब्रह्म निर्गुण, निरामय और निरंजन है। इसलिए उसे जानने के लिए केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं। प्रज्ञा चाहिए। यह केवल

सद्गुरु के द्वारा ही संभव है। उनके द्वारा दी गई साधना से ही यह संभव होता है। जब साधक 'रूप ध्यान' को छोड़कर 'अरूप स्थिति' में पहुँचकर निर्गुण उपासना करता है और रूपातीत परब्रह्म तत्त्व को ग्रहण करना हो तो! तब गुरु अत्यंत सहायता करते हैं। इसलिए सद्गुरु की शरण लेनी चाहिए ऐसा बाबा ने कहा।

इसलिए गुरु का चुनने से पहले ही शिष्य को सावधान रहना चाहिए। मैं महान हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ, मैं यह कर दूँगा, वह कर दूँगा ऐसा उत्तम गुरु कभी नहीं कहते। कोई भी उत्तम गुरु तुम मेरे शिष्य बनने के लिए नहीं कहता। साधक को ही गुरु का चुनना चाहिए।

10) भगवान की कृपा :-

“यह सबसे अधिक आवश्यक है। भगवान अपनी कृपा के पात्र बने लोगों को विवेक और वैराग्य प्रदान करके, उन्हें सुरक्षित रूप से भवसागर से पार करा सकते हैं। केवल वेदों का अध्ययन करने से भी, मेधा-शक्ति से भी, न ही पुस्तक-ज्ञान से आत्मानुभूति प्राप्त होती है। आत्मा जिसे वरण करती है, वही उसे प्राप्त कर सकता है। ऐसे ही लोगों को आत्मा अपना स्वरूप प्रकट करती है ऐसा कठोपनिषद में कहा गया है।”

विवरण :- बाबा ने विशेष रूप से यह कहा कि चाहे कोई विद्वानों की तरह वेदों का अध्ययन करे, या विद्वानों में भी विद्वान हो, अर्थात वेदों के अर्थ समझा सकने वाली मेधा-शक्ति वाले लोग हों, पुस्तकों को देखके धाराप्रवाह प्रवचन दे सकने वाले हों, एक प्रकार से बाबा ने कहा कि पुस्तकों के माध्यम से भगवान के बारे में कितना भी जान लें फिर भी आत्मानुभूति प्राप्त नहीं होती। उन्होंने आगे यह भी कहा “आत्मा जिसे वरण करती है, वही आत्मा को प्राप्त कर सकता है।” अर्थात “भगवान जिसे पसंद करते हैं, वही भगवान को प्राप्त कर सकते हैं।” अर्थात “जो भगवान को प्रिय होते हैं, वही भगवान तक पहुँच सकते हैं।”

जो लोग अपने-आप को भक्त मानते हैं, उन्हें इस विषय पर बहुत सावधानी से विचार करना चाहिए। क्योंकि बहुत-से लोग कहते रहते हैं, बाबा मुझे बहुत पसंद हैं। लेकिन वे यह नहीं सोचते कि वे बाबा को पसंद हैं ? या नहीं ? लेकिन यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि केवल “उन्हें बाबा पसंद हों इतना काफी नहीं है; बाबा को भी हम पसंद होने चाहिए।” तभी उनका जीवन धन्य हो जाता है। वही बाबा की कृपा के पात्र बनते हैं। ऐसे लोगों में बाबा विवेक और वैराग्य उत्पन्न करके, उन्हें सुरक्षित रूप से भवसागर से अर्थात् इन दुःखों से पार करा सकते हैं और बच निकल सकते हैं, ऐसा कहा गया है।

और सोचिए भक्त तो बहुत होते हैं, लेकिन भगवान को जो प्रिय होते हैं, वही सच्चे भक्त होते हैं। इसीलिए कहा जाता है, मैं बाबा का भक्त हूँ ऐसा सोचने वाले ही महान नहीं होते। बल्कि यह मेरा भक्त है ऐसा बाबा को लगाना चाहिए। वही वास्तव में महान होते हैं। वही सच्चे भक्त होते हैं। तो फिर भगवान को प्रिय बनने के लिए, भगवान की दृष्टि में भक्त बनने के लिए क्या करना चाहिए ? हम ऐसा क्या करें जिससे हम भगवान को प्रिय बन सकते हैं यह जानना चाहिए।

यह विषय बाबा ने अध्याय 16-17 में, पृष्ठ 131 पर बताया है। “मेरा खजाना भरा हुआ है जिसे जो चाहिए, मैं उसे दे सकता हूँ; लेकिन क्या वह उसे ग्रहण करने योग्य है ? या नहीं ? पहले मुझे उसकी परीक्षा करनी होती है। यदि तुम मेरे कहे हुए को ध्यान से सुनोगे, तो निश्चित रूप से लाभ होगा। इस मस्जिद में बैठकर मैं कभी भी असत्य नहीं बोलता।”

इसके आधार पर भगवान कुछ भी दे सकते हैं। लेकिन माँगने वालों को नहीं। मामूली उपहार अर्पित करने वालों को भी नहीं। भगवान से कुछ भी प्राप्त करने के लिए योग्यता अर्थात् पात्रता आवश्यक है। योग्यता प्राप्त किए बिना कितनी भी आराधन कर लें, उसका कोई लाभ नहीं होता। इसलिए कुछ भी प्राप्त करना हो, तो बाबा के बताए अनुसार उसके लिए आवश्यक योग्यता हासिल करनी चाहिए। वही सबसे महत्वपूर्ण है। जो भी उनके शरण में आते

हैं, वे सभी की परीक्षा लेते हैं कि उनमें वह योग्यता है ? या नहीं ? ऐसे लोग ही उन्हें प्राप्त करने के योग्य होते हैं, यह हम बाबा के संदेश से जान सकते हैं। इसलिए हर किसी को यह जानना चाहिए कि जो वह चाहता है उसे पाने के लिए कौन-सी योग्यता हासिल करनी चाहिए। एक बार फिर जान समझ लें। “माँगना महत्वपूर्ण नहीं है। योग्यता महत्वपूर्ण है।” आत्मसाक्षात्कार के लिए भी भगवान की कृपा आवश्यक है। वह कृपा किसे प्राप्त होती है, अर्थात् केवल भगवान के प्रिय होने वालों को ही। और भगवान को कौन प्रिय हैं ? इसके लिए भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भगवान द्वारा कहे गए निम्नलिखित श्लोकों को देखें।

श्लो ॥ चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।

आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ (भ. गी 7-16)

श्लो ॥ तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥ (भ. गी 7-17)

ता : - हे भरतवंश श्रेष्ठ अर्जुन ! संकट में आर्तनाद करने वाले, धन की कामना करने वाले, भगवान को जानने की जिज्ञासा रखने वाले, तथा आत्मज्ञान से युक्त लोग, ऐसे चार प्रकार के लोग मेरी सेवा करते हैं। उनमें 'ज्ञानी' श्रेष्ठ होता है। ऐसे 'ज्ञानी' को मैं प्रिय है। और वह भी मुझे अत्यंत प्रिय है।

उपर्युक्त श्लोकों के अनुसार, चार प्रकार के भक्तों में से कष्ट दूर करने के लिए पूजा-भजन-प्रार्थना करते हुए आर्तनाद करने वाले 'आर्तो' से भी, उसी प्रकार धन-संपत्ति की कामना करने वाले 'अर्थार्थियों' से भी, तथा भगवान को जानने की जिज्ञासा से शास्त्रों का अध्ययन करने वाले 'जिज्ञासुओं' से भी 'ध्यान' के द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला 'ज्ञानी' मुझे अधिक प्रिय है ऐसा भगवान ने कहा है। अर्थात् सभी भक्तों की अपेक्षा ध्यान करने वाला ही मुझे प्रिय है यह बात श्रीकृष्ण भगवान ने स्पष्ट रूप से कही है।

उपरोक्त संदेश के आधार पर हम जान सकते हैं कि भगवान को

केवल 'आत्मज्ञानी' ही प्रिय होते हैं। इसलिए हमें ज्ञान हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। और ज्ञान केवल ध्यान से ही आता है, इसके अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसी कारण बाबा जी ने भी नवविधा भक्तों में नौवीं होने वाली 'आत्मनिवेदन' को ही अपना प्रिय बताया।

इस प्रकार ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक सभी विषयों को, ब्रह्मज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना करने वाले एक धनी भक्त को उद्देशित करते हुए, वहाँ उपस्थित सभी लोगों से बाबा ने यह कहा। इन सभी बातों को विस्तार से उस धनी भक्त को समझाकर, फिर उनके सार को उसे दोबारा (पृष्ठ 130) इस प्रकार बाबा ने बताया। "जब तक तुम अपनी वासनाओं और लालच को पूरी तरह नहीं छोड़ते, तब तक तुम सच्चे ब्रह्म को नहीं देख सकते। जिसका मन धन, संतान और ऐश्वर्य में आसक्त रहता है! वह जब तक अपना अभिमान नहीं छोड़ता, तब तक ब्रह्म को कैसे प्राप्त कर सकता है?"

"अभिमान का भ्रम, धन की ओर दृष्टि (लालसा) दुःख के भँवर के समान है। वह ईर्ष्या, अहंकार रूपी मगरमच्छों से भरा हुआ है। जो इच्छा-रहित होता है, वही इस भँवर को पार कर सकता है। लालच-ब्रह्मज्ञान उत्तर-दक्षिण ध्रुवों जैसे हैं। वे हमेशा के लिए एक-दूसरे के घोर विरोधी हैं।"

बाबा ने और भी इस तरह कहा। (पृष्ठ 131) "जहाँ लालास होती है, वहाँ न तो ब्रह्म के बारे में विचार करने की, न ही उसके ध्यान की जगह रहती है। (ध्यान नहीं कर सकता) तब फिर लालस वाला व्यक्ति वैराग्य और मोक्ष को कैसे प्राप्त कर सकता है? लोभी मनुष्य को न तो संतोष होता है, और न ही दृढ़ निश्चय। उन्होंने कहा कि यदि मन में ज़रा-सी भी लालस हो, तो सारी साधनाएँ अर्थात् सभी आध्यात्मिक प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं।"

बाबा ने और भी इस तरह कहा। "जो फल-अपेक्षा से रहित नहीं

है! जो फल की आकांक्षा नहीं छोड़ता! और जिसे अपने आप से वैराग्य नहीं होता! ऐसा व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा विद्वान. क्यों न हो (चाहे वह कितना ही पढ़ा-लिखा हो, या पंडित ही क्यों न हो) उसका ज्ञान निरर्थक होता है। “जो फल-अपेक्षा से रहित नहीं है! वह आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने में सफल हो सकता, उसका ज्ञान उसकी सहायता नहीं करता।”

बाबा ने और भी इस तरह कहा। “जो लोग अहंकार से भरे रहते हैं और जो सदा इन्द्रिय-विषयों के बारे में ही सोचते रहते हैं, उनके लिए गुरु की शिक्षाएँ निष्प्रयोजन (बेकार) होती हैं। इसलिए मन की पवित्रता प्राप्त करना अत्यंत अनिवार है।”

इस प्रकार बाबा ने आत्म-साक्षात्कार के लिए सिखाई गई बातों को सूक्ष्म रूप से पुनः एक बार समझाकर मन को पवित्र बनाने के लिए कहा। तो मन को पवित्र करने का एकमात्र मार्ग ध्यान है। “अर्थात् श्वास पर ध्यान।” इसलिए जो लोग ध्यान करते हैं, वे बाबा के बताए अनुसार जीवन जीते हैं। और कही हुई सभी बातों को हासिल कर सकते हैं। विशेष रूप से आत्म-साक्षात्कार के लिए ध्यान अत्यंत आवश्यक है ऐसा बाबा ने कहा है। (18-19) अध्यायों में (143वें पृष्ठ पर) बाबा द्वारा कही गई बात को एक बार देखें।

“आत्म-साक्षात्कार के लिए ध्यान आवश्यक है। यदि इसे अभ्यास में लाओ (अर्थात् प्रतिदिन ध्यान करने की आदत डालो), तो सारी वृत्तियाँ शांत हो जाएँगी, सभी इच्छाओं को छोड़कर, निष्कामी बनकर, तुम समस्त जीवों में स्थित भगवान का ध्यान करो। यदि मन एकाग्र हो जाए, तो लक्ष्य सिद्ध हो जाता है। सदा मेरे निराकार स्वरूप का ध्यान करो। वही ज्ञान-स्वरूप है, चेतन्य है, आनंद है।”

उपरोक्त संदेश के अनुसार, बाबा ने कहा कि समस्त जीवों के भीतर स्थित भगवान अर्थात् आत्मा का ध्यान करना चाहिए। इसके साथ ही इस ध्यान को बिना किसी इच्छा के, अर्थात् किसी भी फल की अपेक्षा किए

बिना करना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्य अवश्य सिद्ध होता है। उन्होंने आगे कहा कि अपने निराकार स्वरूप अर्थात् आत्मा का ध्यान करना चाहिए। ऐसी आत्मा का ध्यान करने का मार्ग ही 'श्वास पर ध्यान' केंद्रित करना है। उन्होंने यह भी कहा "यदि तुम यह नहीं कर सकते, तो दिन-रात तुम जो मेरा यह स्वरूप देख रहे हो, उसी का ध्यान करो। ऐसा कुछ दिनों तक करने से तुम्हारी वृत्तियाँ एकाग्र हो जाएँगी।"

बाबा ने कहा कि जिन्हें निराकार स्वरूप का ध्यान करना नहीं आता, वे प्रारंभ में उनके साकार रूप का ध्यान करें। वह भी केवल कुछ दिनों तक ही। ऐसा करते हुए धीरे-धीरे बाबा के निराकार स्वरूप अर्थात् आत्मा का ध्यान करना चाहिए। बाबा ने आगे कहा ऐसा करने से "ध्याता (ध्यान करने वाला), ध्यान और ध्येय (आत्मा) इन तीनों का भेद मिट जाता है, और ध्यान करने वाला चैतन्य (आत्मा) के साथ एकरूप होकर ब्रह्म से अभिन्न हो जाता है।" अर्थात् बाबा में एकरूप हो जाना इसका अर्थ है आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना। यही बात बाबा ने अध्याय 43-44 में, पृष्ठ 323 पर भी कही है।

"जो पूर्ण शरणागति होकर केवल मेरा ही ध्यान करते हैं, उनके प्रति मैं ऋणी हो जाता हूँ। मैं उन्हें मोक्ष प्रदान करके उनका ऋण चुका देता हूँ। जो लोग केवल मेरा ही चिंतन करते हुए मेरे लिए ही दृढ़ संकल्प में रहते हैं, और जो लोग मुझे अर्पित किए बिना (अर्थात् किसी भी जीवित प्राणी को अर्पित किए बिना) नहीं खाते, ऐसे लोगों पर ही मैं आश्रित रहता हूँ। जो कोई भी मेरी सन्निधि में (देह में स्थित आत्मा के पास) आता है, वह नदी के समुद्र में मिल जाने की तरह मुझमें विलीन हो जाता है। इसलिए तुम सब कुछ छोड़कर, तनिक भी अहंकार रखे बिना, अपने हृदय में स्थित मुझसे पूर्ण शरणागति की प्रार्थना करनी चाहिए।"

"मैं कौन हूँ?" मैं से कौन अभिप्रेत है, यह बात साई बाबा ने अनेक बार समझाई है। "उन्होंने कहा मुझे दूँढने के लिए तुम्हें न तो दूर जाने

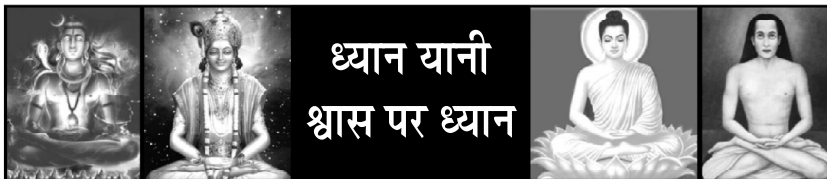
की, न कहीं और जाने की ज़रूरत है। यदि तुम नाम और रूप को छोड़ दो, तो न केवल अपने भीतर, बल्कि सभी जीवों में भी चैतन्य या अंतरात्मा नामक एक ही तत्व होता है। “वही मैं हूँ” इसे तुम समझकर, न केवल अपने भीतर, बल्कि सब में मुझे देखो। यदि तुम इसका अभ्यास करोगे, तो सर्वव्यापकता का अनुभव करके मुझमें एकाकर हो जाओगे।”

निराकार स्वभाव वाली आत्मा का ध्यान करना चाहने वाले, यदि ‘श्वास पर ध्यान’ रखें, तो आसानी से विचारों को कम कर सकते हैं। मन को शून्य कर सकते हैं। मन से परे आत्मिक स्थिति तक पहुँच जाते हैं।

इसलिए हर कोई ध्यान करे। बाबा के मंदिरों में स्थित ध्यान मंदिरों का उपयोग करें। अधिक समय बाबा (आत्मा) पर ध्यान रखें। दुःख से केवल अस्थायी रूप से नहीं, बल्कि स्थायी रूप से बाहर निकलें।

एक बार फिर याद रखें

“बाबा जहाँ कहीं भी मैं कहते हैं,
वहाँ तुरंत जानना चाहिए कि उसका अर्थ आत्मा है।”





ईशावास्य उपनिषद्!

- बाबा की व्याख्या!

ईशावास्य उपनिषद् के एक वाक्य का सही अर्थ समझ में न आने पर जब शिष्य इधर-उधर भटक रहे थे! तब बाबा ने उस पर अब्दुत ढंग से व्याख्या की। आइए उसे एक बार देखते

हैं।

श्लो ॥ ईशावास्यमिदं सत्यं यत्किंचित जगत्यां जगत।

ता :- अखिल ब्रह्मांड में स्थित जड़ और चेतन स्वरूप सब कुछ ईश्वर से व्याप्त हैं।

अर्थात् पूरी सृष्टि में जड़ अर्थात् जिसमें गति नहीं होती, चेतन अर्थात् जिसमें गति होती है ऐसे सभी रूप, उस परब्रह्म से ही व्याप्त हैं ऐसा बाबा ने समझाया।

इसी को भगवद्गीता में

श्लो ॥ मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।

मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ (भ. गी. 9-4)

ता ॥ मैं अपने अव्यक्त स्वरूप से इस पूरे जगत में व्याप्त हूँ। समस्त प्राणिकोटियाँ मुझमें स्थित हैं। वे मेरे लिए आधारित नहीं हैं।

बाबा ने आगे कहा कि इस ईशावास्य उपनिषद् का शांति मंत्र भी इसी बात का उपदेश देता है। उसी बात को श्री कृष्ण ने भगवद्गीता में भी कहा है, ऐसा उन्होंने बताया।

श्लो ॥ ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ता ॥ यह परब्रह्म पूर्ण ही। यह जगत भी पूर्ण ही। पूर्ण परब्रह्म से यह पूर्ण जगत उत्पन्न हुआ है। इसलिए पूर्ण परब्रह्म से पूर्ण जगत की कल्पना

निकाल देने पर भी पूर्ण परब्रह्म ही शेष रहता है, ऐसा कहते हुए बाबा ने इस प्रकार समझाया।

इनका अर्थ है सब कुछ ब्रह्म ही है। सभी में जो विद्यमान है, वही ब्रह्म है। इसलिए मैं और मेरा की भावना को पूरी तरह से छोड़ देना चाहिए। किसी भी चीज पर प्रति आसक्ति नहीं बढ़ानी चाहिए। ऐसा कहते हुए बाबा ने बताया कि सब कुछ परब्रह्म का ही है। इसलिए किसी को जो भी मिले! या जो कुछ भी उसके पास हो! उसे यह जानना चाहिए कि वह ईश्वर से ही प्राप्त हुआ है।

इसलिए ईश्वर से प्राप्त होने वाले ऐश्वर्य को त्यागपूर्वक अनुभव करना चाहिए, और बाँटना चाहिए। शिरडी बाबा ने यह समझाया कि किसी भी प्रकार का लोभ और मोह नहीं रखना चाहिए। ऐसा कहते हुए उन्होंने ईशावास्य उपनिषद के निम्नलिखित श्लोक का उल्लेख किया।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम॥ (ओ 81-97)

इसी प्रकार भगवद्गीता के निम्नलिखित श्लोक की भी व्याख्या की।
श्लो॥ समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।

विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति॥ (भ. गी.13-28)

ता॥ परमेश्वर सभी प्राणियों के अन्तःकरण में समान रूप से स्थित है। उन प्राणियों के शरीर आदि नष्ट हो जाएँ, फिर भी जो उसे नाशरहित रूप में देखता है वही वास्तव में देखने वाला है।

इसके आधार पर मनुष्य को जो कुछ भी प्राप्त हुआ है, उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। इस सृष्टि से जिसे जो कुछ भी प्राप्त हो, उसे यह समझना चाहिए कि वह सबके द्वारा, सबके लिए है। उसे सबके साथ बाँटना चाहिए, जमा करके नहीं रखना चाहिए यही बाबा का संदेश है। लेकिन संसार में मनुष्य अपने पास जो है, उसे बाँटे बिना केवल जमा ही नहीं करते, लूटते हुए भी और-और देने की बाबा से प्रार्थना कर रहे हैं, भजन कर रहे हैं। बाबा ने जो कहते हैं वह एक है, और भक्त जो करते हैं वह कुछ और ही है।

इसलिए सबके जीवन ऐसे ही हो गए हैं। इसीलिए सबके जीवन ऐसे ही हैं। इसलिए यदि कोई भी लाभ चाहता है, उसे बाबा के संदेश को समझकर उसी के व्यवहार करना चाहिए। इस सृष्टि में सभी एक ही हैं! सब कुछ एक ही है! यह जानना चाहिए कि सब कुछ उसी परब्रह्म का ही स्वरूप है। आखिर में जानवर भी उसी के स्वरूप है, इसलिए जीव-हिंसा नहीं करनी चाहिए। मांस भक्षण नहीं करना चाहिए, चाहना नहीं करनी चाहिए। जो मिला है उसी में संतोष रखना चाहिए, बाँटना चाहिए।

ऐसा करने से ही बाबा की कही हुई बात समझी हुई मानी जाएगी। जो उनसे प्यार करते हैं, उन्हें उनके कहे अनुसार चलना चाहिए। ऐसे लोग ही उन्हें पसंद आएँगे।

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

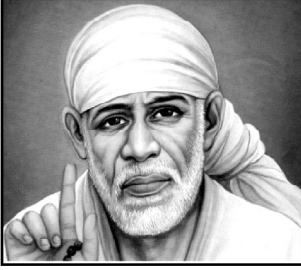
This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs. Tatavarthy videos.



“सबका मालिक एक है”

शिरडी बाबा ने यह वाक्य बार-बार कहते रहते थे। महानुभाव जो भी बात कहते हैं, उसमें बहुत अर्थ होता है। गूढ़ अर्थ होता है। महान बात को छोटे से वाक्य में कहते हैं। विशेष बात को सूक्ष्म रूप में कहते हैं। इस प्रकार उन्होंने जो बात सूक्ष्म रूप में कही है, उसका विशेष अर्थ समझकर आचरण करने वाले धन्य हैं।

“सबका मालिक एक है” यानी “सब कुछ यानी सबके लिए, हर चीज़ के लिए मालिक एक ही है!” अर्थात् “अखिल ब्रह्मांड के जड़, चेतन सभी स्वरूप यानी इस सृष्टि के चर, अचर सभी के लिए मालिक एक ही हैं!”

स्वाभाविक रूप से मालिक किसे कहते हैं? जिसने कोई वस्तु बनाई हो, सृजन किया हो, वही उसका मालिक कहलाता है। अगर कोई घर बनवाता है, तो वही उसका मालिक होता है। तब सब लोग कहते हैं, अरे वही तो उस घर का मालिक है! इसी प्रकार यदि कोई व्यापारिक संस्था स्थापित करता है, तो उसे उसका मालिक कह जाता है। इसी प्रकार अगर कोई इंडस्ट्री की स्थापना किया, तो अगर कोई एस्टेट स्थापित करे तो, और उन्हें बनवाया तो, वह उनका मालिक कहलाता है। इसी प्रकार यदि कोई एक राज्य की स्थापना करता है, तो वह उस राज्य का मालिक होता है। उसे राजा भी कहा जाता है।

इस तरह कोई भी जो कुछ भी बनाता है, यानी निर्माण करता है, स्थापित करता है या व्यवस्था करता है उन सबका वही मालिक होता है।

उसी तरह इस अखिल ब्रह्मांड रूपी अनंत सृष्टि को बनाने वाला और रचने वाला केवल एक ही है। अर्थात् यह जानना चाहिए कि इन सबका मालिक केवल एक ही है।

इसका कारण यह है कि इस सृष्टि में कुछ चीजें बहुत से लोग मिलकर बनाते हैं। कुछ को बहुत-से लोग मिलकर बनाते हैं। अर्थात् एक

चीज को बहुत-से मालिक होते हैं। लेकिन इस समस्त सृष्टि का मालिक केवल एक ही है! मालिक एक ही है! ऐसा शिरडी साई बाबा ने कहा।

इस अखिल ब्रह्मांड रूपी सृष्टि को रचने वाले उस मालिक को सभी लोग अलग-अलग तरीकों से बुलाते हैं। मुसलमान उसे 'अल्लाह' कहते हैं, ईसाई उसे 'पिता' कहते हैं, और हिंदू 'भगवान', 'सृष्टिकर्ता', 'परब्रह्म', 'परमात्मा', 'ईश्वर', 'विश्वात्मा', 'आदिशक्ति' आदि इस तरह अलग-अलग नामों से बुलाते हैं। वैसे भी हो जैसा बाबा ने कहा इस पूरी सृष्टि का मालिक केवल एक ही है। यह बात हर किसी को जाननी चाहिए, समझनी चाहिए और याद रखनी चाहिए।

अर्थात् इस सृष्टि में आँखों से दिखाई देने वाली चीजें भी हैं और न दिखाई देने वाली भी। वे चाहे जो भी हों सबका मालिक केवल भगवान ही है। अर्थात् दिखाई देने वाले लोक, न दिखाई देने वाले लोक, चौरासी लाख प्रकार के जीव, जीव-राशियाँ। एक शब्द में कहें तो इस सृष्टि में जो कुछ भी सृजित किया जाता है! और जो कुछ भी लय हो रहा है! सबका मालिक केवल भगवान ही है।

वही इस सृष्टि में महान है। वास्तव में वही अस्तित्व है। उसी से सब कुछ सृजित हुआ है। आखिर में लोग जिन देवताओं को मानते हैं, वे भी उसी से उत्पन्न हुए हैं! अर्थात् सभी का मालिक भी वही है और पिता भी वही है। इसीलिए यीशु कहते हैं मेरे पिता का राज्य। एक तरह से देखें तो अलग कुछ भी नहीं है। इसलिए हर किसी का कर्तव्य यही है कि वह इस सत्य को जानना चाहिए, समझना चाहिए। ऐसे लोगों के लिए सब आनंद ही है, सब शांति ही है।

क्योंकि 'मैं' नाम की कोई वस्तु नहीं है; 'मैं' होने पर ही भेद उत्पन्न होता है। जब 'मैं' ही नहीं रहता, तो फिर क्या रहता है?

सब कुछ दैव ही है, सब कुछ ब्रह्म ही है, सब कुछ भगवान ही है यही मुक्त स्थिति है। इसी विषय को शिरडी बाबा जानने के लिए बताते रहे हैं। वही मार्ग है "श्वास पर ध्यान लगाना"। ध्यान के माध्यम से कोई भी "सबका मालिक एक है" इस सत्य को समझ सकते हैं।



परि प्रश्न ?

- बाबा की व्याख्या

बहुत-से लोग प्रश्न पूछते रहते हैं। ऐसे प्रश्न पूछने के कई कारण होते हैं। कुछ लोग यूँ ही प्रश्न पूछते रहते हैं। और कुछ लोग दूसरों की गलतियाँ पकड़ने के लिए, उनके दोष

दिखाने के लिए प्रश्न करते रहते हैं। और कुछ लोग दस लोगों के बीच खुद को बड़ा दिखाने के लिए प्रश्न पूछते रहते हैं। और कुछ लोग मुझे सब कुछ पता है यह दिखाने के लिए, प्रश्न करते रहते हैं। और कुछ लोग दुष्ट बुद्धि से, कपट से सामने वाले को टोकरी में डालने के लिए, यह साबित करने के लिए कि उसे कुछ नहीं आता, और दस लोगों के बीच उसे छोटा दिखाने के लिए प्रश्न करते रहते हैं। कुछ लोग सामने वाले की परीक्षा लेने के लिए प्रश्न पूछते रहते हैं।

बस इतना ही जानने के लिए नहीं। इस प्रकार वही प्रश्न आने वाले हर किसी से पूछते रहते हैं। यदि सच में संदेह हो, तो इतने लोगों से वही प्रश्न पूछने की आवश्यकता है क्या ?

और कुछ लोग प्रश्न पूछकर, सामने वाला उत्तर दें तो यह नहीं है कहकर उनसे बहस करने लगते हैं। जो सच में न जानने वाली बात जानना चाहते हैं, वे बहस नहीं करते, बहस में नहीं पड़ते। वे बताए गए उत्तर से संतुष्ट हो जाते हैं। यदि तुमने जो कहा उसे गलत कहा, तो क्या अर्थ यह है नहीं कि उसका उत्तर तुम्हें नहीं पता ऐसा कहने जैसा नहीं है क्या, ? अगर ऊपर से उसने नहीं कहा तो इसका जवाब उसे पता ही है, है ना ? नहीं तो वह ना कैसे कह सकता है ? मतलब सामने वाले की परीक्षा लेने के लिए ही, है न ? वह कैसे बताएगा यह देखने के लिए ही, है न ? बस इतना ही सच में कोई संदेह नहीं है, जानने के लिए नहीं है, अज्ञान से नहीं है।

ऐसे लोगों के प्रश्नों का ज्ञानी, ज्ञानी उत्तर नहीं देते। बताने की प्रयास नहीं करते। कारण यह है कि वे अनावश्यक बहस में नहीं पड़ते। वे मूर्खों से वाद नहीं करते। वे उनके पूछे गए प्रश्न से ही उन्हें समझ लेते हैं। उसी के अनुसार उनका व्यवहार और उत्तर होता है।

इसी तरह कुछ लोग सुनने में आसक्ति नहीं दिखाते। वे केवल पूछने में ही आसक्ति दिखाते हैं। वे बोलने वालों को बोलने नहीं देते। और बिना संदर्भ के प्रश्न पूछते रहते हैं। दिए जा रहे संदेश के विपरीत प्रश्न पूछते रहते हैं। कुछ और लोग प्रश्न पूछते हुए भ्रम पैदा करते हैं। वास्तव में सभा को सुचारु रूप से चलने ही नहीं देते। कुछ और लोग भाषण को पूरा नहीं होने देते, पूरी तरह सुनते नहीं हैं, और बीच में ही प्रश्न पूछते रहते हैं। यदि वास्तव में भाषण को पूरा सुनें, तो उसी भाषण में उनके प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं। इसी तरह कुछ लोग प्रवचन करते समय वे अलग दृष्टिकोण में रहते हैं, ठीक से नहीं सुनते। और कुछ लोग बीच में आते हैं। ऐसा करते हुए कही गई बातों के बारे में ही प्रश्न पूछते रहते हैं।

और कुछ लोग कहीं कुछ न कुछ सुन लेते हैं। यहाँ जब आप बता रहे होते हैं कही गई बात के बारे में विश्लेषण नहीं करते। सोचते नहीं हैं। लेकिन वहाँ उन्होंने ऐसा क्यों कहा? ऐसा पूछते हैं। और कुछ लोग आपने जो कहा वह सही ही है, लेकिन फिर भी पूछते हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा? लेकिन तुमने ऐसा क्यों कहा? जबकि जिन्होंने ऐसा कहा उनसे वे पूछते ही नहीं है।

इस तरह कहते जाएँ तो प्रश्न पूछने वालों में तरह-तरह के लोग होते हैं। तरह-तरह के उद्देश्यों से प्रश्न पूछने वाले लोग होते हैं।

लेकिन प्रश्न कैसे पूछना चाहिए? किस प्रकार के प्रश्न पूछने चाहिए? किस संदर्भ में पूछने चाहिए? प्रश्न पूछते समय सामने वाले को कितना सम्मान से देखना चाहिए? इस पर नहीं सोचते। वास्तव में कही गई बात पसंद न भी आए तो भी! गलत लग रहा हो तब भी जो विवेकवान होता

हैं, वह नहीं सुनता, आलोचना नहीं करता। वहाँ बैठता नहीं, धीरे-धीरे वहाँ से निकल जाता है।

कारण कहने वाले सभी लोग एक ही स्तर के नहीं होते। एक ही तरह का ज्ञान से युक्त नहीं होते यह बात विवेकवानों को पता होती है। किसके स्तर पर, अपने स्तर के अनुसार, जिसे कितना पता हो उतना ही बताते हैं विवेकवान यानी बुद्धिमान व्यक्ति यह समझता है। इसीलिए बहस में नहीं पड़ते। बहस नहीं करते। बुद्धिमान व्यक्ति पसंद आए तो सुनता है, पसंद न आए तो निकल जाता है। आवश्यकता लगे तो जो पसंद आए वही लेता है, बाकी सब छोड़ देता है। अगर जो भी पसंद न आए, तो जो कुछ पूरी तरह कहा गया हो वहीं छोड़ देता है। भूल जाता है। कारण इस संसार में कभी भी! कोई भी व्यक्ति! एक ही प्रकार से नहीं कहते, उसे जो चाहिए वही नहीं कहते। उसे पसंद के अनुसार नहीं कहते। क्योंकि सबका ज्ञान एक ही स्तर का नहीं होता, इसलिए। इसलिए प्रश्न पूछते समय कोई भी ऊपर के सभी विषयों को याद रखना चाहिए।

इसी तरह एक संदर्भ में शिरडी बाबा ने एक शिष्य को विस्तार से बताया गया कि प्रश्न कैसे पूछने चाहिए? किस संदर्भ में पूछने चाहिए? और किन विषयों के बारे में प्रश्न पूछने चाहिए? उसी विषय को 39वें अध्याय में, पृष्ठ 293-294 में विस्तार से समझाया गया है।

एक दिन बाबा ने अपने शिष्य नाना साहेब चाँदोरकर को इस विषय में बहुत स्पष्ट रूप से समझाया। नाना ने भगवद्गीता में एक श्लोक के बारे में पूछा किया, तब बाबा ने उसे बहुत सुंदर तरीके से समझाया।

श्लो॥ तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥ (भ. गी.4-34)

ता॥ (हे अर्जुन!) ऐसे ज्ञान को तुम तत्त्ववेत्ता ज्ञानियों को (जो मोक्षदायक ज्ञान के धारक हैं अर्थात् परब्रह्म को जानने वालों को) साष्टांग नमस्कार करके, उचित समय देखकर विनम्रता से प्रश्न करके तथा सेवा

करके उनसे जान लो। वे अवश्य उपदेश कर सकते हैं।

शिरडी बाबा ने उपरोक्त तात्पर्य का अंतरार्थ नाना साहेब को इस प्रकार समझाया।

1) केवल ज्ञानियों के सामने केवल साष्टांग नमस्कार करने पर पर्याप्त नहीं होता। सद्गुरु को सर्वस्व शरणागति करनी चाहिए।

2) यूँ ही प्रश्न पूछने भी काफी नहीं होता। दुर्बुद्धि से, कपटपूर्वक, उन्हें टोकरी में डालने के लिए, उनकी गलतियाँ पकड़ने के लिए, बेकार की उत्सुकता से भी, नहीं पूछना चाहिए। मोक्ष प्राप्त करने के लिए, आध्यात्मिक विकास के लिए, वास्तव में जानने की पूछना चाहिए।

3) सेवा का अर्थ इच्छा हो तो किया जा सकता है। न हो तो छोड़ दे सकते हैं, इस भावना से की गई क्रिया सेवा नहीं होती। यह शरीर मेरा नहीं है, वह धन का मालिक नहीं हूँ, यह शरीर गुरुजी का है, और यह शरीर उनकी सेवा के लिए मिला है, भाव रखना चाहिए। ऐसा करने पर सद्गुरु ज्ञान का उपदेश देते हैं।

इसी प्रकार बाबा ने ज्ञान का अर्थ क्या है? उसे कैसे सिखाया जाना चाहिए, यह भी बताया।

“अज्ञान को नष्ट करना ही ज्ञान है” ऐसा कहा। “अंधकार को दूर करना ही प्रकाश है।” द्वैत को नष्ट करना ही अद्वैत है। “द्वैत को नष्ट करना अर्थात् अद्वैत का उपदेश देना, और अंधकार को दूर करना अर्थात् प्रकाश के बारे में बताना।”

अद्वैत को प्राप्त करने के लिए मन से द्वैत की भावना को निकाल देना चाहिए। यही अद्वैत को प्राप्त करने का ज्ञान है।

सद्गुरु निर्गुण हैं, सच्चिदानंद स्वरूप हैं। उनका मानव आकार में अवतरण होना जगत को, मानवता को उद्धार के लिए ही। ऐसा मानव रूप धारण करने के वजह से उनके निर्गुण स्वभाव ज़रा-सा भी विकार नहीं होता। उनका सत्य स्वरूप, दिव्य शक्ति और ज्ञान घटता नहीं है। शिष्य भी वैसा ही

हैं लेकिन उसके अनेक जन्मों का अज्ञान के वजह से यह बात ढक डालती है कि वही शुद्ध चैतन्य (दैव) है। शिष्य सोचता है “मैं एक साधारण निकृष्ट जीव हूँ।”

गुरु को इस अज्ञान को जड़ से मिटा देना चाहिए। उसके लिए उपयुक्त उपदेश देना चाहिए। शिष्य ने असंख्य जन्मों से हासिल किया हुआ अज्ञान को गुरु निर्मूल करके उपदेश देना चाहिए।

“कई जन्मों से खुद को तुच्छ जीव मानने वाले शिष्य को गुरु ‘तुम ही दैव हो, शक्तिसंपन्न हो, ऐश्वर्यशाली हो’ ऐसा उपदेश देना चाहिए। “तब शिष्य धीरे-धीरे यह अनुभव करता है कि वही दैव है” ऐसा शिरडी साई बाबा ने नाना साहेब से कहा।

उन्होंने आगे इस प्रकार कहा। “शिष्य का यह सोचना कि वह शरीर है, वह एक जीव है, यह संसार और भगवान उससे अलग हैं यह अनेक जन्मों से चला आ रहा दोष ही है, लेकिन अलग कुछ नहीं। “ऐसा सोचते हुए किए गए कर्मों के कारण उसे सुख और दुःख मिलता है। इन दोनों का मिश्रण होता है ऐसा बाबा ने कहा।”

शिष्य को इस भ्रम, इस दोष और इस मूल अज्ञान के बारे में विचार करना शुरू करना चाहिए ऐसा उन्होंने कहा। “असल में यह अज्ञान कैसे अंकुरित हुआ? यह कहाँ है? इसी को दिखाना ही गुरुपदेश कहलाता है।” ऐसा कहते हुए बाबा ने बताया कि नीचे बताए गए सभी अज्ञान के लक्षण हैं।

- 1) मैं जीव हूँ (प्राणी हूँ)।
- 2) मैं शरीर हूँ।
- 3) भगवान, संसार और जीव अलग-अलग हैं।
- 4) मैं भगवान नहीं हूँ।
- 5) शरीर आत्मा नहीं है यह न जानना।
- 6) भगवान, जीव और संसार सब एक ही हैं ऐसा न जानना।

यदि ये सभी गलतियाँ दिखाई न जाएँ, तो शिष्य को इन विषयों को नहीं जान पाएगा कि ईश्वर क्या है ? संसार क्या है ? शरीर क्या है ? उनके बीच में क्या संबंध है ? वास्तव में एक और दूसरे में कोई अंतर है ? या दोनों एक ही हैं, यह बात समझ नहीं पाएगा। इन सभी बातों को समझाकर उनके अज्ञान को नष्ट करने के लिए जो कुछ कहा जाता है, क्या ज्ञान हो जाता है ? क्या या अज्ञान हो जाता है ? वास्तव में यदि जीव ज्ञानमूर्ति होता है, तो ज्ञान का उपदेश करने की आवश्यकता नहीं रहेगी, है न ? ऐसा कहते हुए बाबा ने बताया कि “उपदेश का अर्थ यही है कि उसकी गलती उसे दिखाकर उसका अज्ञान नष्ट करना ही है।”

उन्होंने आगे यह भी कहा कि प्रणिपात का अर्थ शरणागति है अर्थात् शरीर, मन और धन को अर्पित करना।

ऐसा अज्ञान को दूर करने के लिए, ज्ञान प्राप्त करने के लिए इतने समर्थ गुरुओं को आसक्ति से, उचित समय देखकर, संदर्भ के अनुसार पूछना चाहिए ऐसा शिरडी बाबा ने नाना साहेब को समझाया।

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

प्रिय भगवान को पीड़ा दे सकते हैं क्या ?

बहुत से लोगों को शिरडी साई बाबा बहुत प्रिय हैं। कारण उनका विश्वास है कि बाबा उनकी इच्छाएँ पूरी करने वाला है, उनके दुःख-कष्ट दूर कर देता हैं। उनका विश्वास है कि यदि वे उनकी आराधना करें तो, पूजा करें तो, आश्रय लें, तो उनके कष्ट दूर हो जाएँगे। इसीलिए वे उन्हें बहुत प्रिय मानते हैं।

इतना ही नहीं वे उनकी महिमाओं और लीलाओं का भी वर्णन कहते रहते हैं। उनके जीवित रहते भक्तों की सहायता करने की बातें, कष्टों से बचाने की घटनाएँ कहानियों के रूप में कहते रहते हैं। इसलिए उनका विश्वास है कि यदि वे उनका आश्रय लें, तो बाबा उन्हें भी उसी प्रकार बचाएगा, रक्षा करेगा।

ऐसी बातें कुछ बाबा सच्चरित्र में भी बताई गई हैं। उसमें उनका एक भक्त गंभीर बीमारी से, भयानक खाँसी से पीड़ित रहता है। वह भक्त इस पीड़ा से बचाने के लिए बाबा से विनती करता है, प्रार्थना करता है। तब बाबा ने करुणा करके उस भक्त की पुकार सुनकर उसकी बीमारी को, खाँसी को कम कर देते हैं। लेकिन उसी समय वही पीड़ा को बाबा अनुभव करते रहते हैं। अर्थात् बाबा उस भक्त की बीमारी खुद लेकर और वह पीड़ा स्वयं अनुभव करते हुए भक्त का पीड़ा कम कर देते हैं। यहाँ भक्त आनंद में मग्न हो गया। लेकिन वह पीड़ा बाबा को अनुभव करना पड़ा।

यदि हम यहाँ थोड़ा सोचें, तो समझ में आता है कि इस सृष्टि में किसी एक का दुःख दूर करना हो, तो किसी दूसरे को उसे अनुभव करना ही पड़ता है। अर्थात् यह समझ में आता है कि भगवान होकर भी उस पीड़ा को अपने ऊपर न लें भक्त की पीड़ा कम नहीं कर सकते।

यहीं भक्तों को सोचना चाहिए। वे अपनी पीड़ा दूर करने को भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं, उनकी आराधना कर रहे हैं। अर्थात् एक प्रकार से उस पीड़ा को तुम ले लो ऐसा मांग रहे हैं, है न? यह भक्त के लिए कहाँ तक उचित है? अपनी पीड़ा दूर करवाने के लिए अपने प्रिय भगवान से उस पीड़ा

को अनुभव करने को कहना क्या यह उचित है ? क्या कोई अपने प्रिय भगवान को दुःख पहुँचा सकता है ? वे अनुभव न कर पाने वाला वही बात भगवान को अनुभव करने के लिए कहना यह कहाँ तक उचित है ? क्या वह अपने प्रिय भगवान को दुःख पहुँचाना, कष्ट पहुँचाना ही वह करता है ? वह चाहता है ?

एक सच्चा भक्त भगवान को खुश करना देखता है, लेकिन वह उन्हें दुःख पहुँचाने वाला कोई काम नहीं करता। जो भगवान को दुःख पहुँचाता है, वह भक्त कैसे हो सकता है ? सच्चा भक्त स्वयं कष्ट सह लेता है, लेकिन मेरी पीड़ा लेकर तुम दुःख सहो ऐसा नहीं चाहता। इसलिए सोचिए! क्या अपने प्रिय भगवान को दुःख पहुँचा सकते हो ?

ऐसा कहीं तो अब हमें क्या करना चाहिए ? हमारी पीड़ा कैसे दूर जाएगी ? ऐसा पूछ सकते हैं। पर ज़रा सोचिए **पीड़ा कैसे दूर जाएगी, पूछ रहे हैं, लेकिन यह नहीं सोचते कि वह पीड़ा आया कैसे ? पहले इसी पर विचार करना चाहिए।** वास्तव में वह पीड़ा जीवन में आए ही न, तो! उसे दूर करने के लिए माँगने की आवश्यकता नहीं है, है ना! अपने प्रिय भगवान को पीड़ा देने की कोई जरूरत नहीं है, है ना ?

तो फिर वह पीड़ा क्यों आई ? वह हमारे द्वारा अतीत में किए गए पापकर्मों के कारण ही आई है। हमने अतीत में पापकर्म किए हैं, किसी को दुःख पहुँचाया है अब अनुभव कर रहे हैं।

इसीलिए शास्त्र बता रहे हैं। **“पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण पीड्यते!”**

तो फिर सोचिए यदि हम पाप नहीं करेंगे, तो दुःख होंगे ही नहीं, है ना ? तब अपने प्रिय भगवान से अपनी पीड़ा लेने के लिए कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी, है ना ? उन्हें दुःख देने की कोई जरूरत नहीं है ना ? इसके आधार पर अपने प्रिय भगवान को दुःख नहीं पहुँचाना चाहते हैं, तो हमें पाप नहीं करने चाहिए। अर्थात् किसी को भी दुःख नहीं पहुँचाना चाहिए, किसी पर हिंसा नहीं करनी चाहिए।

इसलिए वास्तव में पाप क्या है ? क्या करने से पाप होता है ? इन

बातों को जानना चाहिए। इस सृष्टि में किसी भी जीव को यानी चाहे मनुष्यों को हो या पशुओं को भी हमारी वजह से कष्ट, नुकसान या दुःख पहुँचाएँ, तो उसे पाप कहा जाता है। उसी को हिंसा भी कहा जाता है। अर्थात् हिंसा करना ही पाप है। ऐसा अपने द्वारा की गई हिंसा ही उसका रोग बन जाती है। तो फिर हिंसा क्यों करनी है ? और हिंसा क्यों सहनी है ?

इसलिए कीचड़ को रौंदना क्यों पैरों को धोना क्यों ऐसा कहते हैं। कीचड़ को क्यों रौंदें ? पैरों को क्यों धोएँ ? पाप क्यों करें ? दुःख दूर करने की प्रार्थना क्यों करें ? ज़रा सोचिए। अपने प्रिय भगवानों को दुःख मत पहुँचाइए। वे हमें प्रिय हैं कहकर उन्हें कष्ट देना हमारा धर्म नहीं है।

अगर वास्तव में हम किसी को कष्ट न पहुँचाएँ तो हमें भी कष्ट नहीं आएगा, है ना ? इसलिए जीव हिंसा मत कीजिए। मांस भक्षण छोड़िए, सबको प्रेम कीजिए। भगवान के लिए सभी समान हैं सभी उसी के रूप हैं, सभी उसी की संतान हैं। किसी को भी हिंसा करें तो, भगवान पर ही हिंसा करने जैसा है यह जान लीजिए। आपकी पीड़ा आपको कैसी लगती है उनकी पीड़ा भी उन्हें वैसी ही होती है यह जान लीजिए। जिस पीड़ा को आप स्वयं सहन नहीं कर सकते, क्या वे सहन कर सकते हैं ? जब आप अपने प्रिय भगवान से प्रार्थना करते हैं, तो जिन्हें कष्ट हो रहा है क्या वे भगवान से प्रार्थना नहीं करते ? उनके लिए भी वही ईश्वर है, है ना ?

और ज़रा एक बार सोचिए। मान लीजिए बाबा ही स्वयं आपकी पीड़ा अपने ऊपर ले लिया हो। क्या कम से कम अब से किसी को दुःख नहीं पहुँचाएँगे ? पाप नहीं करेंगे ? जानवरों को नहीं मारेंगे ? मांस भक्षण छोड़ देंगे ? नहीं छोड़ेंगे ना ! असल में हिंसा छोड़े बिना ही अपने दुःख को दूर करने की कहने का अधिकार हमें कहाँ से मिला है ? ऐसा हिंसा करते हुए अगर हम ऐसे ही दुख लाते रहते हों तो, तो क्या बाबा उन्हें दूर करते हुए और स्वयं सहते रहेंगे क्या ? ? क्या यही बाबा का काम है ? असल में बाबा कितने लोगों की पीड़ाएँ अनुभव कर सकता है ? हम तो अपनी ही पीड़ा अनुभव न कर पाकर प्रार्थना कर रहे हैं ! फिर इतने लोगों की, हज़ारों लोगों की, लाखों लोगों की

पीड़ाएँ बाबा सह पाएँगे ? यदि बाबा सबका दुःख अपने ऊपर ले लें, तो उनकी स्थिति क्या होगी ? किसी एक की पीड़ा तो सहन की जा सकती है, लेकिन सबकी पीड़ा कैसे सहन की जाएगी ?

और भी सोचिए जब बाबा जीवित थे, अर्थात् शरीर के साथ थे, तब भक्त के शारीरिक पीड़ा को अपने ही शरीर से अनुभव करते थे। लेकिन अब बाबा के पास शरीर तो है नहीं फिर वह कैसे लेगा ? कैसे अनुभव करेगा ? क्या यह संभव है ? यह अवसर अब बाबा के पास नहीं है, है न ? इसलिए हर किसी को अपना-अपना दुःख स्वयं ही अनुभव करना पड़ता है। बाबा हैं, हमारे दुःख दूर कर देंगे ऐसा सोचकर अगर हम हिंसा करते रहें, तो पाप करते जाएँ, तो निश्चित ही हमें स्वयं ही दुःख अनुभव करना पड़ेगा। तब जीवन असहनीय हो जाएगा। इसलिए हिंसा मत कीजिए। पाप करना छोड़ दीजिए।

सोचिए **“कष्ट क्यों पहुँचाएँ ? अपने दुःख लेने की प्रार्थना क्यों करें ? दूसरों के शरीर को कष्ट क्यों पहुँचाएँ ? अपने ही शरीर के लिए दुःख क्यों बुलाएँ ?”** जब हम कष्ट नहीं पहुँचाते, तो दुःख भी नहीं होता, है न ! इसलिए सोचिए, हिंसा छोड़ दीजिए। अपने प्रिय भगवानों को दुःख पहुँचाने वाला काम मत कीजिए। यह केवल एक बाबा के लिए नहीं, बल्कि सभी भगवानों पर लागू होता है। यह सब पर लागू होता है।

जान लीजिए अतीत में हमने जानबूझकर या अनजाने में पाप किए हैं, और अब उन्हीं का फल हम अनुभव कर रहे हैं। उन दुखों को सहन न कर पाने के कारण हम देवताओं से प्रार्थना कर रहे हैं कि वे हमारे दुःख ले लें। ऐसे प्रार्थना करना नहीं, बल्कि पापकर्मों से मुक्त होने का मार्ग जानना चाहिए। वह साधना करनी चाहिए, और वह साधना ‘ध्यान’ है। ध्यान करने से हम अपने पाप खुद ही दूर कर सकते हैं। यानी ख्रहम स्वयं अपना उद्धार कर लेते हैं। ख्र यही तो भगवद्गीता का संदेश है, **“उद्धरेदात्मनात्मानम्।”** इसलिए **“हिंसा छोड़िए। यानी मांसाहार छोड़ दीजिए। ध्यान कीजिए।”** जो हमें प्रिय हैं, उन्होंने जो कहा है, वही कीजिए। उन्हें आदर्श के रूप में लीजिए। उनके मार्ग पर चलिए। बस इतना ही अपने प्रिय भगवानों को दुःख मत पहुँचाइए, उन्हें कष्ट मत दीजिए।

जो नहीं देता उसे माँगने का हक नहीं है

बहुत-से लोग मंदिर को, चर्च को या मस्जिद को जाकर प्रिय भगवान को उन्हें जो चाहिए वही चाहते हैं। प्रार्थना करते हैं। लेकिन वे उससे आगे नहीं सोचते।

क्योंकि वे ऐसा चाहते हैं, लेकिन जो वे चाहते हैं, वही दूसरों को, दुनिया को नहीं देते। अगर ध्यान से देखें, तो वे सुख चाहते हैं। लेकिन कितनों को सुख दे रहे हैं? कितनों को सुख से जीने दे रहे हैं? वे शांति चाहते हैं यानी स्वामी, पिता! मुझे मन:शांति दो, शांति से जीने योग्य बना दो प्रभु ऐसा प्रार्थना करते हैं। लेकिन यह नहीं सोचते कि वे संसार में कितनों को शांति से जीने दे रहे हैं। असल में वे कितनों को शांति से जीने दे रहे हैं? क्या आँगन में मुर्गी को शांति से घूमने दे रहे हैं? क्या तालाब में मछली को शांति से तैरने दे रहे हैं? क्या बकरी को उसके बच्चों के साथ शांति से जीने दे रहे हैं? इन सब बातों पर विचार किए बिना, वे केवल भगवान से ही शांति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

इतना ही नहीं, वे ऊपरवाले से दया दिखाने की प्रार्थना करते हैं। लेकिन वे अपने नीचे काम करने वालों पर, अपने से नीचे के जीवों पर दया नहीं दिखाते। वे कहते हैं, हे पिता, करुणा करो। लेकिन वे अपने नीचे काम करने वालों पर करुणा नहीं दिखाते। वे कहते हैं, हे पिता, अनुग्रह करो। लेकिन इन्होंने किस पर अनुग्रह किया? कितनों को उनका अनुग्रह प्राप्त हुआ है? वे नहीं सोचते।

इसी तरह वे धन भी चाहते हैं, लेकिन जो धन उन्हें दिया गया है, उसमें से कितना प्रतिशत उन्होंने संसार को, दूसरों को दिया है? अगर ऐसे ही सोचते रहेंगे तो हर कोई भगवान को चाहने वाला ही कहलाएगा। लेकिन हम सब भगवान के बच्चे हैं कहते हुए भी, वे दूसरों के बारे में नहीं सोचते जो उसी भगवान के बच्चे हैं। वे यह नहीं जानते कि भगवान के लिए, अपने साथ भी वे भी समान हैं। अपने साथ रहने वाले सभी लोगों को यानी मनुष्यों को,

जानवरों को, कम से कम पास-पड़ोस में रहने वालों को भी जो वे चाहते हैं, वही देने के लिए प्रयास नहीं करते।

तो फिर सोचिए जो ऐसा नहीं देता, उसे माँगने का अधिकार कहाँ से मिला? इसलिए माँगने से पहले यह सोचना चाहिए क्या मैं दे रहा हूँ? क्या मैंने दिया है? क्योंकि देना ही मानव धर्म है “सृष्टि धर्म”। इसी को “दान धर्म” कहा जाता है। इतना ही नहीं भगवान की दुनिया में देने वाले को माँगने की ज़रूरत भी नहीं होती। क्योंकि यह सोचना कि माँगने पर ही वह देगा मूर्खता है। अज्ञान है। “**भगवान की दुनिया में बस देना ही काफी है बिना माँगे ही आता है। नहीं देते, तो चाहने से नहीं आता।**” यह बहुत-बहुत महत्वपूर्ण धर्म है। इसलिए देना सीखिए। माँगना नहीं।

इतना ही नहीं “इस सृष्टि में जो देते हैं, वही वापस आता है। जितना देते हैं, उतना ही आता है” यह जानकर जो तुम्हें चाहिए वही देने के लिए प्रयास करना चाहिए। अगर तुम्हें ‘खुशी’ चाहिए, तो सबको सुख देने वाले काम करनी चाहिए। यदि तुम ‘शांति’ से जीना चाहते हो, तो सबको सभी जीवों को शांति से जीने दो। धन चाहिए तो धन बाँटो। अगर सम्मान चाहिए, तो सबका सम्मान करो। अगर ‘दया’ चाहिए, तो सब पर दया दिखाओ।

इसी तरह अगर अहिंसा चाहते हो तो किसी भी जीव को, किसी भी जानवर को हिंसा मत करो, हत्या मत मारो, और उनका मांस मत खाओ। अगर अपमान नहीं चाहते हो! तो किसी का अपमान मत करो। अगर नुकसान नहीं चाहते हो! तो किसी को नुकसान मत पहुँचाओ। अगर कष्ट नहीं चाहते हो! तो किसी को कष्ट मत दो। अगर तुम्हारी चीज़ें लूटी न जाएँ ऐसा चाहते हो, तो तुम भी किसी की चीज़ें मत लूटो। मतलब जो तुम अपने लिए नहीं चाहते, वह दूसरों को मत दो। और जो तुम चाहते हो, वही दूसरों को दो। यही सृष्टि धर्म है। इसलिए इसे जानिए। इस सृष्टि में जो नहीं देता, उसे माँगने का हक नहीं है। जो देता है, उसे माँगने की ज़रूरत नहीं होती।

नवविध भक्तियाँ

भगवान की आराधना करने के लिए, और मोक्ष प्राप्त करने के लिए नौ प्रकार की भक्तियाँ होते हैं ऐसा बहुत से लोग मानते रहते हैं। इसलिए वे यह सोचते हैं कि किसी न किसी एक मार्ग से भगवान की आराधना की जा सकती है, और इन नौ में से कोई एक कर लिया तो भी पर्याप्त है।

लेकिन नवविध भक्तियाँ का मतलब “नौ अलग-अलग प्रकार नहीं है बल्कि नौ प्रकारों से आराधना करनी चाहिए।” इन नौों का आचरण करने वाला ही शीघ्र भगवान तक पहुँच सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

पहले यह देख लें कि नवविध भक्तियाँ क्या है।

- (1) श्रवण (2) कीर्तन (3) स्मरण (4) पादसेवन
- (5) अर्चन (6) नमस्कार (7) दास्य (8) सख्य
- (9) आत्मनिवेदन

यदि कोई भी मोक्ष जल्दी प्राप्त करना चाहता है, तो ये नौ ही आवश्यक हैं। थोड़ा विस्तार से जानते हैं।

1) श्रवण (सुनना) :- शुरुआत में किसी को भी भगवान के बारे में पता नहीं होता, इसलिए पहले भगवान के बारे में जानना चाहिए। मतलब जब कोई इन बातों को बता रहा हो, तो सुनना चाहिए। इस तरह सुनने से धीरे-धीरे यह समझ में आता है कि भगवान वास्तव में मौजूद हैं। इसी प्रकार श्रवण भगवान के बारे में समझने के लिए है।

लेकिन केवल यह जान लेने से कि भगवान हैं, क्या मुक्ति मिल जाती है, है ना? मुक्ति प्राप्त करने के लिए हमें जो करना है, वह अभी और भी बाकी है। आइए जान लें कि वे क्या हैं।

2) कीर्तन :- मतलब कीर्तन करना। यानी भगवान की प्रशंसा करना। मतलब उनके महानत्व को, उनकी विशेषताओं को, उनकी शक्ति को कीर्तन के माध्यम से, स्तोत्रों के माध्यम से, पारायण के माध्यम से जानना। उदाहरण के

लिए, विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र या ललिता सहस्रनाम स्तोत्र इसका अर्थ है भगवान के महानत्व को हजारों नामों से, हजारों प्रकारों से वर्णन करना। इस प्रकार कीर्तन करने से, पारायण करने से यह समझ में आता है कि वे कितने महान हैं। लेकिन केवल इतना करने से ही भगवान तक पहुँचना और मुक्ति प्राप्त करने के लिए यह भी काफी नहीं होता।

3) स्मरण :- इसे मनन भी कहते हैं। बार-बार स्मरण करना चाहिए। अर्थात् मनन करना चाहिए। इसे ही जप करना भी कहते हैं। क्योंकि इतने महान होने वाला भगवान को भूल जाएँ, तो मुक्ति कैसे प्राप्त होगी? इसलिए बार-बार भगवान का स्मरण के माध्यम से उन्हें याद करते रहना चाहिए। तो क्या केवल इस तरह याद रखना ही पर्याप्त है? नहीं "इसके साथ-साथ और भी कुछ करना चाहिए।

4) पादसेवनम :- मैं भगवान का सेवक हूँ ऐसा भाव रखते हुए, भगवान के रूप इस संसार की, अर्थात् इस संसार में मौजूद सभी वस्तुओं और प्राणियों की सेवा करनी चाहिए। यह सेवा समर्पण भाव से करनी चाहिए। जिस पवित्र भाव से हम भगवान के चरणों की सेवा करते हैं, उसी पवित्र भाव से संसार की भी सेवा करनी चाहिए। मुख्य रूप से भगवान को केवल एक मूर्ति या किसी एक रूप के रूप में नहीं मानना चाहिए। सब कुछ भगवान ही है, सब भगवान ही हैं ऐसा समझना चाहिए। इसी भावना के साथ सेवा करनी चाहिए।

5) अर्चन :- इसी को आराधना भाव कहते हैं। इतने महान वाला भगवान के प्रति आराधना भाव यानी आर्ति (तड़प) होनी चाहिए। उनके बारे में, उनके सर्वव्यापक तत्त्व के बारे में जानना चाहिए। यह जानना चाहिए कि सब कुछ उन्हीं के रूप हैं। सबके प्रति और हर चीज़ के प्रति आराधना भाव से व्यवहार करना चाहिए।

6) नमस्कार :- इसे ही विनय भी कहते हैं। भगवान के प्रति विनय भाव से व्यवहार करना चाहिए। अर्थात् हर किसी के प्रति विनम्रता प्रदर्शित करनी चाहिए। आज्ञाकारी होना चाहिए। जो इस प्रकार व्यवहार करते हैं, वही भगवान

के निकट आ सकते हैं। जितना भगवान के निकट आते जाते हैं, उतना ही मुक्ति के भी निकट पहुँचते जाते हैं।

7) दास्य :- इसी को सेवा कहते हैं। उपरोक्त बातों के साथ-साथ भगवान की सेवा भी करनी चाहिए। यही भगवान को आनंद देने वाली बात है। तो भगवान की सेवा कैसे करनी चाहिए? क्योंकि सब कुछ भगवान का ही स्वरूप है। इसलिए हर चीज़ की और हर व्यक्ति की सेवा करनी चाहिए। अगर किसी पौधे की अच्छी तरह देखभाल करें, तो वही उस पौधे की सेवा होती है। एक गाय को जिस समय जो चाहिए, वह उपलब्ध करा देना यही उस जानवर की सेवा है। इसी तरह माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों की किसी भी प्रकार की कमी न होने दें यही माता-पिता की सेवा होती है। इस तरह सबकी सेवा करना ही भगवान की सेवा है। इसीलिए कहा गया है “मानव सेवा ही माधव सेवा है।” ऐसा करते हुए एक और धर्म का पालन करना चाहिए।

8) सख्य :- इसी को मित्रता भी कहते हैं। सब लोग और सब कुछ भगवान के ही रूप हैं, इसलिए सब समान हैं। यहाँ कोई ऊँच-नीच नहीं है। इसलिए सबके साथ और हर चीज़ के साथ मैत्रीभाव रखना चाहिए। सृष्टि में मनुष्यों द्वारा पालन किया जाने वाला एक महान धर्म है, “स्नेह धर्म।” जो लोग केवल मनुष्यों से ही नहीं, बल्कि सभी जीवों और पशुओं से भी मित्रता रखते हैं! मित्रता करते हैं! वे भगवान के और भी निकट हो जाते हैं। मतलब जीवों की हिंसा नहीं करनी चाहिए।

जीवों के साथ मित्रता करनी चाहिए, किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए। सबके साथ खुश रहना चाहिए। इस प्रकार सबके साथ खुश रहने वाले लोग भगवान के भी प्रिय बन जाते हैं।

9) आत्मनिवेदन :- इसी को ध्यान भी कहते हैं। अंत में जो लोग ये सब करते हुए ध्यान भी करते हैं, वे आत्मनिवेदन करने वाले बन जाते हैं। अंत में भगवान तक पहुँचते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं।

जो लोग इस प्रकार नवविध भक्तियों के माध्यम से भगवान तक पहुँचते हैं, उनका जीवन धन्य हो जाता है। इसलिए मनुष्य को इन नौ प्रकार की भक्तियों का आचरण करना चाहिए। जान लीजिए भगवान तक पहुँचने के लिए नौ प्रकार के भक्ति मार्ग हैं। आम तौर पर बहुत लोग ऐसा मानते हैं कि किसी भी मार्ग से भगवान तक पहुँचा जा सकता है। लेकिन भगवान तक पहुँचने के लिए कोई एक ही मार्ग नहीं है ये नौ मार्ग आवश्यक ही हैं।

कारण भगवान के बारे में कुछ भी न जानने वालों को पहले ये आठ मार्ग भगवान के बारे में ही नहीं, बल्कि भगवान के विषय में क्या करना चाहिए और कैसे व्यवहार करना चाहिए यह भी सिखाते हैं। अंत में नौवाँ मार्ग आत्मनिवेदन अर्थात् ध्यान ही भगवान तक पहुँचाता है।

यही विषय 21वें अध्याय के 159वें पृष्ठ में जब अनंतराव पाटणकर ने शांति प्रदान करने की प्रार्थना की, तब बाबा ने इस प्रकार एक नैतिक कथा सुनाई।

“एक दिन एक व्यापारी यहाँ आया। एक घोड़ी ने गोबर किया। वह नौ ढेलों के रूप में गिरा। जिज्ञासु उस व्यापारी ने अपने वस्त्र के आँचल में उन नौ ढेलों को उठा लिया। इस प्रकार उसने अपने मन को केंद्रित कर लिया।”

ये बातें पाटणकर को समझ में नहीं आईं। तब उन्होंने उसका अर्थ दादा खेलकर से पूछा। “उन बातों में बाबा का क्या अभिप्राय है?” इसके उत्तर में केलकर ने इस प्रकार कहा।

“घोड़ी से अभिप्राय यहाँ भगवान की कृपा है, और नौ ढेलों से तात्पर्य नवविध भक्तियों है।” उन्होंने जवाब दिया कि यदि इन्हें पालन करेंगे, तो भगवान प्रसन्न होते हैं।

उन्होंने आगे कहा तुम भी उस व्यापारी के समान समझो। उसकी तरह नौ प्रकार की भक्तियों संग्रहित करो। उसकी तरह आचरण में उतारो। तब तुम्हें मानसिक स्थिरता और शांति प्राप्त होगी ऐसा कहा गया।

अगले दिन जब पाटणकर बाबा को प्रणाम करने गए, तब बाबा ने पूछा “क्या तुमने उन नौ घोड़े के गोबर के ढेलों को इकट्ठा किया या नहीं?”

तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि बाबा ने किसी को नौ ढेले इकट्ठा करने के लिए कहा था, है ना? मतलब यह कि नवविध भक्तियाँ केवल आवश्यक ही नहीं हैं बल्कि उन्हें आचरण भी करना चाहिए। अर्थात् भगवान को प्राप्त करने के लिए नौ प्रकार से आराधना करनी चाहिए। इसका अर्थ है कि केवल कोई एक मार्ग पर्याप्त नहीं है। इसलिए सभी का आचरण करते हुए, अंत में आत्मनिवेदन अर्थात् ध्यान के द्वारा हम सहज रूप से भगवान तक पहुँच सकते हैं। हम आत्मसाक्षात्कार कर सकते हैं। शांति प्राप्त कर सकते हैं।

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatavarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

आत्मनिवेदन!

मंदिरों में नारियल चढ़ाने का आंतरिक अर्थ

भक्तियाँ को नौ प्रकारों में बताया गया है। उनमें (1) श्रवण करने वाले, (2) मनन करने वाले, (3) कीर्तन करने वाले, (4) पादसेवा करने वाले, (5) अर्चना करने वाले, (6) वंदन करने वाले, (7) दास्य करने वाले, (8) सख्य भाव रखने वाले होते हैं। लेकिन इन सभी से अधिक नौवें वाले भी 'आत्मनिवेदन' करने वाले भक्त शिरडी साई बाबा को सबसे अधिक प्रिय होते हैं। आत्मनिवेदन ही उन्हें प्रिय है। उन्होंने कहा कि बाकी सभी प्रकार के भक्तों की तुलना में आत्मनिवेदन करने वाले भक्त ही उन्हें सबसे अधिक प्रिय हैं।

तो यदि बाबा को प्रिय बनना हो या उन्हें प्रिय वस्तु अर्पित करनी हो तो जो उन्हें प्रिय है वही समर्पित करना चाहिए, तो अर्थात् **'आत्मा ही निवेदन करनी चाहिए।'** सच्चा भक्त कौन है? यानी वह **"कठिन होने पर भी भगवान को प्रिय वस्तु समर्पित करने वाला।"** अर्थात् कोई भी भक्त हो, उसे चाहे जितनी भी कठिनाई क्यों न हो, यदि वह भगवान को प्रिय कार्य करने वाला, वही भगवान का प्रिय बनता है। तभी वह उनका अनुग्रह प्राप्त कर सकता है।

याद रखिए भगवान की कृपा प्राप्त करनी हो तो केवल **"हमें भगवान प्रिय हों, इतना पर्याप्त नहीं है; हमें भगवान को प्रिय होना चाहिए।"** यही महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें अपनी पसंद की चीजें अर्पित नहीं करनी चाहिए, बल्कि जो भगवान को प्रिय हों वही समर्पित करना चाहिए।

तो फिर शिरडी साई बाबा को क्या प्रिय है यानी **"आत्मनिवेदन।"** तो फिर आत्मा का निवेदन कैसे करें? क्या करना चाहिए? केवल साई बाबा को ही नहीं, बल्कि सभी देवताओं को प्रिय आत्मनिवेदन का मार्ग हमारे पूर्वजों ने हमें नारियल निवेदन की परंपरा के माध्यम से दिखाया है। अर्थात्

मंदिरों में नारियल निवेदन करने का कारण और उसका आंतरिक अर्थ यही है। किसी भी मंदिर में देखिए जहाँ भी देखिए, सबसे अधिक महत्व नारियल निवेदन को ही दिया जाता है। नारियल निवेदन का महत्व मिला है उसका आंतरिक अर्थ यही है। पूर्वजों द्वारा नारियल निवेदन को प्रशस्त कहने के पीछे यही कारण और यही गूढ़ अर्थ है। नारियल निवेदन का अर्थ है 'आत्मनिवेदन ही!' नारियल निवेदन आत्मनिवेदन का प्रतीक है। इसी कारण नारियल को इतना विशेष महत्व दिया गया है।

क्योंकि नारियल के भीतर (अंतर में) स्थित शुद्ध सफ़ेद नारियल को निवेदन करने के लिए पहले ऊपर का छिलका हटाना पड़ता है। उसके बाद अनुपयोगी नारियल का रेशा निकालना चाहिए। उसके बाद सफ़ेद नारियल के ऊपर की कठोर खोल को तोड़ना चाहिए। तब नारियल दिखाई देता है। तभी उसे निवेदन कर सकते हैं। तब मीठा पानी भी मिलता है।

इसी प्रकार भीतर स्थित शुद्ध और प्रकाशमान आत्मा का निवेदन करना हो तो पहले ऊपर होने वाले इस छिलके जैसे शरीर को छोड़ना चाहिए। अर्थात् आँखें बंद करनी चाहिए। बाद में भीतर मन में मौजूद अनुपयोगी अरिषड्वर्ग अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य जैसे गुणों रूपी रेशे को हटाना चाहिए। इसके बाद स्रज्ज आत्म को स्रज्ज ढकने वाले कठोर खोल जैसे "मैं" रूपी अहंकार को तोड़ना चाहिए अर्थात् उसे निकालना चाहिए। तभी हमें नारियल जैसी शुद्ध और प्रकाशमान आत्मा का साक्षात्कार होता है। अर्थात् तभी वह दिखाई देतो है। तभी आत्मा का निवेदन कर सकते हैं। तभी हमें मीठे जल के समान असीम आनंद भी प्राप्त होता है। शाश्वत आनंद प्राप्त होता है। और जन्म धन्य हो जाता है।

“नारियल निवेदन करने का अर्थ है कि आत्मा का निवेदन करना चाहिए।” भगवान को नारियल प्रिय है इसका अर्थ यह है कि उन्हें आत्मा प्रिय है। तो इस प्रकार आत्मा का निवेदन करने के लिए जो करना चाहिए, वह है 'ध्यान।' केवल के 'ध्यान' द्वारा ही 'आत्मनिवेदन' कर

सकते हैं।

ध्यान में सबसे पहले आँखें बंद करते हैं। और देह-भाव छोड़ देते हैं। बाद में 'श्वास पर ध्यान' रखकर धीरे-धीरे मन को निश्चल बनाते हैं। धीरे-धीरे मन को शुद्ध करते हैं अर्थात् उसे निर्मल करते हैं। अरिषड्वर्गों को महत्व के बिना करते हैं। उसके बाद "मैं" रूपी अहंकार को भी दूर कर देते हैं। हम आत्मस्थिति में रहते हैं इस प्रकार आत्मा का निवेदन करते हैं।

जो ध्यान नहीं करते, वे केवल नारियल ही निवेदन कर सकते हैं। इस प्रकार नारियल निवेदन करने वाले लोग केवल भगवान की मूर्ति का ही दर्शन कर सकते हैं। लेकिन नारियल अर्पण के आंतरिक अर्थ को समझकर, ध्यान के माध्यम से आत्मा का निवेदन करने वाले लोग उस भगवान के सत्य स्वरूप अर्थात् सच्चे भगवान का दर्शन कर सकते हैं।

इसीलिए शिरडी बाबा ने आत्मनिवेदन करने को कहा। अर्थात् बाबा का संदेश यह है कि ध्यान करना चाहिए। इसीलिए बाबा के मंदिरों में ध्यान करने के लिए विशेष ध्यान मंदिर बनाए गए। इसलिए मंदिरों में केवल नारियल चढ़ाकर मूर्ति-दर्शन से ही संतुष्ट न रहें; वहीं स्थित ध्यान-मंदिर में ध्यान करें और आत्मनिवेदन के माध्यम से स्वयं बाबा का दर्शन करें। बाबा के प्रिय बनिए। अपने जीवन को धन्य बनाइए। यही बाबा का संदेश है।

बाबा के मनुष्य कौन हैं ?

28वें अध्याय, 27वें पृष्ठ में बाबा ने इस प्रकार कहा है।

“मेरा मनुष्य चाहे कितना ही दूर क्यों न हो भले ही 1000 कोस की दूरी पर हो जैसे गौरैया के पैरों में धागा बाँधकर उसे खींच लिया जाता है, वैसे ही मैं उसे शिरडी की ओर खींच लूँगा।”

यहाँ बाबा ‘मेरा मनुष्य’ कहते हैं, तो यह शंका हो सकती है कि क्या उनके पास वे लोग भी हैं जो उनके मनुष्य नहीं हैं ? उनके लिए सब एक समान हैं, सब उनके ही मनुष्य हैं। लेकिन जो लोग उनके प्रति आसक्ति रखते हैं ! जो उन्हें प्राप्त करने की आर्त तड़प रखते हैं, बाबा कहाँ रहते हैं यह न जानते हुए, कहाँ जाना चाहिए यह भी न जानते हुए, फिर भी तड़पते रहते हैं ऐसे लोगों का ही अर्थ है।

दुनिया में बाबा के भक्त दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के लोग बाबा को पाने की तड़प में रहते हैं। दूसरे प्रकार के लोग इहलोक और परलोक के सुखों के प्रति रुचि दिखाते हुए, उन पर असीम मोह बढ़ाते हुए, उनके लिए प्रयास करते हुए, उन्हें प्राप्त करने के लिए तरह-तरह के प्रयास करते हुए, उनके लिए जो नहीं करना चाहिए, वे काम भी करते हुए यह कहते हुए कि हम उन्हें प्राप्त नहीं कर पाए कि हमसे नहीं हो रहा है उनके लिए बाबा का आश्रय लेते हैं।

बाबा का “मेरा मनुष्य” कहना पहले प्रकार के लोगों के बारे में है। ऐसे लोगों को “1000 कोस दूर होने पर भी गौरैया के पैर में धागा बाँधकर खींच लिया जाए वैसे ही मैं उसे शिरडी की ओर खींच लूँगा।” अर्थात् मैं उसे अपने पास ले आऊँगा ऐसा बाबा ने कहा है। अर्थात् जो लोग सब कुछ छोड़कर भगवान के प्रति आर्तता और आसक्ति रखते हैं वही भगवान को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। वे उनकी दृष्टि में आ जाते हैं। वे उनकी कृपा के पात्र बन जाते हैं। वे उन्हें पाने की योग्यता प्राप्त कर लेते

हैं। बाबा के वचनों का संदेश यही है कि इसे लोग उन्हें पाने का मार्ग जान सकते हैं।

क्योंकि दूसरे प्रकार के लोगों को बाबा से ज्यादा, बाबा जो देते हैं वही प्रिय होता है। वे बाबा को इसलिए पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि बाबा सब कुछ दे देंगे। अगर नहीं देंगे, तो परेशानी भी होती है! अगर माँगी हुई चीजें नहीं दिया, तो धीरे-धीरे प्रेम कम होने लगता है। इसलिए जो लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए बाबा का आश्रय लेते हैं, उनके बारे में स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि वे बाबा को नहीं, बल्कि बाबा द्वारा दिए जाने वाली चीजों को ही पसंद करते हैं।

ज़रा सोचिए, अगर हम भगवान से पसंद नहीं करेंगे, तो भगवान हमसे कैसे पसंद करेंगे? अगर हमारे भीतर भगवान तक पहुँचने की तड़प ही नहीं है, तो भगवान हमें अपनी ओर कैसे मोड़ेंगे? क्या उन्होंने कभी हमारे ना पसंद काम किया है? इसलिए “कौन बाबा के मनुष्य हैं” यानी जो बाबा को पसंद करते हैं। जिनके भीतर बाबा को पाने की तड़प होती है।

क्योंकि हर कोई बाबा मुझे पसंद हैं, मुझे पसंद हैं ऐसा तो कहता है, लेकिन उससे आगे सोचता नहीं। याद रखिए **केवल आपको बाबा पसंद होने से ही पर्याप्त नहीं होता; बाबा को भी आप पसंद होने चाहिए।** तो बाबा को पसंद आने के लिए क्या करना चाहिए? बाबा को कौन पसंद होते हैं? यानी केवल बाबा की पूजा करने वाले नहीं बल्कि बाबा जो कहते हैं, उसे आचरण में लाने वाले ही बाबा को पसंद होते हैं। उन्हीं को वह अधिक पसंद करते हैं।

सोचिए बहुत-से लोग कहते रहते हैं: हम बाबा के भक्त हैं, हम बाबा के भक्त हैं। लेकिन “हम बाबा के भक्त हैं ऐसा सोच लेने मात्र से कोई लाभ नहीं होता। उससे बेहतर है कि बाबा ऐसा कहें ‘यह मेरा भक्त’ है।” वही महान है, वही भाग्यशाली है, उसी का जीवन धन्य है। ऐसे लोगों को ही बाबा “मेरा आदमी” मानते हैं। उन्हीं को अपने पास बुला लेते हैं। वे

जहाँ भी हों, उन्हें अपनी ओर खींच लेते हैं और अपने पास बुला लेते हैं।

इसलिए हमें भी उनकी पसंदीदा लोगों की सूची में शामिल होना चाहिए। उनकी नज़र में हमें उनका इंसान बनकर पहचाने जाना चाहिए। इसके लिए उनसे सिर्फ़ प्रार्थना करना नहीं है। उनकी कही बातों का पालन करना चाहिए। तो फिर क्या पालन करना चाहिए? (128वें पृष्ठ पर आत्म-साक्षात्कार की योग्यता में दूसरा नियम) इह-पर के सुखों से विरक्ति या वैराग्य होना। अर्थात् इस लोक के सुखों के प्रति आसक्ति छोड़ देनी चाहिए। यानी जिन सुखों के लिए हम चाहकर देने की प्रार्थना कर रहे हैं उनके प्रति आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। बार-बार और चाहिए ऐसा नहीं माँगना चाहिए। जो है और जो दिया गया है उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। जो कुछ हमारे पास है, उसका आनंद लेना चाहिए। दूसरे के पास है इसलिए रोना नहीं चाहिए। मुझे नहीं है इसलिए दुखी नहीं होना चाहिए। इसे ही संतोष कहते हैं। ऐसे ही अनुभव करते हुए भगवान में रुचि बढ़ानी चाहिए। ऐसा व्यक्ति ही भगवान का इंसान बनता है। यही बाबा का संदेश है।

यहाँ और भी सोचना चाहिए। अगर बाबा को पसंद करना हो, बाबा के प्रति रुचि बढ़ानी हो, और बाबा तक पहुँचना हो तो आखिर “बाबा कौन हैं”, यानी यह तो हम पहले ही बता चुके हैं। “आत्मा ही बाबा है।” इसलिए आत्मा से पसंद करिए, आत्मा के प्रति रुचि बढ़ाएँ। आत्मा तक पहुँचने का प्रयास कीजिए और आत्मा पर ध्यान केंद्रित रखें।

‘आत्मा’ यानी ‘बाबा’ कहाँ हैं? 28वें अध्याय के 208वें पृष्ठ पर यह बात स्पष्ट रूप से बताई गई है। “श्री साईं अनंत हैं, वे चींटियों-कीड़ों से लेकर बाहरी जगत तक, समस्त जीवों में निवास करते हैं। वे सर्वार्थरामी हैं।” (समस्त जीवों, प्राणियों और मनुष्यों के अंतर में, अर्थात् भीतर व्याप्त रहने वाले)।

अर्थात् बाबा हमारे भीतर ही आत्मा के रूप में विद्यमान हैं। इसलिए शरीर पर नहीं, बल्कि आत्मा पर रुचि बढ़ाएँ तो वह बाबा के प्रति रुचि बढ़ाने

के समान है। देव-सुखों के बजाय यदि आत्म-साक्षात्कार में रुचि बढ़ाएँ, तो वही बाबा के प्रति रुचि बढ़ाने के समान है। ऐसा करने वाला ही 'बाबा मनुष्य' है। इसीलिए बाबा द्वारा उपदेशित आत्म-साक्षात्कार के मार्ग के 10वें बिंदु में, 'भगवान की कृपा' के अंतर्गत बाबा ने इसी विषय को स्पष्ट रूप से बताया है।

तो फिर देह-दृष्टि छोड़कर आत्मा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए क्या करना चाहिए? आत्मा हमारे भीतर ही है, इसलिए हमें अंतर्मुखी होना चाहिए। अर्थात् ध्यान करना चाहिए। अर्थात् जो लोग ध्यान करते हैं, वही बाबा पर ध्यान केंद्रित करने वाले होते हैं। ऐसे ध्यान करने वालों को मैं अपने पास बुला लेता हूँ ऐसा बाबा ने कहा है।

सद्गुरु के कहे हुए छोटे से वाक्य में भी बहुत गहरा अर्थ होता है। ऐसे महापुरुषों की बातों का यदि बाहरी अर्थ लें, तो नुकसान हमारा ही होता है। लेकिन यदि हम उनका आंतरिक अर्थ ले लिया, तो हमारा जीवन ही धन्य हो जाता है। देखिए कई अवसरों पर बाबा की बातें बहुत लोगों को समझ में नहीं आतीं। यदि सोचें, तो उनका अर्थ समझ सकते हैं। वह बिना अर्थ के कोई बात नहीं कहते। उनके पास अर्थहीन बातें नहीं होतीं। सब कुछ अर्थपूर्ण ही होता है। चलिए कुछ उदाहरण देखें (14वें अध्याय के 17वें पृष्ठ पर)।

(1) जब बाबा ने 15 रुपये दक्षिणा देने को प्रोफेसर जी. जी. नार्के से कहा, तो उन्होंने उत्तर दिया कि उनके पास एक पैसा भी नहीं है। तब बाबा ने इस तरह कहा। **“मुझे पता है कि तुम्हारे पास धन नहीं है, लेकिन तुम योग वासिष्ठ पढ़ रहे हो न? उसी में से मुझे दक्षिणा दे दो!”**

यहाँ बाबा द्वारा माँगी गई 15 रुपये की दक्षिणा का अर्थ यह था कि योग वासिष्ठ में उसने जो पढ़ा है, उनमें से 15 ज्ञानपूर्ण बातों को मुझे बताओ।

(2) एक बार फिर बाबा ने तर्खाड़ की पत्नी से छह रुपये दक्षिणा देने के लिए कहा। अपने पास पैसे न होने के कारण वह बहुत ही दुखी (व्याकुल) हो गई। तब वहीं मौजूद उसके पति ने बाबा के वचनों का अर्थ समझाया।

उसने अपनी पत्नी को समझाया कि बाबा का भाव यह है अपने छह शत्रुओं अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य को पूरी तरह बाबा को समर्पित कर देना चाहिए। इस पर बाबा ने पूरी तरह सहमति प्रकट की।

(3) (119वाँ पृष्ठ) अपने पास आने वाले भक्तों की बाबा दो प्रकार से परीक्षा रखने वाले थे। (1) दक्षिणा, (2) राधाकृष्णमाई। अपने भक्तों ने इन दोनों को कितना छोड़ा दिया है यह देखने के लिए, जैसे ही भक्त उनके पास आते, बाबा ने उनसे दक्षिणा माँगकर लेते और फिर उन्हें “बड़की” (अर्थात राधाकृष्णमाई के घर) भेज दिया करते थे। यदि कोई इन दोनों परीक्षाओं में सफल हो जाए अर्थात धन (कनक) के प्रति आसक्ति और स्त्री-लोभ (कांता) का अभिमान चला गया है जब प्रमाणित किया जाए तो, बाबा की कृपा और आशीर्वाद से उसकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र ही हो जाती है।

इससे यह जान सकता है कि बाबा ने धन और इच्छाओं को कोई महत्व नहीं देते। इसलिए हम जो अर्पित करते हैं नारियल, केले या हुंडी में डालने वाला दान में वे रुचि नहीं दिखाते। वे चीजें उन्हें आवश्यक नहीं हैं यह जान सकता है कि वे उन्हें कोई महत्व नहीं देते। वे हर समय हमसे हमारे बुरे गुणों को समर्पित करने के लिए कहते हैं। मतलब छोड़ने को कहते हैं। इसी प्रकार धन देना नहीं, बल्कि धन के प्रति जो मोह है, उसे देना चाहिए। इच्छाएँ बढ़ाना नहीं, बल्कि इच्छाएँ कम करनी चाहिए। यही बाबा चाहते हैं। उसी को वे दक्षिणा के रूप में माँगते हैं। दक्षिणा माँगने का अर्थ यह नहीं है कि बाबा धन चाहते हैं। इसलिए जो लोग धन और भेंट-दान अर्पित करके ही संतुष्ट हो जाते हैं, उन्हें अंततः निराश होना ही पड़ेगा।

(4) बाबा विभूति देने में अंतर्निहित अर्थ (33वाँ अध्याय, 246वाँ पृष्ठ) :- ऊदी के माध्यम से बाबा क्या सिखाना चाहते थे? दुनिया में दिखाई देने वाली सभी वस्तुएँ भस्म की तरह नश्वर हैं, पंचभूतों से बने हमारे शरीर सभी सुखों का अनुभव करने के बाद अंततः नष्ट होकर भस्म हो जाते हैं। इस सत्य की याद दिलाने के लिए बाबा अपने भक्तों को ऊदी

प्रसाद बाँटते रहते थे। इसी 'ऊदी' के माध्यम से बाबा ने सिखाया कि ब्रह्म (भगवान) ही नित्य है, यह जगत अस्थायी है, और संसार में रहने वाले रिश्तेदार चाहे बेटा हो, पिता हो या माता हो वास्तव में हमारे वाले नहीं हैं।

इसलिए जान लीजिए भक्त जो भी माँग रहे हैं, वे सब भस्म के समान हैं। उन पर ममता छोड़ने के लिए ऊदी देने के माध्यम से बाबा ने उपदेश दे रहे हैं। यदि हम इन्हें समझ लें, तो हमें जो दिया गया है और जो हमारे पास है, उसी में संतोष कर लेंगे। तब हम भगवान तक पहुँचने का प्रयास करेंगे। अर्थात् हम बाबा के बताए अनुसार ध्यान करेंगे। जो लोग बाबा के बताए अनुसार जीवन जीते हैं, उनका जीवन ही धन्य हो जाता है। यह जाना जा सकता है कि वे स्थायी रूप से दुःख से बाहर निकल जाते हैं। इसलिए ध्यान को महत्व दीजिए। ध्यान करिए।

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 am to 6.30 am** followed by messages related to soul-knowledge from **6.30 am to 7.30 am**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am**.

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

Tatavarthy Raghavarao Sir Books in English

1. Life Science (Part-I)	Rs.120
2. Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3. Which is the right meditation ?	Rs.100
4. Die before death!	Rs.120
5. The Law of Karma	Rs.100
6. Losses caused by Desires	Rs.100
7. Benefits of knowing what happens after death	Rs.100
8. What is Meditation?	Rs.80
9. True Path	Rs.80
10. Why soul-knowledge ?	Rs.70
11. What comes after death ?	Rs.70
12. Learnings through the male and female births	Rs.70
13. Who are Soul-murderes?	Rs.70
14. How to improve Financial Status ?	Rs.60
15. Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
16. Brahma Jnan	Rs.60
17. What is Intention?	Rs.50
18. Why is this life?	Rs.50
19. Shankaracharya's Jagrata panchakam	Rs.50
20. Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
21. Brahman means?	Rs.50
22. How to become a master?	Rs.50
23. How to become a champion ?	Rs.50
24. Truth	Rs.50
25. Meditation for the Development of Students	Rs.40
26. Non violence and vegetarianism	Rs.40

REBIRTH (Tatavarthy Rajya Lakshmi)	Rs.150
---	---------------

What is Ignorance (Avidya) ?	Rs.70
-------------------------------------	--------------



ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

- 1) एक और जन्मRs.160/-
- 2) साधना में स्थितियाँ..... Rs.80/-
- 3) ज्ञान माला..... Rs.70/-
- 4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।..... Rs.70/-
- 5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?..... Rs.60/-
- 6) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
- 7) महात्माओं का संदेशों..... Rs.50/-
- 8) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
- 9) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-
- 10)शाकाहार ही मानव का आहार है !..... Rs.50/-

ध्यान की पद्धति - श्वास पर ध्यान

हर किसी को अपने लिए उपयुक्त सुखासन में आराम से बैठकर..
दोनों हाथों को मिलाकर... आंखों को बंद करके... सहज रूप से होने वाले
उच्छ्वास और निश्वास पर गौर करना है !

बीच में कई सारे विचार हमारे मन में आते रहते हैं, उन सबका खंडन
करते हुए... वापस हमारे ध्यान को श्वास पर लाना है... ध्यान भटकता रहेगा
लेकिन वापस श्वास पर ध्यान लाते रहना है. धीरे-धीरे.. विचार रहित स्थिति प्राप्त
होगी... चित्तवृत्ति का निरोध होगा मन शून्य बन जाएगा। मन शांति प्राप्त करेगा।
यही ध्यान स्थिति है।

इस विचार रहित स्थिति में प्राप्त होने वाले शारीरिक, तंत्रिका व्यवस्था
और आत्मानुभव पर ध्यान देते रहना है। उस स्थिति में असीमित विश्वमय प्राणशक्ति
शरीर के अंदर प्रवाहित होकर तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि करती है। इस शक्ति के
कारण सारे रोग दूर हो जाते हैं। तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि के कारण सारे कर्म दूर
हो जाते हैं।

साधारण रूप से मनुष्य की उम्र जितनी है.. कम से कम उतने मिनट
तक.. हर रोज दिन में दो बार... ध्यान करना है।



श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।.....Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.....Rs.160/-
3. भगवद गीता का सार ।.....Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.....Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है।.....Rs.130/-
6. गार्डिंग ध्यान क्यों नहीं ?Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.....Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।.....Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ ।.....Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.....Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ?Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।.....Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?Rs.100/-
14. इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँRs.100/-
15. शंकराचार्य जी का ज्ञान संदेशRs.100/-
16. कठोपनिषद्Rs.100/-
17. उपमान ज्ञान संदेशRs.100/-
18. शिरडी साईं के संदेशोंRs.100/-
19. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।Rs.80/-
20. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।.....Rs.80/-
21. आत्म हंतक कौन होता है ।.....Rs.70/-
22. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।.....Rs.70/-
23. दुख निवारण का मार्गRs.75/-
24. उत्तम पुरुषRs.60/-
25. आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ?Rs.60/-
26. निर्वाण मार्गRs.60/-
27. सत्यRs.50/-
28. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ?Rs.50/-
29. गुरु को पहचानना कैसे ?Rs.50/-
30. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्याRs.50/-
31. शाकाहार ही मानव का आहार है!.....Rs.50/-
32. ब्रह्म क्या है ?Rs.50/-
33. शंकराचार्य जी का जाग्रत पंचकRs.50/-
34. शंकराचार्य जी का निर्वाण शट्कमRs.50/-
35. चैंपियन बनना हो तो ?Rs.50/-
36. तीन प्रकार के जीवनRs.50/-
37. संकल्प अर्थात ?Rs.40/-



जो खुद को भगवान का भक्त मानते हैं, देवताओं की आराधना करना नहीं। उन्होंने जो कहा, उसे आचरण करना चाहिए। देवताओं से प्रार्थना करना नहीं। उन्होंने जो कहा, उसे पालन करना चाहिए।

भगवान को पसंद करने वाले, भगवान के बारे में कही गई बातों से ज़्यादा भगवान ने जो कहा है उसे महत्व देना चाहिए। उसे भगवान पसंद होने मात्र से कोई लाभ नहीं है। उसे यह जानना चाहिए कि भगवान का प्रिय बनना चाहिए। तभी उसका जीवन धन्य हो जाएगा।

तो भगवान का प्रिय बनने के लिए, भगवान द्वारा बताए हुए संदेशों का अंतरार्थ जानना चाहिए। उसे आचरण में लाना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

शिरडी साईं द्वारा बताए गए संदेशों के अर्थ और अंतरार्थ को समझाकर, साईं द्वारा सिखाए गए मार्ग पर चलने के लिए ही ये “शिरडी साईं संदेश हैं।” यह आशा करते हुए कि पाठक पढ़कर समझें, आचरण करके और उद्धार प्राप्त करें...

Rs.100/-

- ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

Scan these QR codes using Google Lens to download the books of Mr. Tatavarthy Veera Raghava Rao & Mrs.Rajyalakshmi from the website.



**Telugu
Books**

**English
Books**

**Hindi
Books**

**Kannada
Books**

**Tamil
Books**